लोरिक विजय

(ऐतिहासिक उपन्यास)

•

लेखक
स्व० ब्रजकिशोर वर्मा "मणिपद्म"

•



मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
कोलकाता

LORIK VIJAY (NOVEL)

By Brajakishor Varma *'Manipadma'*

प्रकाशक :
श्री रामनन्दन झा, *मंत्री*
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
पं० सं० S/6762 :: स्था० : 26 जनवरी, 1959
6-B, कैलाश साहा लेन, कोलकाता-700 007

•

•

प्रथम संस्करण : विद्यापति स्मृति समारोह
15 मार्च, 1970 ई०

द्वितीय संस्करण : साहित्य अकादेमी एवं मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा आयोजित मैथिली कविताक विकास पर सेमिनार
25 एवं 26 जनवरी, 1995 ई०

तृतीय संस्करग : स्वर्ण जयन्ती समारोह
26 एवं 27 दिसम्बर, 2009 ई०

•

दाम . 100/- टाका

•

मुद्रक :
श्री किशोरीकान्त मिश्र
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
9-B, सिकदर पाड़ा स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007
दूरभाष : (033) 2274 4201 • मो० : 9433164330

समर्पण

परम श्रद्धेय - साधक श्रेष्ठ

मामा

श्री कृष्णवल्लभ दास जीक

चरण - कमल मे ई पोथी

सादर ओ सभक्ति समर्पित ।



(जनिक साहित्य, चित्र ओ आध्यात्म-साधना हुनका दुलारक संग
हमरा जीवनक सम्बल बनि गेल)

चरण-सेवक

"भगवान"



प्रथम संस्करणक प्रकाशकीय -

अपना दिस सँ

मिथिला सांस्कृतिक परिषद एहि वर्ष अपना किशोरावस्थाक १०म वसन्तक द्वारि प्रविष्ट कए चुकल अछि । यद्यपि ई संस्था अवस्था मे किशोर अछि मुदा चेतना सँ प्रबुद्ध । एकर गर्वोक्ति नहि, वरन् स्वाभिमान छैक । आ' एकर पूर्ण श्रेय छन्हि मिथिलाक तपःपूत साहित्य - साधक एवं मिथिलांचलक चेतना सम्पन्न सुधीवर्ग कें ।

भाषा संस्कृतिक संवाहिका थिक आ' संस्कृति थिक मानव चेतनाक मूल उत्स । तैं परिषद संस्कृतिक सर्वांगीण विकासक उद्देश्य सँ साहित्य-सर्जनाक पथ पर उन्मुख अछि । ई अपना जन्मकाल १९५९ ई० सँ अद्यावधि मैथिलीक उच्चकोटिक पोथीक प्रकाशन कए चुकल अछि ।

एहि वर्षक एकर मर्यादात्मक साहित्यिक उपलब्धि छैक **'लोरिक - विजय'**क प्रकाशन । एकर लेखक छथि स्वनामधन्य डा० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'। ई ऐतिहासिक उपन्यास मिथिलाक ओहि वर्णक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व कए रहल अछि जकरा हमर समाज एखन धरि बहुत किछु उपेक्षाक दृष्टि सँ देखैत आबि रहल छैक । परिषद मिथिलाक माटि पर रहनिहार सभ वर्गक लोक कें मैथिल मानब अपन कर्तव्य बूझि ओहि तथाकथित उपेक्षित वर्गक संस्कृतिक गौरवमय मर्यादाक निरन्तर रक्षाक उद्देश्य सँ एहि पुस्तकक प्रकाशन कएलक अछि ।

डा० 'मणिपद्म'जीक साहित्य-सेवा सँ बुद्धिजीवी मैथिल पूर्ण परिचित छथि। हिनक मैथिली सेवा सर्वथा स्तुत्य अछि। हुनक एहि अनुसन्धान-पूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास सँ सुधी - समाज उत्फुल्ल भए उठताह से हमरा पूर्ण विश्वास अछि। परिषदक प्रकाशन कार्य मे डा० वर्मा जीक जे सहयोग प्राप्त भेल तकरा संस्था केना बिसरत। हुनक एहि उपकारक लेल परिषद कृतज्ञता ज्ञापनक संग शुभकामना प्रकट करैछ जे माँ मैथिली हिनका लेखनी कें अजस्र शक्तिसम्पन्ना बनबथिन्ह।

पुस्तक प्रकाशन बड़ दुरूह कार्य छैक ताहि मे कलकत्ता सन अस्त-व्यस्त जन-जीवन-संकुल महानगरी मे । तैं मुद्रण सम्बन्धी जे त्रुटि हो तकरा पाठक मार्जना कए प्रकाशन सम्बन्धी रचनात्मक सुझाव दए कृतार्थ करथि ।

मंत्री

दिनांक : १५-३-७०

मि० सां० परिषद, कलकत्ता

मंत्रीक अभिमत :

''लोरिक विजय'' क द्वितीय संस्करणक संग मिथिला सांस्कृतिक परिषद कलकत्ता अपन नव स्वरूपक परिचय दैत अठतीसम वर्ष मे प्रवेश कए रहल अछि । एहि अवधि मे मैथिलीकें समुचित स्थान प्राप्त करयवाक दिशा मे आ मैथिली साहित्यकें गति देवाक दिशा मे परिषद कतवाक की कएलक अछि से सभकें आगाँ मे प्रकट अछि । परिषद अपन सीमा ओ लक्ष्य कें ध्यान मे रखैत सर्वथा सुधारक आग्रही रहल अछि । लेखक ओ पाठक लोकनिक सहयोग यदि रहलैक तऽ अपन लक्ष्यक दिशा मे परिषद आगाँ बढ़ैत चल जाएत आ मैथिली भाषा ओ साहित्यक अभिवृद्धि मे जतवा जे कोनो एकटा संस्था सँ संभव भऽ सकैत अछि से सभ करैत रहत ।

अत्यन्त गर्व आ आनन्दपूर्वक पाठक लोकनिक तगेदाक आदर करैत परिषद ***'लोरिक विजय'*** केर दोसर संस्करण अहाँ सभक हाथ मे दैत सनाथ भए रहल अछि ।

१८.२.९६

विमल कान्त मिश्र
मंत्री

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक पूर्व मंत्री श्री विमलकान्त मिश्र,
गोपीपट्टी ढढ़िया, दरभंगा ग्राम निवासी
अपन पूज्या माता स्वर्गीया चन्द्रकला मिश्र एवं
धर्मपत्नी स्वर्गीया गम्भीरा मिश्रक
स्मृति मे **'लोरिक विजय'**क तृतीय मुद्रणक
व्यय-भार वहन कए अपन दानशीलताक परिचय दए
मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि मे सहयोग प्रदान कएलन्हि।

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक साधुवाद।

शिवचन्द्र झा
अध्यक्ष



प्रकाशकीय तृतीय संस्करण

'लोरिक विजय'क प्रथम एवं द्वितीय संस्करण पाठक लोकनिक नजरि सँ गुजरि चुकल अछि। मिथिला सांस्कृतिक परिषदक स्वर्ण जयन्तीक अवसर पर एकर तेसर संस्करण अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत आह्लादित छी। आह्लादित छी एहि कारणें जे मैथिलीक विरलेके पोथीक द्वितीय संस्करण अबैछ। ताहि ठाम 'लोरिक विजय'क तृतीय संस्करण अपने लोकनिक हाथ मे अछि।

पूर्वहु मे लोरिक विजय महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तरक पाठ्यक्रम मे आबि चुकल छल परंच ओहि तरहक प्रतिफल परिषद कें प्राप्त नहि भेलैक। पुनः एहि तरहक मर्यादा 'लोरिक विजय' कें भेटलैक आ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूची मे मैथिलीक संनियोजनक पश्चात् संघ लोकसेवा आयोगक पाठ्यक्रम मे 'लोरिक विजय' कें स्थान भेटलैक आ विभिन्न स्थान सँ एकर आवश्यकता पर बल देल गेल। आवश्यकता पूर्ति करब परिषद अपन दायित्व बुझलक आ ओहि परिप्रेक्ष्य मे तृतीय संस्करण प्रस्तुत कए परिषद एकटा इतिहास सृष्टि कएलक। एही संगे पाठक-वर्ग सँ सहयोगक अपेक्षा सेहो रखैछ। पाठकवर्ग आगू औताह तखने प्रकाशक बेशी सँ बेशी पुस्तक लए हुनका लोकनिक समक्ष आओत।

प्रस्तुत तृतीय संस्करणक मुद्रण व्यय-भार वहन कए श्री विमलकान्त मिश्रजी (ग्राम-गोपीपट्टी ढढ़िया, कमतौल, दरभंगा) एकटा दृष्टान्त उपस्थित कएलन्हि, हुनका प्रति परिषदक साधुवाद।

स्वर्ण जयन्ती समारोह — रामनन्दन झा, *मंत्री*
26-27 दिसम्बर, 2009 — **मिथिला सांस्कृतिक परिषद**



मणि-कण

•

कण्ठ मे बसिहऽ सरसती माता,
कोकिला सन दिहऽ भास।
रण मे बसिहऽ दुर्गा-चंडी
खण्डा के विसवास ॥

•

पुरुब जे पुरनियाँ पुजलौं,
पच्छिम रे बिहार।
उत्तर जे नेपाल पुजलिअइ,
दक्षिण गंगा धार ॥
रौता जे तिलकेश्वर पुजलौं,
झाड़ी बैजनाथ।
भोरे उठि कै हाथ उठौलिअइ,
दिनकर दीनानाथ ॥

•

भेंड़ी मे जे छेड़ी पैसल
बकरी मे हुराड़।
तहिना रण मे उमतल नाचइ,
लोरिक मनियार ॥

•

निशी-राति मे राजा हरबा,
उठलइ रे चेहाय।
मार मार कै मारू डंका,
देलकइ जे बजवाय ॥

एरही बाजा बजइ जे,
तुरही घमसान ।
भोर होति जे करतइ ककरा,
नगरी के समशान ॥
हिन हिन हिन हिन घोड़ा हिनकइ
हाथी करइ चिंघाड़ ।
अकुना मकुना के बतिअबै,
सोलह सौ दन्तार ॥

छाती तोहर देखिऔ भैया,
बज्जर रे केवाड़ ।
पीठ तोहर लागउ भैया,
धौलागिरि पहाड़ ॥
मोछ तोहर अँइठल भैया,
बहिंगा सन सन ठाढ़ ।
तोरा दिश जे ताकइ छी तऽ,
लगइ छइ अन्हार ॥
झम्मर झम्मर चलइ धनी,
उगला सुरुज मलान ।

आंगी मे जे झांगी शोभइ,
रतन लागल चारि ।
झाँगी मे जे माणिक शोभइ,
हीरा झमकारि ॥
हँसइ तखन दामिन दमकइ,
हंसक ठुमकी चालि ।
जकरा दिश उठा कऽ तकइ,
दइ करेजा सालि ॥

सुनि ले, सुनि ले मोचनि राजा,
बचन प्रमाण।
चोरी कए-कऽ क्यो अनलक अछि,
दुतिया केर चान ॥
तरवा के नँइ धोअनि हेतउ,
तोहर रानी सात।
कमलक फूल झमान करइ छइ,
जानथि वैजनाथ ॥

•

सात भामरि संग भऽ कऽ लेलिअइ
मड़वा चढ़ि कऽ सिउँथ भरलिअइ।
चान सुरुज के साखी राखि कऽ,
प्राण-प्राण के गेंठ जोड़लिअइ ॥
रौद मे तोड़ल कमल फूल सन,
से तिरिया भेल झूर झमान।
तकरे सूरति रहि-रहि हिया मे,
मारइ आइ अगिनियाँ वाण ॥

•

बन मे जे तित्तिर बाजइ,
कोठा पर मोर गे।
लाल पलंग पर बालम कुहकइ,
हमर हिया तोर गे।

•

अगवारि

*　　　*　　　*

मैथिली - कंठ - साहित्यक मंथन सँ हमरा सात टा अनमोल रतन भेटल । ओ भेल, लोरिकानि, राजा सलहेस, अनंग-कुसुमा, दुलरा दयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री आ रायरणपाल सनक गाथा-काव्य ।

अइ मे लोरिकानि (अथवा महराय) सभ सँ पैघ आ सभ सँ प्राचीन । आइ सँ तीस साल पहिने, भारतक उत्तरी सीमान्तक प्रवासकाल मे, सहसा अइ अलिखित लोक महाकाव्यक वैभव, ऐश्वर्य आ विभूति देखि कए चकित भए उठल छलहुँ : अपना प्रवाह, सौन्दर्य, माधुर्य, प्रसादगुण आ रोमांसक बलें छठम-सातम् शताब्दी सँ, ओहिना एक्केरंग द्युतिमान बनल चलि अबैत ई वीरगाथा से भऽ कऽ हमरा आकर्षित केलक जे हम अइ पर तत्काले काज केनाइ प्रारम्भ कए देल । तखन रंचो-मात्र भान नहि भेल छल जे ई ओ महान लोक-महाकाव्य छैक जे बुन्देलखण्ड सँ लऽ कऽ बंगाल तक, एगारह टा भाषा मे, ओहिना सप्राण भेल चलि अबैत छैक जेना रामायण ओ महाभारतक गाथा । ओहि समय मे इहो नहि बूझल छल जे विश्व-विख्यात अंग्रेज खोजी लोकनि अइ पर विमुग्ध भऽ एकर चर्चा-बर्चा कए चुकल छथि वा नहि ।

एकर बुन्देलखंडी, राजस्थानी, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, मगही नेपाली स्वरूप एक्के रंग मोहक आ प्रवहमान । कहल जाइत छैक जे एकर उडि आ असमिया स्वरूप सेहो छइ । जे कोनो भाषाक स्वरूप (Version) हो, एकर नाम, धाम, कथानक, पात्र-चरित्र आ कथा-प्रबन्ध मे कतहुँ कोनो अंतर नहि एलैक अछि । अन्तर एतबहि छैक जे कोनो भाषा मे कोनो खंड थोड़े बेसी कऽ वर्णित छैक जेना बंगला मे मैनावतीक चरित्र आ भोजपुरी मे सावर-खंड किछु बेसी भऽ गेल छैक ।

हमरा बुझने एहि गाथाक विशेषता ई छैक जे एकर सभ पात्र मनुख छैक, अवतार विशेष नहि । माँजरि कें लोक-तेजस्विताक कारण भगवतीक अवतार

बुझैत छन्हि, किन्तु से लोक बुझैत छन्हि ओ अपने अवतार नहि छथि आ स्वयं भगवतीक बड़ पैघ उपासिका छथि । अइ मे आन लोक-गाथा जकां मंतर-टोनाक लड़ाइ नञि छैक ।

ई सात खंड मे विभाजित छैक— जन्म खंड, सती माँजरि खंड, चनैन खंड, रण खंड, सावर खंड, बाजिल खंड आ सझौती खंड । नेपाली स्वरूप सँ एकर आठम खंड एकटा संन्यासिन द्वारा प्राप्त भेल— एकर नाम भेलइ भैरवी खंड । नेपाली-मैथिली छोड़ि ई स्वरूप आन कोनो भाषा मे नञि भेटल ।

अइ सभ सँ फराक एकर शुद्ध मैथिली स्वरूप बड़ जगता-ज्योति आ कोनो श्रेष्ठ महाकाव्य सँ एकर तुलना कएल जा सकैत अछि । लोरिकाइनिक जाज्वल्यमान स्वकीया नायिका छथि सती मांजरि जनिक अपरूप सौन्दर्य, शील आ सतीत्वक गरिमा मिथिलाक सीताक परम्पराक पूर्ण प्रतिनिधित्व करैत अछि ।

ग्रियर्सन एकर मैथिली स्वरूपक चर्चा केलन्हि आ कनिंघम एकर मैथिली स्वरूप पर अपन रिपोर्ट प्रस्तुत केलन्हि । उत्तर भारतक सभ सँ प्राचीन गद्य-पोथी वर्णरत्नाकर मे ज्योतिरीश्वर एकर चर्चा ''लोरिक-नाच्यौ'' सँ केने छथि । अबस्से ओहिकाल तक लोरिक - गाथा नाचक रूप सेहो लए नेने हेतैक । लोरिक नाच एखनहुँ मिथिलाक उत्तरी सीमांत मे प्रचलित अछि ।

सूफी कविलोकनिक तीनटा महाकाव्य बड़ प्रसिद्ध भेल । मुल्लादाउदक ''चन्दायन'' , मलिक मुहम्मद जायसीक ''पद्मावत'' आ कुतवनक ''मृगावती। एहि मे सभ सँ पहिल महाकाव्य अछि ''चन्दायन'' (रेयर फ्रागमेण्ट्स आफ चन्दायन एण्ड मृगावती—करेण्ट स्टडीज, पटना; प्रो० सैयद हसन अस्करी) जे मुल्लादाउद द्वारा लोरिकाइनिक ''चनैन खंड'' क ''कुरुबक'' छन्द मे फारसी रूपान्तर रचना अछि ।

ई कोनो आश्चर्यक बात नहि जे मुल्ला-दाउद ''मांजरायन'' नहि लीखि ''चन्दायने'' लिखलन्हि । एकर ज्वलन्त कारण अछि जे सूफी साधनाक पृष्ठभूमि मे ''प्रेयसीवाद'' वा राधावाद (परकीया-वाद) जतेक अनुकूल अबइ छैक ततेक सीतावाद (स्वकीयावाद) नहि । तैं परकीया 'चनैन' कें केन्द्र बना ओ 'चन्दायन'क रचना कएलन्हि । ओही समय मे शाह सुलेमान अइ गाथाक बंगला रूपान्तर ''सत्त मैनावंती ओ लोर-चन्दा'' प्रस्तुत कएलन्हि । अइ मे बढ़ोत्तरी एतबे भेलैक जे ''चनैन खंड'' मे '' सावर खंड'' जोड़ि देल गेलैक ।

मुल्लादाउदक ''चन्दायन' सँ आर जे लाभ भेल हो ताहि संगे एक बड़का क्षति ई भेल जे लोक 'लोरिकाइनि'क सम्पूर्णताक (Completeness सौन्दर्यक स्वाद सँ वंचित रहि गेल आ' परवर्ती खोजी लोकनि दाउदी ''चन्दा' क चनरसल राति मे बाट भोथिया कए घुड़मुड़िया दैत रहि गेलाह। धरि तऽ सुनिश्चिते जे लोरिकाइनि पर सूफी रंगक पोचाड़ा देबक क्रम मे मुल्लादाउद लोरिकाइनिक 'भूमिज मौलिकता'' सँ बड़ दूर हँटि एला ।

डा० कमल कुलश्रेष्ठक अनुसार ''तासी'' (इस्त्वार द ला लितरेत्यूर इन्दुइ ए एन्दुस्तानी, ले० गार्सा तासी) मुल्लादाउदक ''चन्दायन''क किछु अप्राप्य प्रति सभहिक उल्लेख केने छथि । कहल जाइत अछि जे लोरिकानिक एकटा प्राचीन संकलनक पाण्डुलिपि (मुल्लादाउद द्वारा) ''लोराकहा'' नाम सँ आगरा युनिवर्सीटी लाइब्रेरी मे अछि । किछु वर्ष पहिने डा० परमेश्वरीलाल गुप्त, डी० लिट् (सम्प्रति क्यूरेटर, पटना म्यूजियम) हमरा सँ चन्दायनक मैथिली स्वरूप मंगने छलाह । हम चनैन खंड पठा देलियन्हि जकरा ओ अपन शोध-ग्रन्थ ''चन्दायन'' मे अविकल छापि देलन्हि । ओ लिखलन्हि जे कनिंघमक रिपोर्ट आ' अइ मे अधिक साम्य छैक । अइ शोधग्रन्थ मे मुल्लादाउदक ''चन्दायन''क कुड़बकक (विभिन्न म्यूजियम सभ मे प्राप्य) फोटो-प्रतिछवि सेहो देल गेल छैक आ' विभिन्न भारतीय भाषा मे चन्दायनक जे रूप (Version) तकरो संकलन छैक ।

किन्तु हमरा बुझने डा० गुप्ता सेहो मुल्लादाउदक चारूभर चकभाउर दैत चनैन खडक भूमिज-मौलिकता सँ पाँच कोस एम्हरहि रहि गेला । ओना अइ महाकाव्य सँ सम्पूर्ण सम्पर्क कएने बिना चनैन खंड वा चन्दायन पर विचार रखनाइ युक्तिसंगत नहि भेल संगहि ओकर भौगोलिक, ऐतिहासिक, तांत्रिक, सामाजिक आ' साहित्यिक स्थिति पर कोनो गवेषणा उपस्थित नहि कएल जा सकल ।

पहिले-पहिल हम जखन एकरा सम्पर्क मे एलहुँ तऽ हमरा सोझाँ मे ने मुल्लादाउद छलाह आ' ने हुनकर आवरण । मात्र छल मिथिला ओ नेपालक जनकंठ मे रमइ वला लोरिकानि जकर कैक ठाम सँ कैक टा संकलन हमरा प्राप्त भेल । अइ सम्बंध मे हमरा कोनो लिखित पात-पांजि नहि भेटल । किन्तु हमरा आँखिक सोझाँ मे द्युतिमान भए उठलीह लोरिकानिक स्वकीया नायिका आ' मिथिलाक बेटी मांजरि, जनिका छवि मे मिथिलाक माटि-पानि आ' संस्कारक सम्पूर्ण सौंदर्य ओ सौरभ, सीताक परम्परा साकार भए रहल छल ।

अइ गाथाक आधा सँ अधिक प्रमुख पात्र मिथिले के। अइ मे वर्णित अधिकांश घटनास्थल मिथिले मे पाओल जाइत अछि। गौरागाम, हावीपत्तन, उघरा, हरदीथान, श्रीनगर, न्यौरीगढ़, नरसरि खड़होरि, कोठराम, हथौड़ी, कोरहांस गढ़, दुहबी-सोहबी पोखरि, सोन्हौली घाट आ' मुड़बल्ला (मूड़ छोपि मुड़बल्ला) आदि स्थान एखनहुँ धरि अपना-अपना भग्नावशेषक संग मिथिला मे वर्तमान छैक। अइ मे चर्चित मिथिलाक जतेक स्थान छैक तहि सभ भग्नावशेष पर हम गेल छी। एकर भौगोलिक स्थितिक प्रत्यक्ष ज्ञान, हमरा एकरा बूझऽ मे बड़ सहायक भेल आ' तत्कालीन सामाजिक ओ ऐतिहासिक तथ्य अधिक स्पष्ट भए आएल।

अइ पर शैव-बौद्ध तन्त्रक अमिट प्रभाव छैक। सात बहिन दुर्गा, लहलह करैत काली, लोरिकक हाथक भगवती प्रदत्त खंडा (तरुआरि नहि) आ कोशामालिनक तंत्र-साधना एकर ज्वलंत प्रमाण भेल। सती मांजरि स्वयं भगवती दुर्गाक अखंड उपासिका छलीह।

सामाजिक संघर्षक तऽ ई महाकाव्य एकटा सप्राण दस्तावेजे जकाँ बूझि पड़ैत अछि। एक-आध टा कें छोड़ि एकर सभटा पात्र असवर्ण छथि। सामाजिक अत्याचार-अनाचारक बड़ सजीव चित्रण छैक एहि मे।

लोककंठक काव्यक भाषा कोनहुना एक स्वरूप मे वर्तमान नहि रहैत छैक। हँ, ताल, लय आ' छन्द सभदिन आ' सगरे एक्के रंग रहलैक। एकर काव्य-प्रवाह प्रचण्ड निर्झर जकाँ प्रवाहित छैक। एकर शब्द-सौन्दर्य, अर्थ-सौंदर्य, भावचित्र, पात्र-चरित्र आ प्रबन्ध-सौन्दर्य एकर अपन खास विभूति छैक जे आनठाम कतहु भेटएवला नहि।

हमरा प्रसन्नता अछि जे हम अइ कंठ-महाकाव्यक भूमिज मौलिकताक अधिक समीप आबि सकलहुँ। एकर खोज, शोध, व्याख्या, विश्लेषण आ आलोचना जे प्रस्तुत कैल अछि से कतोक खंड (Vols.) पोथीक रूप लए लेलक अछि जकर प्रकाशन सम्प्रति मे असम्भव नहि तऽ कठिन अवश्य अछि।

कतोक वर्ष पूर्व, विहार राष्ट्रभाषा-परिषदक दिस सँ, हमर लोरिकानिक संकलन कीनक लेल स्व० शिवपूजन सहायजी हमरा सँ पत्राचार केलन्हि। हम शर्त्त देलियन्हि जे परिषद ई स्वीकार करए जे ई संकलन मैथिली भाषा सँ लेल गेल अछि आ प्रकाशन क्रम मे शुद्धिक नाम पर अइ मे तेहन हेर-फेर नहि करए जाहि सँ एकर मैथिली स्वरूप विकृत भऽ जाइक।

सहायजी कें, मैथिली कें भाषा स्वीकारनाइ कोना मंजूर होइतन्हि तैं वार्त्ताक्रम ठामहि टूटि गेल ।

अइ पोथी मे, लोरिकानि कें उपन्यासक रूप मे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ओना तऽ ई उपन्यास साभरण-सालंकार प्रस्तुत कैल जाइत तऽ सात सै पृष्ठ सँ कम मे नहि अँटैत । प्रकाशनक संकुलताक कारण एकरा संक्षेप करितो अइ बातक ध्यान राखल गेल जे एकर यथास्थिति सुरक्षित रहैक। एकर गाथा-सौन्दर्य कें जगजगार राखक दुआरे, कतहुँ-कतहुँ अतिशयोक्ति कें ओहिना छोड़ि देल गेलैए । जे पाठक, दशमुख रावण कें बालिक कांख तर छः मास राखल गेनाइ आ' सुरसाक आनन के सौ योजन पसरनाइ सहि सकैत छथि, तनिका लोरिकक अस्सी मोनक खंडा भारी नहि लगतन्हि से हमरा विश्वास अछि ।

मिथिला-मिहिर मे प्रकाशित उपन्यास, ''राजा सलहेस'' सँ एकर शैली सर्वदा भिन्न राखल गेलइ आ एकरा लोक-कथात्मक शैली मे अइ कारणे गुम्फित कैल गेलइ जे पाठक कें, ''महराइ''क काव्यात्मक छविक झांकी भेटैत रहन्हि ।

एकबेर सूचना भेटल जे एकटा भिक्षुणी (उत्तरा-खंडक) बड़ राग-भास सँ लोरिकानि गबइ छथि । हुनका सादर बजबौल तँ ओ कहलन्हि—''लोरिकानिक ''भैरवी-खंड'' हमरहि टा अबइ अछि ।''

भैरवी-खंडक नाम हम कहियो ने सुनने छलहुँ । कोनो स्वरूप (Version) मे नहि भेटल छल । हम प्रश्न कएल जे ई भैरवी-खंड की भेलइ ।

ओ कहलन्हि—''सती माँजरि जखन, प्रज्वलित चानन-वृक्षक खोढ़र मे, विकसित स्वर्ण कमल जकां विहुँसैत रहि गेल आ तइ अग्नि-परीक्षो सँ लोरिकक आँखि नहि खुजलन्हि तँ माँजरि भैरवीक रूप मे हुनका दीक्षा दए, तपस्या करक लेल काशी लए गेलथिन्ह ।''

''पहिने हमरा माँजरिक चरित्र मे सीताक आभा भेटल किन्तु आहाँ ई एकटा आर अपूर्व भाव कहि रहल छी।''.......हम कहलियन्हि ।

बड़ हँसली ओ तेजस्वी-मुखमंडलवाली संन्यासिन। हुनका गाराक रुद्राक्ष माला दुलित भेल—''भारतीय वाङमयक दूटा अपरूप सौंदर्य—सीता आ गौरी । एकटा तराइक आ' दोसर पहाड़क । तैं मिथिलाक माँजरि मे, सीता आ भवानी दूनूक छटा भेटइए तँ कोन आश्चर्य । मिथिलाक तांत्रिक साधना बड़

प्राचीन रहलइयै ।'' ओ कहलन्हि ।

तखन अपना एकतारा पर ओ जे सुनौलन्हि से भेल अइ उपन्यासक ''छिकार ।''

पाठकक सुख लेल उपन्यासक प्रारम्भ मे अइ लोक-महाकाव्यक किछु मणिकण (रेयर फ्रैगमैन्ट्स) सेहो दए देल गेल अछि ।

हम आभारी छी, त्रिशूला नदी तटवासी समाजक जे हमरा लोरिकानिक संकलन मे प्रेमपूर्ण सहयोग देलन्हि । आभारी छी विष्णुपुर गुदाम टोलक वृद्ध दसँइ राउतक आश्चर्य-जनक स्मरण शक्तिक प्रति जे सात-सात राति धरि अइ महाकाव्य कें गबिते रहि जाथि ।

विख्यात मनीषी प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापन करैत छी जनिक आलोक सँ बेर-बेर उपकृत होइत रहलहुँ अछि ।

हम आभार प्रगट करइ छी, कलकत्ताक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक प्रति जनिक जागरूक ओ ज्योतिर्मय सदस्य लोकनिक प्रेम आ' सद्भावक कारणे अइ पोथीक प्रकाशन सम्भव भए सकल ।

गाँधी-जन्म शताब्दी दिवस
(जितिया)
२-१०-६९

मणिपद्म
संग्राम-सदन, बहेड़ा,
(दड़िभंगा)

उघरा पँवार

* * * * * *

हरहर कलकल ।

कमला बहल जा रहल छैक आ आगू बढ़ि कए धानक खेत मे हेरा गेल छैक । धान आ' पानि, पानि आ' धान, आ' क्षितिज तक इएह देखाइ छैक । जाहि ठाम पानिये टा छैक, नील जलराशि पर कोकाक फूल, निरभ्र आकाशक तारागण जकाँ चकमक-चकमक कऽ रहल छैक । नीलगगन मे भसिआइत, श्वेतपद्मक माला जकाँ, बक-पंक्ति उड़ैत दृष्टिगोचर होइत छैक ।

कमलाक धार एहिठाम कचिया-हाँसू जकाँ टेढ़ आ' धारक किछेर पर गोठ गौरा गाम । ओहि घाट पर गामक ललना लोकनि स्नान कऽ रहलि छलीह । तरुणी सभ धारा मे कल्लोल कए रहलि छलीह, बुढ़ि-सूढ़ि सभ घाट पर अपन-अपन नुआ खीचऽ मे तन्मय छलीह आ नेना-भुटका सभ सोन-डुब्बी खेल रहल छल । एहि साल फसिल चिक्कन छलइ आ सगरे उल्लासे-उल्लास छलैक । नदीक माठ पर हजार-हजार गाय चरि रहल छलैक आ बीच मे विचरण करैत मत्त वृषभ सबहिक ढेकरक स्वर ऊपर उठि रहल छलैक ।

तरुणी सभ एक सँ एक स्वस्थ ओ सुन्नरि छलि । कँठ मे स्वर्ण-कड़सड़ि, हाथ मे सोनाक टांड़, पिज्जुड़ गढ़क छापक कंचुकी आ माने-चौकक पटोर पहिरने ओ लोकनि गन्धर्व-बाला जकाँ लागथि । सम्पन्न गाम छलैक गौरा गाम ।

''हो ओ ओ, गररम् ।''......स्वर सुनाइ देलकैक । रूपसीक दल चिहुँकि उठल । धीया-पूता के हुरुक पैसि गेलैक । माठ दिस सँ एक गोटे भयाक्रान्त भेल दौड़ल एलइ आ चिकड़ि उठलइ—''हे सुन्नरि लोकनि, भागि पड़ाउ, उघरा-पँवार एम्हरहि आबि रहल अछि ।''

उघरा-पँवारक नामे सँ आतंक छलैक । ओकर जिनगी तरुआरि, तरुणी आ आसवक तरंगक बीच चलैक । अपना राज भरि मे ओकरा जे-जे मोन होइक ओ सएह-सएह करै । जकरे मोन होइ तकरे अन्न, धन, माल-जाल आ सुन्दरी युवती लूटि लैक । ओकरा भ्रू-निक्षेप मात्र सँ केहनो-केहनो कल्ला-दरादक मूड़

कटि कऽ धरती पर लोटाइत देखि पड़ैक । ओ तेरह तूरक नव-यौवना कें सतत अपना ढठिसार मे राखय आ अपना राज्यक प्रत्येक सद्यः विवाहिता कें, विवाहक प्रथम चारि रात्रि अपना विलास-भवन मे बितबए लेल वाध्य करैक ।

ओकरा सँ बाँचि पाबथि मात्र कुमारि लोकनि । कुमारि सभ मे ओकरा जे पसिन्न होइ तकरा पर ओ कठोर दृष्टि राखय आ जौं कि ओकर सिनुरदान सम्पन्न होइकैं, ओकरा मड़बहि पर सँ बलात् अपहरण कऽ लैक । ओकरा कोनो ज्योतिषी कहि देने छलैक जे कुमारिक अपहरण ओकरा लेल कल्याणकारक नहि हेतैक । इऐह कारण छलैक जे ओ मन-पसिन्न कुमारिक अपहरण सिनुरदानक उपरान्ते करैत छल ।

बड़ अड़िजंग पट्ठा आ पहलमान सभ पोसने छल ओ । ओहि मे दूटा मल्ल बड़ प्रसिद्ध छलैक । एकटाक नाम छलैक ''सोनिका'' आ दोसरक नाम छलैक ''मनिका ।'' ओ सभ असियुद्ध, मल्लयुद्ध आ चोरिविद्या लेल दूर-दूर तक विख्यात छल ।

पँवारक कज्जलगिरि हाथियो बड़ विकराल छलैक । ओ जखन, दूनू छोर पर कटार मढ़ल बांस, अपना सूढ़ सँ उठा कऽ ओकरा रण-क्षेत्र मे झांटए लगइ तऽ शत्रुपक्ष मे पड़ाहि लागि जाइक । एकटा आर रहैक ओकरा मे, इशारा पबितहि ओ ककरो सूढ़ सँ उठा कऽ ऊपर लऽ लैक । पँवार एहि प्रकारे, कतोकक अपहरण कऽ चुकल छल । ओकर गढ़ कमला-तट पर उघरा-गांव मे छलैक तैं ओकरा लोक उघरा-पँवार कहैक ।

विशालकाय शरीर । बड़का-बड़का गलमोछ, आसव पान सन अरुणाभ आँखि । शिरोत्राण मे जगमग करैत मणि-माणिक्य, हाथ मे चाकर धार बला तरुआरि । वक्ष पर मणि- जटित लौहपट्ट । पँवार अपना राज मे जेम्हरहि जाय ओम्हरहि आतंकक झंझा नाचए लगैक । युवती लोकनि पतनुकान लए लेथि । सम्पन्न सँ सम्पन्न आ प्रभावशाली सँ प्रभावशाली लोक , दाँत तर तृण दाबि कए ओकरा सम्मुख नतमस्तक भेल आबथि ।

स्नान करैत तरुणी सभ, पीपरक पात जकाँ थरथराइत धार सँ ऊपर एलीह । ओ सभ घाट सँ आगू बढ़ले छलीह कि आगू सँ कज्जलगिरि हाथी कें अपनहि सँ संचालित करैत पँवार, यम-सहोदर जकाँ जुमि आएल । ओकरा पार्श्व मे एकटा बड़का घोड़ा पर ओकर विकराल सेनापति 'चंड' छलैक आ पाछू-पाछू, डाँड़ मे तरुआरि बन्हने आ हाथ मे भाला नने किछु पदाति सैनिक ।

कज्जलगिरि रहि-रहि कऽ सूँढ़ उठा-उठा कऽ मेघमंदिर स्वर मे गड़गड़ा उठै छलैक । लगले मने ककरो पीचि कए प्राण नेने छलइ ताहि सँ ओकर दूनू अगिला पएर ठेहुन तक रक्त-रंजित देखए मे आबि रहल छलैक ।

जे जत्तहि छलि से पाषाणवत ठाढ़ि रहि गेलि ।

''कुमारि सभ कें फराक करू ।'' पँवार गुम्हड़ल । कुमारि सभ झुण्ड सँ हँटि कए ठाढ़ि भए गेलीह ।

''ओ, कनक-लता सन के छथि ?'' पँवार एकटा कुमारि दिस इङ्गित करैत पुछलक ।

''माँजरि', एकटा वृद्धा करबद्ध होइत उत्तर देलकैक —'महरक बेटी ।'

''चंड,'' ओ पार्श्वक अश्वारोही कें कहलकइ-''वैह भेलि माँजरि । ओकरा पर दृष्टि रहए जे ओ हमरा राज सँ बाहर नहि जा पाबए । क्यो एकर अपहरण नहि कए लेअए । एहन महा-सुन्नरि नारी-रत्न लए दू राजा तक मे तरुआरि उठि सकैत अछि ।''

''जे आज्ञा ।'' चंड गम्भीर स्वर मे बाजल—''सुनइ छियैक जे एकरा लेल एकटा एहन शौर्यशाली पतिक खोज भए रहल छैक जे हमरा सभ सँ युद्ध कऽ सकए ।''

पँवार हुमड़ल—''तरुआरिक भरोस राखह । साँढ़ प्रत्येक चुनौती कें सिंघ पर आ वीर तरुआरि पर झेलैत अछि । महिष-बड़द सँ कतहु सिंह डेरायल अछि ।''

ओ एकटक माँजरि दिस ताकि रहल छल । बिजुरी-रेह सन देह । कने अरुणाभ आकर्ण नील-नयन । अधर-बिम्ब पर लुबधल सुगवा-नाक । दाड़िम-दशन ।

पँवारक छाती जेना बिहरय लगलैक । ''ई दुर्लभ नारी-रत्न छियैक । एहन सौन्दर्यमयी एहि धरती पर भरिसक्के आन क्यो होएत। एकर बियाह जतेक झट दऽ होइ से नीक । जानि ने जानि कहिया एकरा विवाह-मंडप सँ झीकि कए अंक-शायिनी बना सकब?'' ओ मोनहि मोन कहलक ।

ओ एकटा पार्श्वचर कें बजा कए आज्ञा देलकैक—''विवाहिता तरुणी सभहिक हेंज मे जे रूपसी, सब सँ पाछू मे ठाढ़ि छैक ओकरा बजा लीअ ।''

श्यामल वर्ण । हिरिणी सन आँखि । पीयर पटोर । ओ सद्यःस्नाता, भाला फलकक इङ्गित पर आगू आनल गेलि । ओकर पएर पताति छलैक आ' नागिन लट ओ नलिनी नयन सँ अनवरत मोती चूबि रहल छलैक ।

हाथी आगू बढ़ि अएलैक । ओ चित्कार कएलक । कज्जलगिरि सूँढ़ बढ़ा कए ओहि अबला कें लपेटि कए ऊपर उठा लेलकैक आ पँवार ओकरा सूँढ़ सँ लए कऽ अपना आगू मे बैसा लेलकैक आ बामा हाथक पाश मे आबद्ध करैत कहलकैक—''कनियों चैंचूँ केलहुँ कि हाथीक पएर तर प्राण देबए पड़त । एहि सँ राज-भवनक शय्या बेसी सुखद होएत ।''

ओ अर्धनग्ना युवती, बाजक चांगुर मे पड़ल बगेड़ी जकाँ निस्पन्द भए रहलि छलि । पँवारक दहिना हाथक आंकुसक इशारा सँ कज्जल-गिरि एक दिस बढ़ि गेल आ' ओकरा सँगे बढ़ल अश्वारोही चंड आ पदाति सैनिक सभ । पँवार एखनहुँ पाछू घूरि-घूरि कए माँजरि दिस ताकिये रहल छल ।

* * * * * * * * * *

''तड़ड़ धम् । तड़ड़ धम् ।'' रहि-रहि कए ताल ठोकक आवाज आबि रहल छलैक । लगैक जेना बज्रताल घहरा रहल हो । पाँच-पाँच टा दुर्धर्ष मल्ल एक दोसर सँ भिड़ैत, दाव-पेंचक अभ्यास कए रहल छल ।

ओहि आखाड़ाक प्रधान मल्ल जखन अपन द्युतिमान खंडा कें उठा कए ओकर संचालन अभ्यास करए तऽ लगैक जेना अनवरत बिजलौका दमकि रहल हो । बड़ भारी विशाल खंडा छलैक ओकर । अस्सी मोनक । ओकर धार आगिक धधरा जकाँ लहलह करैत । प्रधान मल्लक नाम छलैक लोरिक । ओकर छोट भाई ''सावर'' तेहने मस्त तरुण । तेसर मल्ल राजल-धोबी, बुद्धि, बल आ धनक आगार । बारू दुसाधक कल्ला बाघ सन लगैक आ' जखन ओ ठनकइ तऽ चौदह कोस तक ओकर टाहि गूँजइ । नाटे-खुटे बंठा चमारक ढोल बारह मोनक छलैक आ तकर ढोलबजना लारनि तीन-तीन मोनक ।

ओ सभ छलैक 'अगौरा' गामक निवासी । बड़ पैघ छलैक ओ गाम । चौदह कोसक । सात सए गलियारी छलैक । ओइ गामक नरेश छलैक राजा सहदेव ।

ओकर बेटा कुँवर महादेव देखैत बेस भोकना-बिलाड़, आलसी आ' अकर्मण्य नरमहेश छलैक । किन्तु ओकर बेटी राजकुमारी चनैन परम रूपवती आ गुणमयी छलैक । ओकर बियाह बोहाक राजकुमार शिवधर सँ भेल छलैक ।

यादव राजा सहदेवक यादव हरबाहक नाम ''कुब्बे'' छलैक । भीमकाय व्यक्ति छल । ताड़क गाछ उखाड़ि कए ओकर छड़ी हाथ मे रखै छल । ओकर कान सूप सन-सन छलैक । कपार छिट्टा सन आ आँखि डोका सन-सन । ओकर पत्नीक नाम छलैक खुलैन । गाम भरिक गाय वैह चरबैक । सात दिन मे एक दिनक दूध खुलैनक होइक ।

खुलैन आ कुब्बे दम्पति बड़ निर्धन । मात्र चरवाही आ हरबाही सँ जिनगी ससरैत । किन्तु ओ लोकनि भगवती-दुर्गाक बड़ भक्त । माँ दुर्गा हुनका दूनू कें स्वप्न मे कहलथिन्ह—''हमर आँहाँ बड़ भक्ति कएल । तैं आँहाँ लोकनि कें दूटा दुर्लभ पुत्र-रत्न प्राप्त होएत ।''

हुनका लोकनि कें ओ दूनू वीरपुत्र प्राप्त भेलन्हि । एकटाक नाम धएलन्हि लोरिक आ' दोसरक नाम 'सावर'। जेठ छलाह लोरिक । ओ नीलगिरिक चलायमान शृंग जकाँ लगैथ । ताल ठोकथि तऽ गाछ-बिरिछ टूटि-टूटि कऽ खसऽ लागए । दमसि कऽ चलथि तऽ धरती कापए लागए । हँसथि तऽ लोक कें मेघ गर्जनक अनुमान होइक । ओ अपना हाथक खंडा घुमबथि तऽ अनवरत सौदामिनीक छटाक भान होइक । छोट जन ''सावर'' लड़ैत मत्त साँढ़ सभ कें तरहत्थी सँ ठेलि कए फराक कए देथि । भीषण सँ भीषण बाघक राङ पकड़ि कए चीरि देथि आ बड़का तरुवरक जड़ि मे धक्का दए कऽ ओकरा डोला देथि जाहि सँ ओकर फल भड़भड़ा कऽ धरती पर पथार लागि जाइक ।

सिलहट आखाड़ा परक ओइ पाँचो मल्लक ख्याति दूर-दूर तक पसरल छलन्हि । राजा सहदेव हिनका सभ सँ भयभीत रहथि आ प्रत्यक्ष मे हिनका सभ सँ बाजक साहस नहि करथि ।

लोरिक आ सावर माँ दुर्गाक समक्ष प्रतिज्ञा लेने छलाह—हमरा लोकनिक जिनगी अबला, गाय आ आर्त्त लोकनिक रक्षाक हेतु बीतत ।

गौरा-गामक निवासी 'महर' एक लाख गायक अधिपति छलाह । हिनका पत्नीक नाम छलन्हि पद्मा-मौहरि । हिनका दूनूक एकमात्र सन्तान वैह माँजरि ।

माँजरि हाबी पत्तनक भगवतीक मन्दिर मे, प्रतिदिन माँ दुर्गाक पूजा करथि आ अत्याचारी राजा उघरा - पँवारक वासना सँ अपन सतीत्व रक्षाक हेतु माँक चरण मे गोहारि लगबथि । हिनक शील, करुणा आ प्रभा सँ लोक एते प्रभावित छल जे हिनको भगवतिये बुझन्हि ।

दूध, दही, घी आ बाछाक मूल्यक फलस्वरूप पद्मा मौहरिक आगू मे प्रतिदिन सावा पहर सोन बरसन्हि । माँजरिक मामक नाम छलन्हि ''सेवाचन ।'' माँजरि लेल पँवार कें पराजित करएवला रणवांकुड़ा पति कें ताकक भार हिनके ऊपर छलन्हि ।

एहन प्रचण्ड योद्धा वरक (जे पँवारक मानमर्दन कए, मांजरि कें लए जा सकए) भेटनाइ सुसुक नहिं छल । एहि तहकिकात मे सेवाचनक पचासी जोड़ पनही टूटि गेलन्हि, गाल चोकटि गेलन्हि आ मुँह सुखा कए झाम भए गेलन्हि ।

ओ अगौरा गामक सिलहट आखाड़ाक ख्याति सुनलन्हि आ' ओइ गामक सीमान पर जखन पहुँचलाह तऽ बिना मेघक बिजुरी दमकैत देखलथिन्ह । निरभ्र आकाश रहितो मेघ-गर्जन सुनलन्हि । कखनो-कखनो धरती कँपैत प्रतीत होइन्ह । ओ शगुन विचार करए लगलाह । उत्तर शुभ अबन्हि आ लक्षण अशुभ बूझि पड़न्हि ।

फराके सँ हुनका राजा सहदेवक हंस-धवल शतखंडा महल देखि पड़लन्हि । सोचलन्हि जे अबस्से ई सुविख्यात सिलहट-आखाड़ा राजक मल्ल सभक क्रीड़ाभूमि हेतैक तैं ओम्हरहि चली ।

ओ प्रफुल्ल भए उठलाह । पान खएलन्हि, मुरेठा बन्हलन्हि आ' हलसल फुलसल ओम्हरहि दिश चलि पड़लाह ।

राजा सहदेव सेवाचनक बड़ आदर-सत्कार केलथिन्ह । सोनाक झारी सँ पानि ढारि कए हुनक पएर धोआएल गेल । गुआ-पान आएल ।

राजाक बेटा राजकुमार, महादेव कुमारे छल । ओ सुसज्जित कए आनल गेल ।

सेवाचन देखलन्हि, महिषिक भुअरगर पाड़ा जकाँ गुजुर-गुजुर तकैत राजकुमार कें, जकरा हाथ मे, रण अश्वक रासि वा तरुआरि पकड़क ठेलाक कोनो चेन्ह नहि छलैक ।

ओ विचार कएलन्हि—''पँवारक तरुआरिक एक्के आघात मे अइ दुलारू कुँवरक मुड़ी बेल जकाँ धरती पर गुड़ैक जेतैक ।

ओ राजा सहदेव सँ विनय कएलन्हि—''महरक बेटी आ' अइ राजकुँवरक जोड़ी ठीक नहि होइ छैक ।''

एते कहि ओ राजाक अभ्यर्थना कए ओहिठाम सँ चलि देलन्हि ।

राजा क्रुद्ध भए गेल । गाम भरि मे ढोलहो पिटबा देलकैक— जे क्यो सेवाचन कें सिलहट आखाड़ा वा लोरिकक ठेकान-पता कहलकैक तकरा भकसी झोंका देल जेतैक । सौसे गाम आतंकित भए उठल । सेवाचन जेम्हरहि जाइथ क्यो हुनका सँ मुँहो ने बाजन्हि, आतिथ्यक कथे कोन ।

धोबिया-पोखरि पर एकटा परम सुन्नरि धोबिन, नुआ सभ धो-धो ओकर अमार लगौने जा रहलि छलि । सेवाचन, औना-पौना कऽ ओकरा समक्ष अएलाह आ पुछलथिन्ह—"ई केहन गाम छैक जाहिठाम लोक आगन्तुक कें देखि कए मुँह मे पिठार लगा लैत छैक, सकदम भए जाइत छैक आ पीयर पड़ि जाइत छैक"?

खल-खल हँसि उठलि धोबिन । ओकर तिलकोड़क फर सन ठोरक ओइपारक मुक्तापंक्ति बेकत भए उठलैक । ललाटक श्रमबिन्दु सँ सटल लट कें सरिअबैत ओ कहलकैक—"ई सभ राजा सहदेवक दुष्टपनी छियैक । वैह सभ कें आँहाँ सँ मुँह बाजए सँ मना करबा देलकैक अछि । लोक ओकरा सँ भयभीत रहैत अछि । आखिर आँहाँ की चाहैत छी ?"

सेवाचन ककुलता सँ कहलथिन्ह—"एकटा वीर तरुण कें ताकि रहल छी। कन्यादान उपस्थित अछि ।"

"हमर पति बड़ बलशाली व्यक्ति छथि । हुनक तरुण मित्र गोप लोरिक दुर्धर्ष योद्धा छथि । कही तऽ हम ओहि पुरुष-मनियारक ठेकान दी ।" रूपसी धोबिन नाजलि ।

सेवाचन ओकर परीक्षा लेलन्हि—"मनियार तऽ साप होइ छैक?

तरुणी बिहुँसि उठलि—"अही बुद्धि पर योद्धा-वर तकइ छी । मनियार सर्प अपना मस्तक पर मात्र द्युतिमान पाथर उघैत रहैत अछि किन्तु पुरुष-मनियारक मस्तके शौर्यक आलोक सँ उद्भाषित होइत रहैत छैक । चलू लोरिकक घर चलू । हमरा सभ कें अइ दुष्ट राजाक रवढ़ोभरि भय नहि अछि ।"

ओ धोबिन लोरिकक मित्र राजलक पत्नी फुलिया छलि ।

सेवाचन लोरिकक ओहिठाम जएबा लेल प्रस्तुत भए गेलाह ।

फुलिया हुनका सादर कुब्बेक दलान पर लए अनलक । ओ कुब्बेक विपन्नता सँ व्यथित भए उठलाह ।

फुलिया टोकारा देलक—''वैभव बेर-बेर अर्जन कएल जा सकैत अछि। धन पौरुषक चेरी होइत छैक। बुद्धि, बल सभठाम नहि भेटैत छैक। कनेक सिलहट आखाड़ा पर सँ वर तऽ देखि आउ। नयन जुड़ा जाएत ओइ नर-केहरि कें देखि कए।''

''कतए छैक ओ सिलहट आखाड़ा, हे आशा के परी !'' सेवाचन पुछलथिन्ह।

चतुर धोबिन बाट धरा कऽ कहलकन्हि—''जाहिठाम अनेरो बिजलौका लौकैत होइक आ मेघक स्वर मे ठहाका गूँजैत होइक ओही ठाम पहुँचि जाएब।''

सेवाचन आगू बढ़लाह।

लोरिकक माय खुलैन, फुलिया कें कहलकैक—''एँ गे पुतौहु, ई जे बाट पर सँ अपना बाप कें अराधि अनने छै, से हम खाए लेल की देबैक ?''

फुलिया भकरार भए कऽ हँसलि—''कोनो चिन्ता नहि करथु माए. जे बाप कें बजौलक अछि से एक दिन बहिन के सेहो बजा लेत। भोजनक सामग्री हम छन घड़ी मे जुमा लैत छी।''

चौदह मोन भालसरी चाउर, सात मोन राहड़िक दालि, सत्ताइस मोन तरकारी ओ पल घड़ी मे लए अनलक। खुलैन सीक पर सँ सात घैल घी आ' सत्तरि तौला दही हेठ कएलन्हि।

राजाक भय सँ दियाद गोतिया निपत्ता। अरोसिया पड़ोसिया पतनुकान लेलक। कियो संग देनिहार नहि।

''माए ई भानस-भात मे जुटि जाथु।'' फुलिया कहलकैक—''आ' हम एम्हर राजा सहदेवक करेज पर सिलौट राखि कऽ मसाला पीसइ छी।''

खुलैन भानस करए लगलीह। तड़ल जाइत आ' छानल जाइत तरकारीक सुगन्धि सँ वातावरण महामहि करए लागल। घीक सातो घैल खाली भए गेल। बाहर बैसल कुब्बे जी चटपटबए लगलाह।

कुब्बे अपना गौवां कें भोज देलन्हि । पंच लोकनि जखन भोजन समाप्त कए चुकलाह तऽ कुब्बे घोषणा कएलन्हि— " जे-जे खएलक लोरिकक भात से-से चलत लोरिकक बरियात ।" ई सुनिते लोक लाबा-फरही होमए लागल । हुनका सभ कें पँवारक प्रचण्ड शक्तिक अनुमान छलन्हि । ओइ मे सँ किछु भागि पड़ेलाह । किन्तु जे भात पर हाथ चलबिते रहि गेलाह से छलाह चुनौटा वीर ।

बरियाती चलि पड़ल । भरि दिन चलला पर ओ लोकनि देखलन्हि जे एकटा नदीक कात मे सात सए धोबी कपड़ा धो रहल अछि ।

"धोल कपड़ा मे सँ हमरा बरियाती कें पहिरक लेल किछु कपड़ा-वस्त्र दीअ । बरियाती सँ घूरब तऽ आँहाँक कपड़ा घुरा देब ।" राजल, ओइ धोबी सबहिक प्रधान कें विनयपूर्वक कहलकैक—"बेर जोगा दीअ ।"

धोबी प्रधान ढोढ़िया साँप जकाँ फोंफिया उठल-"भागऽ की । मखानक पात सँ कने मुँह पोछि आबह । राजाक वस्त्र हिनका मंगनी दिऔन्ह ।"

राजल हँसल—"दीतह तऽ बड़ उपकार होइत ।"

धोबी प्रधान तामसे भूम्हूर होइत राजल पर चटकन उसाहलक ।

ओ एकरे प्रतीक्षा मे छल । ओ धोबी प्रधान कें पटकि कए ओकरा छाती पर बैसि गेल आ सभटा वस्त्र लूटि लेबक हुकुम देलकैक ।

अगौराक बरियातीक चोट सँ धोबी समुदाय भागि चलल आ बरियाती नीक जकाँ पहिरि-ओढ़ि कए चलि पड़ल । दोसर दिन भेटलइ 'बगड़ा-बजार' । बजार वला हिनका सभ कें भोजन देबा सँ अस्वीकार कएलक । पहर भरि मे बगड़ा-बजार उजड़ि गेल । भोजन-छाजन तऽ भेवे केलैक ताहि पर सँ रजत, स्वर्ण आ मणि-माणिक्य जेऽ छीनल गेलैक से कात । बजरुआ सभहक ठगी आ मुनाफाखोरी घोसड़ि गेल । जे दाँत तर तृण राखि कए आएल तकर जान बकसल गेल । स्त्री, नेना आ वृद्ध पर कियो ने हाथ उठौलक ।

बरियाती आगू बढ़ल । आगू-आगू बूढ़ कुब्बे अपना हाथ मे ताड़क छौंकी घुमबैत चलि रहल छल । जखन ओ सभ गौरा-गामक कात मे पहुँचल तऽ साँझ होमए जा रहल छलैक । एकटा बेस फैलगर गाछी मे ओ सभ डेरा खसौलक । कन्या-पक्ष कें सूचना देल गेलैक । महर भोजन-सामग्रीक अमार लगा देलन्हि तऽ कुब्बे सेहो खएबा मे कोनो कोताही नहि केलथिन्ह । सत्ताइस मोन दूध पीबि

ओम्हर सेवाचन जखन सिलहट आखाड़ा पर पहुँचलाह तऽ तराटक लागि गेलन्हि । लोरिकक छवि देखि कए हुनका अनुमान भेलन्हि जेना स्वयं भैरव वीर वेश मे ठाढ होथि । हुनका विश्वास भए गेलन्हि जे ई तरुण अवस्से पँवार कें क्षएमान कए माँजरिक सतीत्व रक्षा कए सकत । ओ अपन जनम आ' यात्रा कें सुफल मानलन्हि । मोनहि मोन 'वर'क सराहना करैत ओ घुरलाह आ' पुनः कुब्बेक ओहिठाम एलाह ।

धोबिन कुब्बे सँ कहलकइ —"हम आँहाँ लेल बीस हाथक धोती आ' बहत्तरि हाथक पगड़ी नेने अबइ छी ।" ओ वस्त्र आनए चलि पड़लि ।

खुलैन अपना पति कें बजा कऽ कहलथिन्ह — "आँहाँ भनसा घर मे आउ । कने एहि ठाम चीज-वस्तु देखैत रहिअउ । हम कनी स्नान कए भगवतीक पूजा कएने अबैत छी ।" ओ स्नान करए चलि गेलीह ।

कुब्बे विचारलक, बेटाक बियाह तऽ एतए ने ओतए कतहुँ हएबे करतैक । एहन अवसर कि बेर-बेर भेटइ छैक ।

ओ केराक अघड़ पात ओछा कए सभटा भात दालि चट कए गेल । धड़फड़ी मे ओकरा तरकारी लेबाक सुधि नइ रहलैक ।

खुलैन स्नान-पूजा कए घुरलीह तऽ कुब्बे कें धिक्कारए लगलीह । फुलिया आयलि तऽ हँसैत-हसैत खोंखी करए लागलि । ओ फेर सँ चाउर-दालि अनलक । खुलैन फेर सँ भानस केलक ।

कुब्बे धोती पहिरलक । पग्गड़ बन्हलक । हाथ मे डरोखा सम्हारलक आ' बाहर आएल ।

सेवाचन समीपक सरोवर सँ स्नान-ध्यान कए एलाह तँ भोजन-भात भेल । प्रसन्नताक कारणे हुनकर चोटकल गाल भरि एलन्हि आ' उजर भेल केश करिया गेलन्हि ।

बियाह तय भेल । बियाहक तिथि निश्चित कएल गेल । कुब्बे अपन सत्तरि हाथ नाम आ सत्ताइस हाथ चाकर पगड़ी ओछा देलन्हि ।

सेवाचन गामक बाहर अँटकल अपन अनुचर सभ कें बजौलन्हि आ कुब्बेक पगड़ी कें स्वर्ण-खण्ड सँ झाँपि देलन्हि ।

* * * * * * * * * *

गेला, सात सए तौला दही चट कए गेलाह । सत्तरि माठ सकरौरी देखि देलथिन्ह आ' आग्रह पर सौ हाँड़ी छाल्ही सेहो कंठक नीचा ससारि देलथिन्ह । आनो-आनो बरियाती शरीर-गुने कुब्बेक अनुशरण उदारतापूर्वक केलन्हि ।

एमहर महरक दिस सँ वस्तु तड़ातड़ि जुमैत रहल ।

'हर-हर कल-कल' लगे मे कमला बहल जा रहल छलीह ।

पूर्णिमाक ओइ ज्योत्स्नामय सांझ मे, कमलाक धार मे किछु दूर पर ओ लोकनि, एकटा कारी टिलहा कें, भसिआइत चल अबैत देखलथिन्ह । हुनका लोकनि कें छगुनता लागि गेलन्हि जे ई पाथरक टिलहा कोना भसिआइत आबि रहल छैक ।

तखनहि, रंग-विरंगक वस्त्राभूषण सँ सुसज्जित नारी दल झमझम-खमखम करैत बरियाती वला सँ गुआ-पान मांगए लेल अषाढ़क घटा जकाँ उमड़ि आएल । एक सँ एक कठमस्त छलि ओ सभ । ओकरा सभहिक शरीर अपना-अपना साड़ी मे अंटियो नहि रहल छलैक ।

राजल ठहाका मारि कऽ हँसल— ''रे सावर, कन्या पक्षवला बेस रसिक । हमरा सभहिक अनुकूलें, जगरजाठि छौंड़ी सभ कें, घोड़की-सुपाड़ी लेल पठौलक अछि ।''

''हँ भैया'', सावर उत्तर देलकैक- ''एहि छौंड़ी सभक पाछू मे कटार झूलि रहल छैक ।''

''आबि जो बौआ ।'' हम सभ बाघिन-मैयाक दूध पीलहुँ अछि, बकरीक नहिं ।'' राजल ललकारा देलकैक ।

राजल आगू बढ़ल तऽ सावर लपकि कए ओकरा पार्श्व मे आबि गेल आ' अपना आगुक तरुणी कें खोंइछा मे घोड़की सुपाड़ी लेबए कहलकैक ।

ओ तरुणी बढ़ि कए सावरक गाल पर बज्र-ठुनका देलकइ ।

सावर लेखें ओ ठुनका, गजराजक गलगण्ड पर आक फूलक चोट जकाँ बूझि पड़लैक ।

ओ हँसल·········''राजल भैया, सगुन बेजाए नहिं ।''

राजल ओहि कठमाउगिक आंचर पकड़ि कए झीकि लेलकैक । ई की,

ओ तऽ पुरुष पहलमान छल । नारीक छद्मवेष मे । माथ पर रंगल सुतरीक नकली केश धारण कएने । ओइ केशक गुम्फित वेणी सँ कटार लटकौने ।

नारी वेषधारी मल्ल सभ अपन-अपन कटार हाथ मे लए युद्ध लेल उद्यत भए गेल ।

उल्लास मे भरि वरपक्षवला सभ भीषण अट्टहास कएलक—''जे युद्धक पहिनहि नुआ पहिरि लेलक से रण की टेकत ?''

ओइ अट्टहासक ध्वनि सँ पक्षीगण गाछ सभ पर सँ फड़फड़ा कए उड़ि गेल ।

बूढ़ कुब्बे अपन दंतहीन हँसीक संग अपना जुआन सभ सँ अनुनय केलन्हि—''हे रौ, हमर दुलरुआ सभ, अही बूढ़ कें अवसर दे । तोरा सभ कें बहुत रणखेत भेटतौक जिनगी मे चिनगी उड़बक लेल । आइ हमरे अपन मनोरथ पूर करए दे ।''

ओ आगू बढ़ि कए अपन ताड़क छौंकी सँ आगन्तुक मल्ल सभ कें झँटिआबए लगलाह । मल्ल सभ धवाधवी खसए लागल । बहुत मुइल आ' बहुत पड़ाएल ।

पाथरक भसिआइत टिलही आब लगक घाट पर आबि गेल । राजल गुनिधुनि कए बाजल—''अइ टिलहीक दूनू दिस नाडड़ि छैक ।''

वरयात्री सभ ओम्हरहि छुटलाह । कुब्बे सभ कें थम्हा कए स्वयं आगू गेलाह । राजल आ मावर कें संग नेने । ओ सभ घाट पर गेलाह ।

ओ भसिआइत टिलही, रणपटु ''कज्जलगिरि'' हाथी छल । ओ बिना महौथे के आगू बढ़ि रहल छल । धारक काते-काते टुबकल बढ़ैत ओकर महौथ ओकरा चिकारीक इशारा सँ संचालित कए रहल छलैक । ओकरा सूँढ़ सँ, दूनू छोर पर कटार सभसँ मढ़ल बांस झूलि रहल छलैक जकरा ओ बीच सँ धएने छल । ओ घाट पर ऊपर चढ़ए लागल आ' यमराजक साक्षाते पितिऔत सन भयंकरता नेने झूमैत कुब्बेक समक्ष आएल । ओकरा चूबैत गलगण्ड पर अलिगण गुंजार कए रहल छलैक ।

कुब्बे ताड़क छड़ी सँ ओकरा सूँढ़ पर प्रहार कएलक । कटारीवला बांस टिटकि कए दूर पर खसलैक । राजल ओकरा बीच सँ दू खंड कए एकटा खंड

सावर कें देलकैक आ' कज्जलगिरि पर दुबगली प्रहार प्रारम्भ भए गेलैक । ताड़ आ कटारक चोट कज्जलगिरि लेल असह्य भए गेलैक । ओ कहुना ससरि फसरि कए कमलाक धार मे झबाहि दए खसल आ प्राणपण प्रयत्नक संग हेलैत-डुबैत पड़ाएल ।

कन्या-पक्ष दिस सँ तखनहि एक गोटे पद्मा-मौहरिक समाद लए कऽ आयल आ' बाजल—कन्याक माए मौहरि कहइ छथि जे, सत्तरि हाथक पग्गड़ ओछा कए अगबे स्वर्णखण्डक फलदान लेबए वला बरक बाप सँ कहि दिऔन्ह जे जा तक किरण-छबि-मौर, मानेचौकक ''आकाश-तारा-पटोर'' आ' बिजुवनक माणिक चोली नहि देल जेतैक ता तक कन्यादान किन्हुँ सम्भव नहि ।''

कुब्बेक मुँह सँ सतुआ उड़ए लागल । ओ लड़ाइक बेर मे फुच्च आ' पाइक बेर मे सुट्टक्क होमए बला व्यक्ति । ताहू मे अलभ्य वस्तु-जात लगले कतए सँ आबए ?''

राजल हँसल-''एहिठाम सँ पचीसे कोस पर तऽ बिजूवन छैक । ओहि ठामक कोसा-मालिन बड़ भारी योगिन अछि । ओ 'किरण-छवि-मौर', मानेचौकक ''आकाश-तारा-पटोर'' आ बिजुवनक माणिक चोली एक्के संग बेचैत अछि ।''

कुब्बे मेमिएलाह—''ओतेक दाम कतए सँ आनब ?''

राजल बाजल—''बुद्धि आ पौरुषक आगू संसार मे कोनो वस्तु अलभ्य नहि होइत छैक । उधार माल लेबैक । बियाहक उपरान्त जे डाली-हारी भेटतैक ताहि सँ दाम चुकती कए देबैक । वस्तु देबए मे जों एम्हर-ओम्हर करत तऽ घरसुरक मैल छोड़ा देबैक ।''

''जीबह बौआ ।'' कुब्बे फक्क दऽ निसास छोड़लक—''तों आ' सावर दौड़ कऽ ओ वस्तु सभ लए आनह ।''

''दादा, एते ध्यान राखब जे आहाँ आ' लौकिक वैवाहिक विधि कें मकरा-मकरा बढ़ए देबैक । जतेक बिलम हो तते नीक । अधरतिया मे तऽ हम सभ जुमिए जाएब ।'' राजल चलैत-चलैत कहलकैक ।

कुब्बे दूत कें बजा कए ललकारि देलकैक—''जा-जा, कनियाक माय कें

कहि दहुन्ह जे जे-जे मनोरथ होन्हि से पूर कए लेथि। हम सभ तरहें ताल ठोकि कए एलहुँ अछि।''

दूतक मुँह अपन सन भए गेलन्हि। सरिपहुँ तऽ ई छलैक जे हुनका पद्म-मौहरि नहि पठौने छलन्हि। ओ पठावोल छलाह उघरा-पँवारक। उद्देश्य जे कहुना बाधा दी।

परिछन भेल। लोरिकक विशाल-काया देखि कए स्त्रीगण ओहिना भयभीत भए उठलीह, जेना सखी सहित हिमवान-पत्नी मैना महादेव कें वरवेष मे देखि कए आतंकित भए उठल छलीह। किन्तु संगहि लोरिकक दीप्तिमान आनन आ सुन्दर स्वरूप कें देखि मुग्ध भए उठलीह। हुनका सभ कें विश्वास भए गेलन्हि जे एहि वीर-पुरुषक हाथें पँवार अवस्से क्षयमान होएत।

पँवारक किछु सैनिक छद्म-वेष मे ओहि ठाम टहल-टिकोरा कए रहल छल। ओ सभ आबए-जाएक क्रम मे लोरिकक पएर मे छिटकी मारैक। जे छिटकी मारैक ओकरा पैरक हाड़ लोरिकक लौह पएर सँ टकरा कए चनकि जाइक आ' ओ बाप-बाप कए उठए।

अठोंगर कूटक अवसर अएलैक। पँवारक सात टा भीम पहलवान, लोरिकक संग अठोंगर कुटनाइ प्रारम्भ कएलक। लोरिक मूसर कें कनेक जोर सँ डोला देलकैक कि सातो मल्ल भरभरा गेल। कियो पट्ट तऽ किओ चित्त खसल। ओ सभ लाजे पड़ा गेल।

फेर सात टा पिट्ठा पहलवान आएल। लोरिकक एक्के चोट सँ उक्खरि भरकुस्सा भए गेल आ समांठ सकचुन्न। फेर दोसर उक्खरि-समांठ आएल, ओकरो वैह हाल। उक्खरि-समांठ एकक बाद दोसर अबइत रहल आ' गुंडी-टुकड़ी होइत रहल।

पँवार कें अलबत्त एकटा लोहक उक्खरि छलैक। अस्सी मोन भारी। ओकर मूसर सत्तरि मोनक छलैक। ओ कहियो- कहियो अपन कोनो- कोनो शत्रु कें आह उक्खरि मे राखि कए अपना योद्धा द्वारा, ओहि समाठ सँ थकुचि- थकुचि कए ओकर प्राण लइ आ' अपना विरोधी कें आतंकित करैक।

ओकर मल्ल सभ जेना-तेना ओ उक्खरि टघड़ा अनलक आ' मूसर कें टांगि कए अनलक। लोरिक ओहि मूसर कें एक्के हाथे उठा लेलक आ' ओहि उक्खरि मे से चोट दमसा कए देलकैक जे ओ उक्खरि सहस्त्र खण्ड भए कऽ

छिटकि गेलैक आ ताहि छिटका सँ पँवारक कतेको व्यक्ति घायल भए गेल । हुनकर सभ आदमी गोटा-गोटी कऽ ओहि ठामम सँ पड़ा गेल ।

कतोक सुन्दरी ललना सभ आगू आबि कए लोरिक सँ अनुनय केलन्हि—''सिनेहक उक्खरि मे, प्रेमक समांठ सँ अठोंगर कुटू पाहुन ।''

वीर रस सहसा जेना शृङ्गार मे बदलि गेल । लोरिक बिहुँसि उठल । एकटा खेलौनाक उक्खरि आएल आ' फुल-हत्था समांठ । बिहुँसि कए चोट परल । मघुऐल धमाका भेल । एक, दू, तीन, चारि, पाँच.......।

एखन तक सावर आ' राजलक कोनो पता नहि छल ।

लोरिकक अन्तर मे जेना तीन वेर स्वर गूँजलैक—''दौड़ू भैया रक्षा करू।''

लोरिक फुलहत्था समांठ कें तेना कऽ छिटकेलक जे ओ आंगन सँ बाहर जा' कऽ खसलैक ।

सभ अवाक् रहि गेल आ व्याकुल भए उठल ।

आब गाम भरि मे एकोटा उक्खरि आ' समांठ शेष नहि रहि गेल छलैक ।

लोरिक हँसल—''एकर कोन चिन्ता । हम लगले ओहि फुलहत्था समांठ कें ताकि अनइ छी ।''

ओ, ओहि समांठ कें ताकए चलि पड़ल ।

* * * * * * * * * * * * *

राजल आ' सावर उत्तर दिशा गे बिजुवन दिस बढ़ल ।

राजल कहलकैक— बिजुवनक पात-पात सँ राति कए इजोत छिटकइ छैक । गोंगा बानर पहरा दइ छैक । कनही बिलाइ ऐनिहारक सूचना दइ छैक ।

ओ सभ बाट मे किछु लताम तोड़ि कऽ संग कऽ लेलक आ किछु पोठी माछ सेहो पकड़ि लेलक ।

बकुला धारक कात मे, पँवारक सैनिक सँ ओ सभ घेरा गेल । संग मे कोनो हथियारो ने छलैक । सोझां मे घाट पर,कोनो धोबीक, नुआ धोइ वला

बड़का पाट छलैक । राजल ओहो ठाम ठाढ़ भए गेल आ' सावर तिगनी नाच नाचए लागल । जे योद्धा ओकरा दिस बढ़ैक तकरा अल्लग-बल्लग उठा कए ओ राजल दिस फेंकि दैक । राजल ओकरा उपरहि टांग पकड़ि लैक आ' पाट पर दू-चारि बेर पटहा कए दूर फेंकि दैक । बहुत सैनिक एना मारल गेल आ जे बाँचल से पीठ देलक ।

ओ दून्नू पुन आगू चलल, बिजुवन आएल तऽ ओहि ठामक शोभा सँ चकित रहि गेल ।

योगिनीक धूनी सँ सुगन्धित धूँआँ आ सतरंगा इजोत बहरा रहल छलैक । लगले गोंगा बानर आगू एलइ । भयानक रूप । दाँत किटकिटबैत ।

राजल पाँचटा लताम मे सँ एकटा ओकरा दए देलकैक आ' चारिटा लताम चारू दिशा मे फेंकि देलकैक । गोंगा बानर हाथक लताम दाँत तर दाबि लेलक आ बाकी लताम ताकक लेल दौड़ल ।

राजल आ' सावर आगू बढ़ि गेल तखन एलइ कनही बिलाइ । सावर, ओकरा पोंठी माछ देखौलकैक । बिलाइ लग एलैक तऽ सावर ओकरा ठोंठ पकड़ि कए लगक सरोवर मे पाँच डूबकी लगा कए छोड़ि देलकैक । कनही लाजे कतौ दबकि गेलि । मालिन कें सूचना के दैत अछि ।

ओ सभ कोसाक मण्डप लग आएल । पथक दून्नू कात सुन्नर-सुन्नर तरुण सभ पाती-जोर सँ नग्न ठाढ़ छलैक । सभहिक माथ पर एकहकटा कए दीप जरैत । ओ सभ यन्त्रवत् टुकुर-टुकुर तकैत छलैक : ने बजइ ने भूकइ ने हिलइ आ' ने डोलइ ।

मण्डपक बीच मे कोसा-मालिन बैसलि, बारह वरष सँ खीर रान्हि रहाल छल । चाननक जारनि । सोनाक टोकना । रूपाक दाबि । खीर सँ मधुगन्ध उठि रहल छलैक । अपरूप सुन्नरि छलि कोसा-मालिन । चम्पा सन रंग, तिल-फूल सन नाक, ओड़हूल सन ठोर, नील कमल सन आँखि । धूनीक प्रकाश मे ओकर मुँह चान सन लगैक आ' ललाट परक सिन्दूर-बिन्दु सुरूज सन ।

"आउ है तरुण लोकनि । पहिने खीर खाउ ।" कोसा बाजलि ।

एहि दूनूक जीह पनिछा रहल छलैक । सावर कहलकैक "लाबह, खीर पहिने माँ दुर्गा कें खीर समर्पित करी ।"

कोसा लग मे राखल आसन दिस इशारा केलकैक—''बैसइ जाउ ।''

राजल आसन मे लात मारलक । आसन छिहुलि कए हटि गेल आ' ओहि तर सँ एकटा कराल नाग फुफकारि कए ठाढ़ भए गेल ।

सावर ओकरा एक झापड़ देलक आ' राजल ओकर नाङड़ि पकड़ि कए बड़ी दूर फेकि देलकैक ।

''आहाहा'' सावर कहलकैक—''हे कोसा सुन्नरि, आँहाँक भुजंगासन तऽ अपूर्व रहल ।''

राजल बाजल-''झट दऽ हमरा किरण-छवि मौर, माणिक-चोली आ' आकाश-तारा पटोर दए दीअ । लोरिकक विवाह, पद्मा-मौहरिक बेटी मांजरि सँ भए रहल छन्हि । विदाई मे जे डाली-पाती भेटत तहि सँ मोल चुका देब ।''

''हमरा, साधना लेल सात सौ टटका काटल नर-मुण्ड चाही ।'' कोसा मांग कएलक ।

''तकर कोन कमी ।'' राजल हँसल—''गौराक रण-भूमि सँ अपनहि बीछि लेब ।''

''सात लक्ष स्वर्णमुद्रा चाही ।'' कोसा कहलकैक ।

''चलऽ काल फूल-माला लए कऽ ठाढ़ि रहब । ओही ठाम भेटि जाएत ।

राजल उत्तर देलकैक ।

''ठीक छैक हमर रसिया लोकनि । हम एखनहि ओ वस्तु सभ आनि दैत छी । किन्तु आउ दू घड़ी हमरा संग रस-विलास तऽ कऽ लीअ आँहाँ सभ । आँहाँ दूनू सन दर्शनीय वीर-पुरुष आ' हमरा सन महासुन्नरि, ई सुयोग दुर्लभ अछि ।'' मालिनक मुस्कान मादक भए एलैक ।

सावरक आँखि मे तामसक लाली आबि गेलैक । ओ गुम्हड़ि उठल—''तोरा संग दू घड़ी विलासक व्यामोह मे जें-जे पड़ला से-से माथ पर जरैत दीप नेने वैह नगन भेल ठाढ़ छथि पंक्तिबद्ध भेल । एहिठाम रस-रंगक मरम वैह कहता । हमरा वस्तु सभ झट दए दे डनियाही, नहि तऽ बारह-बरख सँ बरकैत तोहर ई सिद्ध-खीर कें माटि पर उनटा देबौक आ' गोटा-गोटी कऽ तोहर केश उपारि लेबौक ।''

खीर नष्ट भए जएबाक भय सँ, कोसा कें मंतर बलें अन्तर्ध्यानो होइत नहि बनलैक । ओ किरण-छबि मौर, माणिक-चोली आ' अकाश-तारा-पटोर लगले आनि देलकैक ।

ओ माणिक-चोली दिस इशारा करैत राजल सँ कहलकैक—''हीरा-मोतीक छटा देखिऔक । ई तीनू वस्तु केहन-केहन राज-राजेश्वर लेल दुर्लभ छन्हि । वधूक उरोज पर एहि अंगियाक आभा अपूर्व रहत ।''

राजलक ध्यान ओम्हर गेलइ कि कोसा सावधानी सँ अनजाने मे ओकरा मुरेठा मे एकटा सूई खोंसि देलकैक ।

पुनः ओ आकाश-तारा-पटोर दिस सावरक ध्यान कें आकर्षित करैत बाजलि—''एकर आकाश-गंगा किनारीक बनोतरी देखिऔक । नीवी-बन्धन पर एकर छटा, केहनो पुरुषक करेज कें सालि देतैक । तेहने भाग्यशाली हाथ होएत जे ओहि कोंचा के खरकाओत ।''

सावर जैं कि ओम्हर तकलकैक कि योगिनी ओकरा मुरेठा मे जुगता कए एकटा सूई अनचोके मे खोंसि देलकैक ।

अगिन-वरण साड़ी, चान सन चोली आ' उदीयमान सूर्यक छटावला मौर लऽ कऽ दूनू चलि पड़ल ।

बड़ वेग सँ ओ सभ गोरा लग तक तऽ आएल किन्तु ओ दूनू खोंसल सूईक प्रभाव सँ गामक कात अबैत-अबैत दूनू निपट्ट आन्हर भए गेल आ' एकटा आमक गाछक चारू कात घुरमए लागल । बाटक थाहे ने लगैक । व्याकुल सावर तीन बेर चित्कार कए उठल—''भैया दौड़, प्राण अवग्रह मे अछि ।''

* * * * * * * * * * *

''माँ दुर्गा ।'' लोरिक, बियाहक आंगन सँ बहराइते विकल होइत गोहारि कएलक—''राजल आ सावरक वेग आ' बाट कें के छेकि सकैत अछि । से की भए गेलइ ओकरा सभ कें ? हे भगवती, की एकटा सुन्नरिक पाछू, राजल सन सुहृद मीत आ' सावर सन सहोदर कें गमा देब? रक्षा करू हे माता ।''

सहसा गामक बाहर ओकरा दू टा आलोक-शिखा देखि पड़लैक । ओ

ओम्हरहि लपकल । लग जा कऽ देखइऐ जे, राजल आ सावर एकटा आमक गाछक चारूकात वाणविद्ध पक्षी जकाँ चक्कर दए रहल अछि आ' ओकरा दूनूक मुरेठा सँ ज्योति-शिखा उठि रहल छैक । ओ ओकरा दूनूक मुरेठा सँ दूनू सूई बाहर कए देलकैक । ओ सभ स्वस्थ भऽ कऽ लोरिक सँ लपटि गेल । पुनः तीनू घूरल । खंडाक आलोक मे फुलहत्था मूसर भेटि गेलैक । अठोंगर भेलइ । भामरि पड़लइ । किरण-छवि मौर पहिरि कए लोरिक वरासन पर बैसलाह । बाम भाग मे, आकाश-तारा पटोर आ' माणिक-चोली मे सुशोभित बैसलीह मांजरि । जेना वीर रस आ शृङ्गार रसक गंगा-जमुना मिलि कऽ मंडपक प्रयाग बनि गेल आ' सहस्र-सहस्र नयन ओहि मे नहा कए नेहाल भए रहल हो ।

फेर सिनुरदान भेल आ' वर-वधू कोबर प्रवेश कएलन्हि ।

ओ विशाल ज्वाजल्यमान खंडा कोबर-घरक एक कोन मे ओङठा कऽ राखल छलैक आ' दोसर कोन मे राखल किरण-छवि मौर अपन इजोत पसारने छल ।

लाल-पलंगक चारूकोन पर पुष्पाकृत मणिदीप झकमक कए रहल छल । थाकल-ठेहिऐल लोरिक, एक्के घड़ी मे सूति रहल । बाहर, बरियाती सभ नाना प्रकारक भोजन सँ सन्तुष्ट भए ठड़ड़ पारि रहल छल । जागि रहल छल पहरा पर मात्र सावर आ' राजल । ओ सभ, दू टा हथिनी सन-सन माउगि कें आंगन दिस अग्रसर होइत देखलकैक ।

सावर चिहुँकि उठल, किन्तु राजल बुझौलकैक—''जाय दहक । जों कुल-वधू हेतैक तऽ स्पर्श केनाइ कलंकक बात । जों शत्रु हेतैक तऽ लोरिक-खंडा रक्त स्नान करतैक ।''

ओ दूनू हथिनी-माउगि आंगन गेलि । ओ आर क्यो ने छल । ओ सभ छल प्रसिद्ध चोर-मल्ल सोनिका आ' मनिका । नारी वेष मे उघरा-पँवारक पठौल ।

आंगन मे घरे-घर सभ सूतल छल । मनिका बाहरे सँ चार अलगौलक आ' सोनिका ओहि तर दए ससरि कए, तरुआरि नेने कोबर मे प्रवेश कए गेल ।

कोबरक शोभा सँ चकित रहि गेल । सूतल लोरिक नीलाचलक छवि उपस्थित कए रहल छल । मांजरि एना लगैक जेना विद्युत्लता मेघ सँ सटले

रहि गेल हो । आकाश-तारा पटोर मे माणिक चोली इजोरिया सन लगैक आ' मुख-मण्डल चान सन । मुँह पर लट चन्द्रकलंक सन बूझि पड़ैक ।

सोनिका अपना सौंसे देह मे काजर लेपने छल । हाथ मे तरुआरि छलैक। ओ साक्षात् महिषासुर जकाँ देखि पड़ैक ।

मांजरिक आँखि मे निन्न कतए? ओकरा क्षण-क्षण आशंका होइक जे पँवार कोनो विशेष षड़यन्त्र ने कए रहल हो । एतेक श्रम ओ साधना सँ प्राप्त एहन दिव्य-वर छिना ने जाय । सोनिका कें देखि ओ पछवा बसात मे कड़ड़ीक भालरि जकाँ काँपि गेलि ।

ओ लोरिक कें जगबए चाहलक । ''पुरुषक जाति'' ओ मोने-मोने विचारलक—''जानि ने जानि ओ पहिले राति मे जगौलाक कोन अर्थ बूझत । कतहुँ हँसी ने कऽ बैसय जे कते उताहुल........ । ''

दोसरे क्षण ओकरा लोरिक कें जगबक उपाय फुरि गेलैक । ओ अपन एकटा केशक लट ओकरा नाकक पूड़ा लग धए देलकैक । लोरिकक नाक मे सुरसुरी लागल आ' ओ उठि कऽ बैसि गेल ।

सोनिका ओकरा पर तड़पल आ' लोरिक फानि कऽ ठाढ़ भए गेल । लोरिक निहत्था छल आ सोनिकाक हाथ मे तरुआरि । कनियो अवसर भेटला पर ओ आघात कए सकैत छलैक ।

लोरिक ओकरा सँ भिड़ि गेल आ' ओकरा तेना कऽ झकझोरि देलकैक जे ओकरा हाथ सँ तरुआरि उछटि कऽ खसि पड़लैक ।

लोरिक कोन मे धएल अपना खंडा दिस तकलक ।

ओ सोनिका कें ठेलैत अपन खंडा लेबए चाहैत छल आ सोनिका ओकरा बेबस करैत अपन तरुआरि उठबए चाहैत छल ।

''कड़ ऽ ड़ ऽ ड़ ऽ '' वार हिललइ । मनिका, गैंचा माछ जकाँ ससरैत भीतर आबक पयास कए रहल छल । मांजरि सन्न रहि गेलि । लोरिक अकुला उठल —''आगन्तुक मल्ल अबस्से तरुआरि उठा कऽ पाछू सँ आघात करत । आह कहुना खंडा हाथ आबि जइतए ।'' मनिकाक आधा धड़ आब भीतर लटकि रहल छलैक ।

ओ मांजरि दिस तकलक । जेना कुसुम-कली आशक ठारि सँ टूटि कए,

वेदनाक रौद मे झूर-झमान भए रहल हो । ''ओहो कहुना जौं ई खंडा उठा कए, हाथ मे दए दीतए । किन्तु जाहि खंडा कें बड़-बड़ दुर्धर्ष योद्धा नहि हिला पबैत अछि तकरा ई सद्यः प्रस्फुटित प्रसून कोना उठा सकत ?''

सहसा जेना बिजुरी छिटकलैक । आकाश-तारा-पटोर लहरेलैक । माणिक कंचुकी झलकलैक । रतन-नथिया हिललैक । मणिमय कुण्डल झुललैक आ' बज्र चूड़ी (हीरक-चूड़ी) झनझनेलइ । माँजरि कखन पलङ्ग सँ उतरलइ आ' कखन एक्के हाथे ओहि विकराल खंडा कें उठा कए नीलकमल जकाँ लोरिकक हाथ मे दए देलकैक से लोरिको ने नीक-जकाँ देखि सकलइ ।

''छप्प'' सोनिकाक मूड़ी एक्के आघात मे बेल जकाँ ओंघड़ा गेलैक । दोसर आघात मे मणिकाक आधा धड़ भीतर आ' आधा बाहर खसि पड़ल ।

लोरिक, मांजरिक सतीत्वक सराहना कएलक जकरा बल पर ओ सुकुमारि ओहन विकराल खंडा कें उठा नेने छलि ।

मांजरि घोघक तरेतर मुस्कुराइल से लोरिक कें बुझबा जोकर भए गेलइ । ओ हर्षोन्मत्त भए उठल आ' एक हाथ मे खंडा नेनहि दोसर हाथ सँ मांजरि कें आलिङ्गनपाश मे आबद्ध करैत सोनिकाक शव पर नृत्य करए लागल । जखन ओ सोनिकाक मुण्ड दिस ताकए तऽ आँखि सँ प्रलय छिटकैक आ' जखन ओ मांजरिक मुखमण्डल हेरय तऽ नयन मे प्रणय मधुआइक ।

बड़ करुणामयी बाला छलि मांजरि । ओ तीनटा अनाथक पालन केने छलि । एकटा खसल अण्डा कतहुँ भेटि गेल छलैक । ओकरा यत्नपूर्वक रखलक । ओहि सँ बहरेलैक बाजिल कौआ । बड़ दुलारू । सोना सँ ओकर चांगुर आ चंचु मढ़ैल छलैक । सोनाक सिक्कड़ि सँ बान्हल रहैत छल आ चानीक कटोरी मे दूध-भात खाइत । दोसर छलि टुअरि ''लुरकी''। बड़ बलशालिनी आ' पौरुषेय । ओकरा ओ धरम-बहिन कहैक आ' तेसर छल टुअर नङरा छौड़ा नन्हुआं, ओ गायक चरबाही करैत छल ।

तखनाहे कोबर घरक समीप सँ नन्हुआंक आर्त्त स्वर गुँजलइ—''अरे वीर पाहुन, जौं सरिपहुँ आँहाँ मायक दूध पीलहुँ अछि तऽ हमरा संग चलू । खरिका-बथानक गोथर सँ उघरा-पँवार महरक सभटा गाय अपहरण कए नेने जा रहल छैक ।''

लोरिक एहि हाक कें कोना सहि सकैत छल । ओ मांजरि कें उठा कए पलङ्ग पर सुता दैलकैक आ' स्वयं बड़े वेग सँ कोबर सँ बहराएल ।

नन्हुआं कहलकैक— "सरिपहुँ वीर छी तऽ हमरा पकड़ू तऽ ।" ओ डेढ़ टाँग पर खड़िका बथान दिस भागल ।

कतबो जोर केला पर लोरिक ओकरा नहि पकड़ि सकल । किन्तु ओकरा पीठहि पर खरिका बथान जुमि गेल ।

नन्हुआं उधरा-पँवारक बात मे आबि गेल ।

"तड़ड़ड़ऽ धम्म । तड़ड़ड़ऽ धम्म ।" पँवारक रणवाद्य बाजि उठल । कमला तट पर लोरिक ओकर बहुसंख्यक सैनिक सँ घेरा गेल । पँवार स्वयं रण-संचालन करए लागल ।

लोरिक एम्हर-ओम्हर तकलक तऽ आगू मे धारक किछेर पर ओकरा एकटा फाट देखि पड़लैक। ओ ओहि मे धसि कए बैसि गेल। ओकरा पर चारू दिस सँ तीरक वर्षा भए रहल छलैक। अगिनियाँ बाण सँ ज्वाला छिटकि रहल छलैक। कज्जलगिरि गरजैत बढ़ि रहल छल। ओ लग एलइ कि लोरिक लपकि कऽ खण्डा सँ ओकर सूँढ छपटि लेलकैक। ओ अरा कऽ खसल। पँवार ओहि पर सँ कूदि कए एक दिस भागल।

कनिये काल मे तीरक झड़ी खतम भए गेलइ । पँवार कहिओ अपना तरकशक सभटा तीर नहीं खर्च कऽइ छल । एकटा धरि अबस्से राखि लइ छल । तैं ओकरा तरकस मे मात्र एक्केटा तीर बाँचल रहलइ ।

आब बहराएल लोरिक । बकरीक झुंड मे बाघ जकाँ ओ विचरण करए लागल । मुरइ जकाँ पँवारक सैनिक कटए लागल । त्राहि-त्राहि मचि गेल ।

पँवार गमलक जे, जौं लोरिकक मस्तकक निशान कए तीर मारइ छी तऽ लोरिक ओकरा अनायासे अपना खंडा सँ रोकि लेत । ओ भूमि पर सूति कए लोरिकक जाँघ मे तीर मारलक । तीर लोरिकक जाँघ मे धसि गेलइ । शोणितक फुहार चलए लगलइ । किन्तु लोरिकक वेग नहि थम्हलैक । सैनिक, हाथी आ प्रतिष्ठा गमा कऽ पँवार ओहि ठाम सँ भागि गेल ।

लोरिक नन्हुआं कें सभटा गाय समेटि लेबए कहलकैक । ओ घुरि कऽ कोबर आएल । माँजरिक अरुण कपोल सँ अश्रुधारा बहि रहल छलैक । लोरिक

कें देखितहि ओ प्रातःकालीन कमलिनी जकाँ उत्फुल्ल भए उठलि । किन्तु जखन ओ लोरिकक जाँघ मे धसल तीर देखलक तऽ पुनः झमान भए गेलि ।

ओ आँखि मुनि कए दुर्गा कें स्मरण केलक आ' अनायासे लोरिकक जाँघ सँ तीर झीकि कए बाहर कए लेलक । पुनः अपना मांगक सिन्दुर अपना कनगुरिया आंगुर पर लए लोरिकक क्षत कें भरैत प्रार्थना कएलक— ''माँ भगवती जौं हम सती छी तऽ हमरा सोहाग कें अचल राखू ।''

लोरिकक जाँघक रक्तधार बन्न भऽ गेलइ । पीड़ा बिला गेलइ । ओ स्वस्थ भए गेल । मांजरिक पानि पीलक आ' ओछौन पर ओलरि कए लगलै फोंफ काटए लागल । मांजरि ओकरा बियनि डोलबैत रहलैक ।

ओमहर फरिच्छ भेलइ । कौआ डकलइ । मांजरिक धरम-बहिन कुमारि लुरकी आंगन नीपए चललि । रातुक बज्र-समांठ देखि कए ओ हर्षित भए उठलि। तकरा ओ फुलहत्था जकाँ उठा कए अपना काज लेल राखि लेलक। जखन ओ आँगन नीपए लागलि तऽ कोबर घर सँ बहल रक्तधार कें देखि कए चित्कार कए उठलि.......''हा भगवती, मांजरिक सोहाग लुटि गेलैक ।''

तखनहि वेग सँ बहरेलैक मांजरि आ लुरकीक ठोर पर अपन पाणिपल्लव रखैत कहलकैक— ''चुप्पे रह । जो अपना पाहुन कें दू हाथ सेवा कए दहुन । बड़ ठहियैल छथुन्ह आ' जगला पर नहा-धोआ दीअहुन । आ हे, सोनिका आ मनिकाक शव जरलाहा पँवार के सनेस पठा दही ।''

* * * * * * * * * * * * *

महरक घर हर्षक बाजन गर्द-मिसान करैत रहल । कुब्वे एत्ते खेलक जे ओकर शरीर हरिया गेलैक । ओ कहए लगलैक जे ओकर जुवानी घूरि एलैक अछि । बरियातीक विदाईक क्षण समीप आबि गेलइ तैं महर सावर के कहलकैक— ''हाथ मे ठेंगा लऽ कऽ जत्ते दूर तक फेकि सकब तते दूर तकक गाय आँहाँक भेल ।''

सावर जुमा कए डंटा फेकलक । डंटा बड़ी दूर पर खसलइ । ओ सहस्र-सहस्र गाय कें हाँकए चलि पड़ल । हजार-हजार भार आ' बड़दगाड़ी मे भरि कऽ अन्न, वस्त्र, स्वर्ण खंड आ' रतन-पेटार सभ साँठल गेल ।

मायक कहला पर मांजरि, भुल्ली-गाय, सोनाक बारन्हि आ' बाजिल

कौआ मांगि लेलक । नव-वस्त्र सँ सज्जित कुब्बे बड़ विकराल बूझि पड़ैक । बरियाती मगन होइत घूरल ।

बेटी-विदाक करुण क्षण । माय सँ बिछुड़ैत मांजरिक कोंढ़-करेज खँघरल जा रहल छलइ। सखी सभ सँ भेटइ लेल पालकी कें रहि-रहि कए बिलमए पड़इ । लोरिकक विशाल शरीर कोनो पालकी मे नहि समा सकलइ । तैं ओ हाथ मे खंडा नेने माँजरिक पालकीक पाछू-पाछू चलल । पालकीक पार्श्व मे, हाथ मे बज्र समाठ नेने चलि रहलि छलि "लुरकी"।

बरियाती आगू बढ़ि गेलइ ।

गामक बाहर योगिनी कोसा मालिन जयमाला नेने ठाढ़ि छलि । ओ जयमाला हर्षध्वनिक बीच लोरिक कें अर्पित कएलक । ओकरा सात लक्ष स्वर्ण-मुद्रा देल गेलइ । तइयो ओ बाट छेकि कऽ मन्द-मन्द विहुँसिते रहलि ।

"आर की चाही ।" लोरिक पुछलकैक—"बाजू हे फूल-सुन्नरि, आहाँ कें कोना प्रसन्न करू ?"

"अइ शुभ क्षण मे, हमर जनम भरिक कमाई दूनू सूइया धुरा दीअ जे आँहाँ सावर आ' राजलक मुरेठा सँ बहार कए राखि नेने छी ।" मालिन अपना आँखि मे आसव भरि कऽ लोरिक दिस तकलक ।

लोरिक हँसल—"अहूँ एकटा काज करू। दू क्षण लेल अपना रूप पर फतिंगा बना कऽ जइ-जइ महापुरुष कें आँहाँ नग्न कए, माथ पर दीप राखि कऽ इजोत करैत छी तनिका सभ कें मुक्त कए दिऔन्ह। "

मालिन नतमस्तक होइत करबद्ध भए लोरिकक आज्ञा स्वीकार कएलक ।

लोरिक अपना मुरेठा मे खोंसल ओ दूनू सूइया, योगिनी कें घुरा देलकैक ।

योगिनी शत-शत आशीष दैत आ' पुष्पक वर्षा करैत ओहिठाम सँ चलि पड़लि ।

ओही क्षण लोरिक कें बड़ जोर पियास लगलैक ।.ओ पानि मङलकैक । चट दऽ पानि आनल गेल । जौं कि ओ ठोर सँ पानि लगौलक कि पँवार अपन बाकी बचल दुर्धर्ष योद्धा सभहिक संग हुंकार करैत जुमि गेल । आरआनऽ

वाली ललना सभ, पालकी सहित घेरा गेलीह । प्यासे लोरिक कें मोन नहि होइक जे ठोर सँ लोटा फराक करी । ओम्हर अस्त्र-झंकार कए उठलैक ।

लुरकी रणचंडीक अट्टहास कएलक ''छाक भरि जल पी लीअ पाहुन आ' जल पीबिते-पीबिते कनेक हमर समाठ-नृत्य देखिऔक जे हम कोना पँवार आ' ओकरा सैनिक कें बकाइन पीअबइ छियैक ।''

ओ वज्र मूसर घुमौलक । ओकर घघरा लहरऽ लगलइ। पँवारक सैनिकक कारी घटाक बीच ओ विद्युत्लता जकाँ छिटकए लागलि । चारूभर रक्त पिचकारी छूटए लगलैक । ओ सिंहिनी जकाँ गुम्हड़ैत जेम्हरहि बढ़ैक तेम्हरहि हाहाकार मचि जाइक । पँवारक गौरव संग ओकर सेना, पछवा हवा मे फलकल सिम्मरक रूई जकाँ उड़िया कए अस्तित्वहीन भए गेलैक ।

लोरिक भरि छाक पानि पीलक । सात घैल जल सठि गेल । आब पँवार स्वयं लुरकी सँ युद्ध कए रहल छल । लुरकी बेर-बेर पँवारक मस्तक पर प्रहार करैक किन्तु ओ रत्न-जटित अभेद किरीटक कारणें बचि-बचि जाइक ।

लोरिक खंडा उठौलक आ' खंडाक नोक सँ पँवारक किरीट नीचा खसा देलक। लुरकी ओ किरीट उठा कऽ लोरिकक माथ पर राखि देलकैक ।

पँवार अपना गढ़क दिस प्राण लऽ कऽ पड़ाएल । लोरिक ओकर पछोर धेलक । पालकीक सुरक्षाक हेतु, हाथ मे समांठ नेने लुरकी ओही ठाम ठाढ़ि रहि गेलि ।

गढ़क फाटक तक अबैत-अबैत लोरिक पँवार के पकड़ि कए ओकर मूड़ी छोपि लेलक । माथ पर पँवारक मुकुट रहैक तैं गढ़क प्रहरी सभ, फराके सँ हुनका पँवार बूझि, गढ़क फाटक खोलि देलक । लोरिक गढ़ मे प्रवेश केलक आ' पँवारक बाल-बच्चा ओ रानी कें अभय दान देलक । ओ रनिवास-काराक फाटक खोलि ओहि ठाम ढाठलि सात तूर सुन्नरि कें कारा-मुक्त कए देलक ।

कारा सँ दलक दल रूपसी सभ हर्षोन्मत्त भेलि बहराएलि । ओ सभ गीत गबैत लोरिक कें मधुर गारि देबए लागलि आ' जय-जयकार करए लागलि । रूपसीक दल लोरिक कें घेरने मांजरिक पालकी तक आएल ।

बाजावला सभ रणवाद्य कें सभदाउनिक रागिणी मे बदलि देलकैक । कोकिल कंठी सभहिक स्वर उठल—''बड़ रे यतन सों सियाजी कें पोसलहुँ सेहो रघुवंशी नेने जाए ।''

महायोद्धा लोरिकक आँखि सिनेह पानि कऽ बरिसय लागल ।

जनजन मे हिलोर उठि रहल छलइ । महा-अत्याचारी उग्रराक पँवार आब एहि संसार मे नहि छल ।

सुन्नरि सभ, रत्न-आभूषणक उपहार सँ मांजरिक पालकी भरि देलकैक । मांजरि ओकरा अपना सखी बहिनपाक बीच लुटबए लागलि ।

लोरिक सभ सँ बिदा लेलक । आगू-आगू, शत्रु-रक्त-रंजित सगांठ नेने लुरकी चललि। ओकरा कनहा पर बैसल छलइ, स्वर्ण-मंडित चरण-चंचुवला विशाल कौआ ''बाजिल'' तकरा पाछू छलैक रतन ओहार वला पालकी मे लाजवन्ती मांजरि ।

''हुम हुम हुम हुम'' कहार चलैक ''रुन झुन रुन झुन'' मांजरिक आभूषण बजैक आ' तकरा पाछू, हाथ मे अगिनखंडा नेने सिंह जकाँ झूमैत चलि रहल छल लोरिक ।

ओहि खंडा सँ एखनहुँ पँवारक रक्त चूबिये रहल छलइ ।

— o —

चोरीक चान

* * * * * *

सुगठित शरीर । उमड़ैत तारुण्य ओकर मोंछक श्यामल रेखा बनि गेल छलइ । भुजदंड सभ पर माछक सिरखार कसमसा उठल छलइ । मांगुर माछ सन छह-छह करैत आ' धोबियाक पाट सन चाकर वक्ष । ओ कछेरगर जुआन राजकुमार शिवधर अपना तम्बूकक सोझाँ मे उदास भाव सँ सूर्यास्त देखि रहल छल । ओकरा चारू कात ओकर एक लाख गाय चरि रहल छलइ ।

राजकुमारक जीवन मे एकटा बड़का उदासी उतरि आएल छलैक आ' ओकर सभटा प्रसन्नता जानि ने जानि कतए बिला गेल छलइ । ओ अपन महल-अटारी छोड़ि कऽ अही बोहा-बथान मे अपना गाय सभहिक बीच रहैत छल ।

एक दिस स्वर्ण सागर मे डूब देबए लेल चलि जाइत भुवन-भास्कर आ'

दोसर दिस क्षितिज कोर सँ ऊपर उठैत पूर्णमासीक चान । सोझाँ मे कोनो गौर सँ प्रणयरत ढेकरैत वृषभ । लगहि मे ऐंचैत-ऐंठैत बहैत देबहा-धार, राजकुमारक उदासी, झपसी लाधल अमावश्याक साँझ जकाँ अथाह होइत गेलइ ।

''झन झन झन झन'' लगहि मे कतहुँ नूपुर झंकार कए रहल छलइ । ओ चिहुँकि उठल । गायक एहि बथान मे नूपुरक झङ्कार कतए पाबी । देखइए तऽ आगुए दिस सँ एकटा अपूर्व रूपसी षोड़सी चलि अबैत । ओकर आभूषण, ओकर संगीतमय गतिक अनुसारें ताल सँ बाजि रहल छलइ । लगइ जेना ओकरा मुख-मण्डलक सोझां मे चान मलान भए रहल होइ ।

ओ लग एलइ तऽ शिवधर देखलक जे ओकरा एक हाथ मे सोनाक थारी छइ आ' दोसर हाथ मे सोनाक झारी ।

ओइ रूपसीक विन्दी सँ विद्युत्-प्रभा छिटकि रहल छलइ । अंग-अंग पर यौवन उल्लास उधिया रहल छलइ । ओकर झूलैत वेणी नागिनक भ्रम करबइ । ओकर शरीर उमंगक झोंका मे कांच करची जकाँ नितराइत शिवधरक लगीच एलइ तऽ शिवधर अवाक् रहि गेल । ओ सुन्नरि, सोनाक थारी आ' झारी एक दिस राखि देलकैक आ' अपन मणि-अलंकृत सुवासित मस्तक ओकरा चरण पर समर्पित कए देलकैक । शिवधरक पएर ओकरा अश्रुप्रवाह सँ भीजए लगलइ । शिवधर ओकरा उठा कऽ आर्द्र स्वर मे पुछलकैक—''हे महा-सुन्नरि, अाँहाँ के छिअहुँ ? आँहाँ पर कोन विपत्ति आएल अछि ?''

हाहाकार कए उठलि रूपसी—''हे भगवान आँहाँ पति भऽ कऽ नहि चीन्हि सकलहुँ हमरा । हम राजा सहदेवक बेटी आ' आँहाँक विवाहिता पत्नी चनैन छी ।''

''शुभे, आँहाँ एना कोना अएलहुँ ।'' राजकुमार चकित होइत पुछलकैक ।

''पहिने हमरा हाथ सँ भोजन कए लीअ स्वामी ।'' चनैन बाजलि आ' अजस्र सिनेह मे भरि कए सोनाक झारी सँ पतिक मुँह-हाथ धोऔलक आ' अपना सुगन्धित आँचर सँ मुँह पोछि देलकैक । पुनः ओकरा आसन पर बैसा कऽ , पाँच-प्रकार आ' पच्चीस व्यंजनवला थारी आगू मे राखि कए भोजन करौलकैक । हाथ-मुँह धोआ कऽ , अपना आँचरक खूँट सँ बान्हल सुवासित पान खोलि कए अपनहि सुकोमल हाथें ओकरा खुआ देलकैक ।

राजकुमारक हृदय जेना विदीर्ण होमए लगलइ । आँखि रहि-रहि कऽ डबडबा अबइ ।

''एना व्याकुल किये छी पतिदेव'' चनैन भीजल कंठ सँ पुछलकैक ।

''पहिने अहीं अपना आगमनक कारण कहू ।'' राजकुमारक प्रश्न छल ।

कानि देलक चनैन—''कारण पूछइ छी स्वामी, हे वैह देखिअउ, मत्त वृषभ कोना प्रणय आतुर गायक पाछू आकुल अछि । देबहाक धारा मे ओ राजहंस कत्ते सिनेहक संग अपना हंसिनीक ग्रीवा मे चंचु-आघात कए रहल अछि, लगक साहोड़क गाछ पर बैसल पंडुक दम्पति कोना अपना कलकुँजन सँ वातावरण मे मधु घोरि रहल अछि । तैयो आँहाँ हमरा एहिठाम आबक कारण पूछइ छी । एत्तेक दिन व्याह भेना भेल आँहाँ गौनाक नाम नहि लेलहुँ । आँहाँ भने ठमकल रहलहुँ किन्तु समय तऽ नहि ठमकल रहल । हम पूछए आएल छी जे हम कोन अपराधें उपेक्षिता भए रहल छी ?''

कानए लागल शिवधर—''आँहाँक कोनो अपराध नहि अछि राजकुमारी । हमहीं देवराज इन्द्रक दारुण अभिशाप सँ अभिशप्त छी । हमरा सन वीर्यशाली व्यक्ति, हम एक दिन मूत्र त्याग कए रहल छलहुँ । मूत्रक छिटका दूर-दूर तक उड़ि रहल छलइ । ओहि पथ सँ जाइत देवराज इन्द्र कें पड़ि गेलन्हि । क्रुद्ध भए कऽ बूँद आ' वीर्यक स्वामी देवराज हमरा श्राप दए कऽ हमर पौरुष हरण कए लेलन्हि । अही वेदना सँ दुखी भए कऽ हम, महल-अटारी, राज-पाट आ' सुख-ऐश्वर्य सभ त्यागि देल आ' गायक सेवा मे जीवन बिताबक निश्चय कएल अछि । बस सभ क्षण अहींक रूप-यौवनक चिन्ता सँ हमर अन्तर सागर जकाँ हाहाकार करैत रहैत अछि ।

''तखन हमर कोन बाट हएत? अइ कसमसाइत यौवन, उधिआइत उमंग आ' करेजक सात तह कें वेधैत, मनोजक मधुशर कें हम की करू ?'' मर्माहत स्वर मे चनैन कहलकैक ''चान कें देखि कए झरकी उठइ अछि । तप्पत बालु पर पड़ल पोठी माछ जकाँ तल्फैत सेज पर परात करइ छी । हमरा कहू जे हम की करू ?''

''सुनू कामिनी ।'' शिवधरक स्वर मे दृढ़ता आबि गेलैक—''हम नपुंसक भए गेलहुँ तैं बियाहक सात भामरि कें तोड़ैत हम आँहाँ के स्वस्ति दैत छी जे आँहाँ आइ सँ हमरा सँ मुक्त छी । हमर देल सिन्दूर के आब धोखरल बूझू ।

हम आँहाँक अइ दुर्लभ मानव-शरीर कें मात्र अपना सिन्दुरक रंगक अधिकारक बलें सुख विहीन नहि करऽ चाहैत छी । जाउ राजकुमारी, कोनो वीर सुपुरुषक प्रबल जांघक तऽर मे अपना यौवन आ' जीवन कें सार्थक करू।''

शिवधर कें लगलै जेना कोनो बड़का बोझ माथ पर सँ उतरि गेल हो । ओ सुखक साँस लैत चनैनक मस्तक कें बेरि-बेरि स्पर्शकए ओकरा शत-शत आशीष देलकैक जे ओकर जीवन सुखमय होउक ।

राजकुमारी खिन्न मने शिवधरक प्रशान्त मुखमण्डल कें तकलक आ' ओकर चरण स्पर्श कए ओहि ठाम सँ चलि पड़लि ।

जखन ओ अगौरा गामक लगीचक उपवन मे पहुँचलि तऽ दोसर सांझ बीति रहल छलैक आ' पूर्णिमाक चान दूध बरखा कए रहल छलइ । एतबहि मे पाछू सँ आवाज एलइ—''डम डम डमाक ।''

चिहुँकि उठलि चनैन । पाछू तकलक तऽ बंठा चमार, गरदनि मे बारह मोनक ढोल बन्हने चलि आबि रहल छल । ओ चनैन कें अपना दिस ताकहि लेल ढोल पर चोट ठोकने छल ।

चनैनक करेज कांपि गेलैक । कतहुँ ई बलिष्ठ पुरुष मर्यादाक सीमा भंग ने करए । भेबो केलइ सएह । बंठा आगू आबि कए चनैनक बाट छेकि लेलकैक आ' कहलकैक—''सुनू अए यौवनवती आइ एहि औसर पर अपन यौवन आ' हमरा जीवन कें नेहाल कए दिऔक । नहि मानव तऽ हम बलात् आँहाँक कोमल शरीर कें अपना भुजा मे कसि लेब ।''

चनैन पीपरक पात जकाँ काँपि गेलि । कत्तो कियो नहि देखए मे एलैक । चिकरनाइ अरण्य-रोदन होइतैक । ओ बुद्धि सँ काज लेलक आ' अपना मुस्कान कें अधिक मधुसिक्त करैत बाजलि—''आँहाँ सन मस्त गजराज कतए पाबी । मुदा पहिने किछु खुआउ ।''

ओ लगक एकटा अति उच्च तेतरिक गाछ दिस इशारा करैत कहलकैक—''रंग-रभस लेल तऽ सौंसे राति छइहे । पहिने फुनगी परक सुपक्क तेतरि तऽ खुआउ ।''

बंठा प्रफुल्ल भए उठल आ' अपना गरदनिक ढोल नीचा कऽ पटकलक । ढोलबजना काठी फेकलक । हबर-हबर कऽ जूता बाहर केलक आ' रेशमी पगड़ी उतारि कए भूमि पर रखलक । फेर की छल ओ तेतरिक गाछ पर चढ़ि

गेल, चढ़िते गेल, ओ तेतरिक एकटा घौरछा नोचा खसौलक । "कुक्क खट्टा" राजकुमारी बाजलि-"ऊपर जा कऽ सुपक्क तेतरि खसाउ । फुनगी परक ।"

बंठा फुनगी लग पहुँचि गेल । घौरछाक घौरछा तेतरि खसै लागल ।

चनैन ओकर जूता फटकी कऽ नुका देलकैक । ढोल-बजना कतौ आर बेसी दूर हँटा देलकैक आ' रेशमी पगड़ी एकटा झार तर नुका कए अपने हिरणी जकाँ वेग सँ भागि चललि ।

बंठा सोर पारलकइ —"राजकुमारी, फुनगी परक तेतरिक सुआद कहू ।" कोनो उतारा नहि ।

"सिसोहू, खूब सिसोहू तेतरि ।" ओ ऊपर सँ बाजल—" पाकल तेतरिक रस सँ भीजल ठोरक सुआद बड़ रंगगर रहतइ ।"

कोनो उतारा नहि ।

ओ निहुरि कए नीचा तकलक तऽ राजकुमारी निपत्ता । ओकर मधु-स्वप्न भंग भए गेलइ । ओ आकाश सँ धरती पर आबि गेल । घुकड़ी सन करेज जे छलइ, पगड़ीक मोह लागि गेलइ ।

ओ पगड़ी ताकए लागल । किछु क्षण मे पगड़ी भेटलइ तऽ जूताक ध्यान एलइ । एकटा भेटलइ तऽ दोसर नहि । दोसर भेटलइ तऽ ढोल-बजना लारानक फिकिर लगलैक । सभटा भेटए मे किछु बेसी विलम लागि गेलैक ।

ओ पगड़ी पहिरलक, पनही ऐंड़ियौलक, गरदनि मे ढोल टङलक आ' ढोल पर चोट देलकैक—"डमाक् डमाक् ।

ओ चनैनक पाछू उन्मत्त भैसा जकाँ दौड़ल ।

चनैन येह लै वैह ले भागलि-भागलि अपन गढ़ मे प्रवेश कए गेलि आ' गढ़क लौह फाटक बन्न करबा देलकैक ।

फाटक पर पहुँचि कऽ बंठाक मुँह अपन सन भए गेलैक । ओ पशु जकाँ क्रोधोन्मत्त भेल, फुफकारए आ' ढेकरए लागल । नहि किछु फुरैक तऽ अपना ढोल कें तड़ाक-तड़ाक डेंगबए लागए ।

ओ अपनहि क्रोध मे जड़ैत-पज़डैत अपना घर घुरि आएल ।

बड़ मनोरम सरोवर छलइ ओ । अगौरा गामक बीच मे । सौंसे गामक स्त्रीगण ओही सँ जल भरथि ।

बंठा चमार भोर होइते ओहि सरोवर पर जुमि गेल । बड़ क्रोध आ' पीड़ाक संग ओ रात्रि व्यतीत कएने छल । सहस्र-सहस्र सद्यः प्रस्फुटित कमल सँ सुरभित शीतल प्रातः पवनो ओकरा धुधुआइत हिया के शान्त नहि कए सकलइ ।

जे क्यो पानि भरए अबइ, बंठा कंकड़ मारि कए ओकर घैल फोड़ि दैक । सौंसे गाम मे पानिक बिना हाहाकार मचि गेलइ ।

पानि भरए एली मैया खुलैन तऽ ओकरा परबोधलनि-''कोन अनर्थ कए रहल छऽ बेटा । लोक अनका पानि भरि पियऽबैत अछि आ' तों एहन भेलह जे सौंसे गामक कंठ सुखौने जाइ छऽ ।''

बंठा कथी लेल सूनत । ओ खुलैन कें बात कहि बैसल आ' हुनको घैल कंकड़ मारि कए फोड़ि देलकन्हि । ओ कनैत-खीजैत घर एली आ' लोरिक कें सभटा तिरतान्त कहि सुनौलन्हि ।

लोरिक जखन सरोवर घाट पर आएल तऽ बंठा ओकरहुँ ललकारि देलकैक— ''बड़ एला है सम्बोधइवला । बड़ छौ तऽ चनैन के डेङ पकड़ि कए झीकि ला आ'' हमरा अंग लगा दे नहि तऽ सौंसे अगौरा गामके पानि बिनु मारि देबौक ।''

''तोरा माथ पर काल नचइ छौक ! जेना एकटा तोंहीं पुरुष छैं जे पानि बिनु लोक कें मारबिही । सौंसे अगौराक पुरुष जेना साड़िये पहिरने छैक ।'' लोरिक गुम्हड़ल ।

बंठा ताल ठोंकि कऽ लोरिक सँ भिड़ि गेल । एक्के आखाड़ाक खेलल मल्ल । एक दोसरक दाव-घात सँ सुपरिचित । तीन दिन तीन राति तक भिड़न्त होइत रहल । अन्त मे बंठाक मानसिक सन्तुलन अकछि गेलैक । ओ आखाड़ाक मर्यादा के विरुद्ध लोरिक पर ढोल-बजना लारनि सँ प्रहार करए लागल । ओ मदान्ध भए रहल छल ।

लोरिक अट्टहास केलक -''अखाड़ाक मर्यादा कें पहिने तोंही भंग कएले संगी, आब हमर कोनो दोष नहि ।''

ओ खँडा उठा कऽ बंठाक गुड़ी छोपि लेलक। चारू भर सँ हर्षक हिलकोर आबऽ लगलइ। राजमहल मे उत्सव मचए लागल। दल के दल स्त्रीगण सभ गीत गबैत उमड़ि उमड़ि जल भरए लेल चलि पड़ल।

राजकुमारी चनैन, हर्षक एहि अवसर पर एकटा पैघ भोजक आयोजन केलक। ओ अपना हाथें छप्पन भोग प्रस्तुत केलक आ' सौंसे अगौरा कें बजा लेलक। विजेता लोरिक सादर निमंत्रित कएल गेल।

लोरिक, राजल आ सावर, सतखंडा महलक आगू मे बइसाओल गेल। नाना प्रकारक भोज्य सामग्री परसल गेल।

लोरिक जौं कि कौर मुँह मे देलन्हि कि मुँह मे लट्टा खढ़क एकटा टुकड़ी अभरलन्हि। आक् थू। आक् थू।

बेर-बेर मुँह मे लट्टा खढ़क टुकड़ी। ''सप-सप सुप सुप'' चारू भर लोक कौर मारने जा रहल छल। लोरिक चिन्ता मे पड़ि गेल— लट्टा खढ़क एत्ते टुकड़ी ओकरहि पात मे कतए सँ आबि गेलैक। ओकरा बूझि पड़लइ जेना ऊपर सँ लट्टा खढ़क टुकड़ी खसि रहल हो। ओ से देखक लेल मूड़ी ऊपर उठौलक तऽ जेना सम्मोहित भेल मूड़ी उठौनहि रहि गेल।

सतखंडा महलक पहिल झरोखा पर बत्तीसो आभरण पहिरने आ' सोलहो सिङार केने राजकुमारी चनैन अपन समस्त मादकताक संगे मुस्कुरा रहलि छलि। आँखि ओकर खंजनि भए रहल छलैक। सुगबा नाक अधर-बिम्ब पर झुकल छलइ। लोरिक कें लगलइ जेना झरोखा पर सँ चान नीचा दिस लबि गेल होइ। तकिते रहि गेल। पलो ने खसइ।

सावर के भेलैक जे लोरिक कें गरा तऽ ने लागि गेल छैक। ओ लोरिकक घुरसूर पर पाँच मुक्का हुमचि कए मारलक।

लोरिक टस सँ मस नहि भेल। ओकरा बकौर लागले रहलइ। जहिना के तहिना रहि गेल। राजल एक बेर तकलक आ पुनः सावर दिस ताकि कए भभा कऽ हँसि देलक—'' अबूझ अनाडी नहितन। रे सावर, कने होस कर। लोरिक त्रियावाण सँ आहत भए रहल छौ। ओकरा सुधि-बुधि कतऽ ?''

लोरिक लेखें धनिसन। पंच सभ छप्पन भोग खाए मे बेसुध छल आ' ओ चनैनक रूपसुधा पान करए मे तन्मय।

* * * * * * * * * * * * *

लोरिक कें राज-महल सँ कतहु भेट नहि छलैक । पनिहारिनिक संकेतक अनुसारे चनैनक ''अनुराग-महल'' लग पहुँचल । अमावश्याक काजर घोरल रातुक दू पहर बीति चुकल छलइ । ओकरा हाथ मे रस्सीक भीड़ा छलैक । ओ एकटा निश्चित झरोखा पर रस्साक एक छोर हाथ मे राखि कए दोसर छोर फेकलकै । रस्सा घूरि एलइ ।

एक, दू, तीन, चारि लोरिक रस्सा फेकैत गेल आ' रस्सा घुरैत गेलइ । निराश लोरिक घूरए पर भेल तऽ ऊपर क्यो जेना मधुर स्वर मे कठखोंखी केलकैक । लगइ जेना कोनो सोनाक घंटी रनरना उठलइ ।

ओ साहस कए एक बेर आर रस्सा फेकलक । अइबेर रस्साक छोर दृढ़ता सँ अँटकि गेलइ । लोरिक झिट्टीमारि कए जँचलक तऽ रस्सी जेना ऊपर कोनो स्तम्भ सँ बन्हा गेल होइ ।

ओ कांखतर खंडा दाबि कऽ कले-बले ऊपर चढ़ि गेल । ऊपर जा कऽ ओ रस्सीक निचला कोर झीकि लेलक ।

ऊपर छलैक चनैनक कक्ष । पलंग पर सुकोमल शय्या । शय्या पर भरि ठेहुन कऽ फूल सजौल । चारू भर चानन, चोआ आ' अरगजाक सुगन्धि उड़िआइत । माणिक-स्तम्भ पंक्तिबद्ध भेल जगमग करैत । ताहि पर स्वर्ण-दीपाधार सभ पर सुगन्धित तेल वला दीप सभहिक जरैत बाती, एक सँ सहस्र बनि कए ओइ स्तम्भ सभ मे प्रतिबिम्बित होइत । जहाँ-तहाँ सुदर्शन ताख सभ पर मेवा-मिष्ठान्न गांगी-यमुनी थार सभ मे राखल ।

किन्तु कक्ष शून्य छलैक । लोरिक किछु क्षण स्तब्ध रहिगेल आ' पुनः अकुला उठल ।

कोम्हरहुँ सँ खिलखिला कऽ हँसीक ध्वनि एलैक । ओ चारू कात दृष्टि खिड़ौलक तऽ कतहु कियो नहि । सहसा ओकर दृष्टि सोझांक भीत सं सटल चनैन पर पड़लइ । ओ ओकरा पकड़क लेल आकुल हाथ बढ़ौलक । किन्तु आह, ई तऽ एकटा दीर्घाकार दर्पण छलैक जाहि मे चनैनक छबि प्रतिबिम्बित भए रहल छलइ ।

पुनः हँसीक स्वर । लोरिक कें बेसी अकुलैल देखि समक्ष आएल चनैन । मादक सिंगार केने । मनोहारी, रत्नमालाक झालरि वला आंगी, अगबे हीरा झमकारल आंचर । हँसइ तऽ जेना दामिनि दमकि उठइ । हंसक टुम्की चालि सँ चलैत । तकइ तऽ लगइ जेना करेज सालने जाइत हो ।

ओ कृत्रिम तामसक संग भौं कें बंकिम करैत पुछलकैक-''आँहाँ के छी ? आँहाँ के कें बजौलक ? के बाट देलक ? एत्ती राति कऽ आँहाँ एकटा ललनाक कक्ष मे कियैक एलहुँ ? आँहाँ संग के-के अछि, की-की अछि ?''

लोरिक उत्तर देलकैक-''हम तरुण छी । हमरा आँहाँक संकेत बजौलक । एकटा यौवनवतीक आतुरता बाट देलक । मिलनाकुल प्राण कें अन्हरिये रातुक भरोस रहैत छैक । हमरा संग मे हमर शौर्य अछि, आँहाँक प्रणय-निमन्त्रणक ज्वाला अछि आ' अछि चिर-संगी खंडा ।''

लोरिक चनैन दिस बढ़ल कि चनैन हिरिणी जकाँ पार । लोरिक पछोर धैलक तऽ पुनः एकटा मनोहारी कक्ष भेटलैक । किन्तु चनैन निपत्ता । क्रुद्ध लोरिक पहिला कक्ष मे घुरि आएल आ' घुरि जाए लेल अपन खंडा उठा लेलक ।

तखनहि पान-फूल नेने आगुए सँ बाट छेक कए ठाढ़ि भेलि चनैन । ओ सकरुण स्वर मे बाजलि-''गाय आतुरो रहइ छइ, तऽ हनछिन-हनछिन करइ छइ, भगइ छइ, दौड़इ छइ, तैं की सांढ़ ओकरा छोड़ि कए चलि जाइ छइ ! आँहाँ कहेन पुरुष छी जे एक्के क्षण मे टिरूसि कए विदा भेलौंह ।''

ओ लोरिकक गरदनि मे जयमाला पहिरा देलकैक आ' अपनहि हाथे गुआ पान खुआ देलकैक । लोरिक ओकरा अपना बाहुपाश मे भरि लेलकैक ।

तँहिया सँ चनैन आ' लोरिकक रंग-विरंगक हास-विलास, प्रणय-प्रेम आ' अभिसार-मिलन चलि पड़ल । वन-उपवन मे, धार-सरोवर मे, इजोरिया मे अन्हरिया मे ओ दुनू एक दोसर पर लुटैत रहल, रभसैत रहल, हुलसैत रहल, निदराइत रहल आ' छिरिआइत रहल ।

लहसुनक दुर्गन्ध आ' पर तिरिया संग विहार कतबो नुकेला सँ नहि नुकाइ छइ ।

घर-घर मे कनफुसकी होमय लगलइ । चनैन कें देखितहि ललना समाजक मुस्कान कुटिल भए जाइक । लोरिक लग कियो-कियो बाजि दइ, सत-खंडा महल दिस तकनिहारक खंडाक धार कें मुरक्षैत कै क्षण लगतैक ?

एक राति चनैन लोरिक कें कहलकैक—''लोकक अनसी-मनसी आब नहि सहल जाइ अछि । चलू, एहिठाम सँ कतहुँ दूर चलू, एना चोरिया-नुकिया सँ कतहुँ मोन भरइ । जी लुलुऐले रहि जाइए । तेहन ठाम चलू जतए एकेठाम

रहि सकी । हम अपन रतन-पेटार लए लइ छी ओहि मे रतन आ' वस्त्र भरल रहत । आँहाँक हाथ मे खंडा रहत जाहि सँ हम सभ सुरक्षित रहब ।''

लोरिक प्रफुल्ल भए उठल— ''हमरा मोनक बात कहल प्रिये । हमर खंडा अत्याचारी लोकक रक्तक पियासल अछि । आँहाँक रूपक दीपशिखा पर अनाचारी सभ जखन फतिंगा बनत तऽ हमरा खंडाक धारक धधरा मे झरकि-झरकि मरत । नव-नव अभियान लेल हमरो मोन कसमसाइत रहैत अछि । लोको देखौक जे लोरिकक खंडाक धार मुरछि गेलइ कि चमकि उठलइ । मांजरि एखन हमरा विलासक जोकर नहिं छथि । अत्याचारी पँवारक दृष्टिक डरें बड़ अल्प बयस मे हुनक बियाह भेलन्हि । हम बारह बरिष पर घूरि कए अगौरा गाम आँहाँ कें नेने मांजरिक संग जीवन व्यतीत करए लेल आयब । चलू ताबत एहिठास सँ निकसि चली ।

आ तखन एक राति,

जखन अन्हार मे अपनो हाथ ने देखाइ दए रहल छलइ आ मेघ घटाटोप केने चल आबि रहल छलइ, लोरिक, चनैनक संग अनुराग-महल सँ बहार भेल ।

आगू आगू चनैन, माथ पर रतन-पेटार नेने । पाछू-पाछू लोरिक, चमकक डर सँ अपन खंडा अपना कांख तर दबने ।

तखनहि ठनकि उठल बारू-चौकीदार । चौदह कोस आगौरा-गामक निशीथ कें कम्पायमान करैत । ओकरा डरे चोर-चहार बोन झार मे नुका जाइक । ओ नाग जकाँ ठनकइ, आ बाघ जकाँ गुम्हड़इ ।

ओ भाला उठा कए आगुए सँ बाट टेक लेलक । सोझां भेलइ लोरिक । बारू ललकारा देलकैक........ 'बड़ अन्हेर कए रहल छै मिता लोरिक । राजा सहदेवक सर्वश्रेष्ठ रतन राजकुमारी चनैन कें चोरौने जा रहल छै । सेहो हमरहि पहरा मे । परम चंडाल छइ राजा सहदेव, भोर होइते बाल-बच्चा सहित हमरा भकरी झोंका देतैक । तइ सँ नीक जे आबहु घूरि जो नहि तऽ लड़ाइये ले हमरा संग ।''

''घुरनाइ असम्भव अछि मिता'' लोरिक बाजल- ''आ' तोरा संग युद्धक आवाज सँ राजा आ गौवा जागि जेतइ । तखन व्यर्थ कतोक निर्दोषक लहू बहतइ । राजकुमारी अपना नपुँसक पतिक आज्ञा सँ ओकरा सँ सम्बन्ध विच्छेद कएलक आ' तखन सँ हमरा अंक लागलि अछि । ओकरा आश्रय नहि देनाइ

हमरा पौरुषहीनताक बात हैत । मात्र लोकक व्यर्थ अपवादक कनफूसी आ चर्चा-बर्चा सँ बाँचए लेल बाहर जा रहल छी । असल उदेश अछि अत्याचारी राजा सभ सँ लोक कें मुक्त केनाइ । जखन विजेता भेल चनैनक संग बारह-बरिषक उपरान्त घूरब ता तक लोक अइ चर्चा-बर्चा कें पचा गेल रहतैक ।''

''तखन हमर कोन बाट हैत ?'' बारू पुछलकैक । लोरक कहलकैक ''न्यौरीगढ़क प्रचण्ड प्रतापी राजा हरबा-बरबा तोरा कैक बेर अपन पहरू-प्रधान बनबक लेल बजौलकौक । तों नहि गेलही । तों अपना बाल-बच्चा आ' पत्नी संग एखनहि अगौरा छोड़ि कऽ न्यौरीगढ़ लेल विदा भए जो । ओही ठाम सुरक्षित रहमे । एक ने एक दिन ओइ भीषण अत्याचारी राजा कें क्षएमान करबे-करबैक आ' हथौड़ीक बनिसार सँ वीर सभहिक उद्धार करबे-करबैक ताहि दिन तोरहु नेहाल कए देबौक ।

बारू लोरिकक बाट छोड़ि देलकैक आ' लोरिक ओकरा करेज सँ लगा कए विदा कए देलकैक ।

लोरिक आ' चनैन बढ़ले गेल । दोसर दिन ओ सभ हरदी थान पहुँचल । सांझ पड़ल जाइत छलड़ । समीपे मे भगवती थान छलइ । ओ सभ स्नान कए भगवतीक पूजा केलक ।

ओहिठाम सँ लगले सोमन साहु बनियाक घर-छलैक । चनैन, स्वर्ण-खंड लए कऽ, सोमन-साहुक ओहिठाम सँ भोजन सामग्री कीनय गेलि तऽ ओकर सौन्दर्य देखि कए, लोक कें तराटक लागि गेलइ ।

सोमन साहु ओकरा सभ कें रहक लेल अपन एकटा बड़का हवेली देलकैक । दू-चारि दिनक उपरान्त चनैन कें नह कटवाबए लेल नौआक काज पड़लइ ।

ओहिठामक राजा मोचनिक राजधानी कनिये दूर पर श्रीनगर गढ़ मे छलैक । ओकर एकटा मुँहलगुआ छलइ ठिठरा नौआ । कौआ सन लुक्का, गीदर सन चतुर आ' मुँहक बड़ मोहनिया । लोरिक कें ओकरा सँ भेट भेलइ आ चनैनक नह काटए लेल ओकरहि बजौने आएल ।

ओ चनैनक नह काटए लागल । चनैनक नह एना बूझि पड़इ जेना कमल-पुष्पक कोर पर चन्द्रमणि जड़ल हो । ओ नह काटि कए कनडेरिये चनैनक मुँह दिस तकलक तऽ ओकरा सौन्दर्य सँ से चकचोन्ही लगलइ जे मूर्च्छित भए कऽ खसल ।

चनैन शीतल जलक छिट्टा मारि कए ओकरा होस मे अनलक। के मांगइए नह कटाइ। ओ छूटल तीर जकाँ पड़ाएल आ' अपसियाँत भेल राजा मोचनिक सम्मुख उपस्थित भेल।

''हे राजा,'' ओ कहलकैक—''आँहाँक राज मे कियो एक गोटे कतहुँ सँ, एकटा चान चोरा कए अनलक अछि। ओकर सौन्दर्य कमल फूलक छटा कें झमान करइ छइ। जानैथ बाबा बैजनाथ, आँहाँक सातो रानी ओकर तरबा कें फेकल धोअनिक बरोबरि नहिं भए सकैत छथि।''

राजाक जी चटपट करए लगलइ। ओ हदरल स्वर मे कहलकैक— ''तऽ झट दए ओकर डेङ पकड़ि कए झीकि आनह आ' ओकरा सरकारी रत्न घोषित करह।''

''बड़ भीड़ छैक।'' ठिठरा फुसफुसैल—''ओकर पुरुष महायोद्धा छैक। कौशल सँ काज लीअ। ओकरा सम्मुख ठाढ़ो भेनाइ केहन-केहन लेल कठिन छैक।''

राजा कें सात सौ मल्लक सेना छलन्हि। सेनापति छलैक महामल्ल गज-भीमल। प्रत्येक मल्ल प्रतिदिन एकटा कऽ छागर, सात घैल दूध आ' एक हांड़ी घी, भात-दालिक अतिरिक्त चाटि जाइत छलैक। ओ सभ श्रीनगर गढ़ सँ सात-कोस हँटि कऽ गेरुला आखाड़ा पर निवास करइ छल आ' ओहीठाम डंड-बैसक चुकबइ छल।

ठिठरा राजा कें सलाह देलकैक— ''लोरिक कें एकटा चिट्ठी दियौक गज-भीमल कें पहुँचा टेबक लेल। ओहि मे गजभीमल कें लीखि दियौक जे लोरिकक मूड़ी काटि कए पठा दिअए।''

''तखन फेर ?'' राजा प्रसन्न होइत पुछलकैक। ''हाहाहाहा'' ठिठरा अपन बतीसी बाहर कलक —''तखन ओहि परीक सुवासित केश पकड़ि ओकरा झीकि आनब दरबार मे। अपन पुरुषक बेलमुँड़ जखन ओ चीन्हि लेत तऽ सोझे सरकारक शय्या पर ओकरा पहुँचा देबैक।''

राजा मगन होइत आज्ञा देलकैक- '' शिघ्रे ओइ रूपवतीक योद्धा पुरुष कें हमरा समक्ष लए आनह। ता गजभीमलक नामे चिट्ठी प्रस्तुत रहतैक।

ठिठरा लोरिक कें बजबक लेल हुलकल बिदा भेल।

* * * * * * * * * * * * *

चनैन चिट्ठी पढ़इ आ' भभा-भभा हँसइ। ओकर हँसी तोड़े ने लइ। निरक्षर भट्टाचार्य लोरिक कें चनैनक हँसी पर पित् लहरइ।

''कहलकैक जे तिरियाक जाति। बजबो करू ने जे की बात छैक।'' ओ कुन्हरल स्वर मे पुछलकैक।

''राजा मोचनि, एहि पत्र द्वारा अपना सेनापति, महा-महा गजभीमल जी कें आज्ञा देलथिन्ह अछि जे-''पत्रवाहक लोरिकक महासुन्नरि पर हमर जी लुबुधि गेल अछि तैं चिट्ठी देखतहि लोरिकक मस्तक छप् सँ काटि कए हमरा उपहार पठा दीअ जे हम ओहि सुन्नरि कें डेङ पकड़ि सरकार लगा सकी।'' चनैन कहलकैक— ''आँहाँ गजभीमलक मूड़ अबस्से नेने आएब जे हम मखानक पात सँ ओहि मोचनियाक मुँह चिक्कन कए दीअइ।''

लोरिक हर्षे उत्फुल्ल भए उठल—''तखन तऽ लड़ाइक शुभक्षण आबि रहल छैक किने ? झट दऽ भानस-भात करू। हमरा पगड़ी बान्हि दीअ। जोत्तोरी के, हमहूँ कहियैक जे एत्ते लोक कें रहैत, हमरा सन नवागन्तुक कें कियैक एत्ते आदर-सत्कार कए चिट्ठी पहुँचाबए लेल कहैत अछि। दुर्गा मैया हेरलन्हि। युद्धक स्वर्ण-अवसर भेटल तखन की छियैक।''

''आँहाँ तऽ छी भारी गोबर-गणेश।'' चनैन कहलकैक-''सवारी लेल एकटा घोड़ा ने कियैक मांगि लेलहुँ जे साधारण दूत जकाँ पएरे हुलकल जाएब। हम एम्हर भानस-भात करइ छी ता आँहाँ राजा सँ नीक घोड़ा माँगि लाउ।''

लोरिक मोचनि सँ घोडा मांगए गेलइ तऽ मोचनि कहलकैक- ''हमरा सात सँ टांघन मे सँ जे पसिन्न हो आँहाँ प्रसन्न पूर्वक लए जाउ।''

लोरिक एकटा खूब मोटगर-डँटगर घोड़ा पसिन्न कएलक आ' नेने चलि आएल।

ओइ घोड़ा कें देखितहि चनैन फुफकारि उठल- ''महिषक चरवाह कतहुँ घोड़ाक मरम बूझे ?''

ओ एक मुक्का घोड़ाक पीठ पर कसि देलकैक कि घोड़ा लुद दऽ बैसि गेलइ आ हकमए लगलइ।

चनैन बाजलि-''एकर माय एकरा जन्म देबए काल मे मरि गेल हेतैक। एकर अश्वपाल एकरा गाय-महिषिक दूध पर पालने हेतैक। तैं ई मोटा कऽ भोकना-बिलाड़ भेल अछि।''

लोरिक दोसर घोड़ा मांगि अनलक । बेस कलसगर ।

ओहो चनैनक एक्के मुक्का मे लिद्दि छोड़ए लागल । ओकरा मुँह सँ गाउज-पोटा चलए लगलइ ।

लोरिक अकछा कऽ कहलकैक-''हे पोकमणि, बड़ भेलौं अछि तऽ अपनहि एकटा पसिन्न कए आनू ।''

उठि बिदा भेलि चनैन । ओ राजधानी दिस नहि जा कऽ राजाक बाध दिस बिदा भेलि जाहि ठाम राजाक सात सौ अश्वपाल फराक-फराक अपना-अपना अधीनक घोड़ा लेल घास छीलि रहल छल ।

सभ प्रसन्न छल आ' हरित दुर्बा छीलि रहल छल किन्तु ओहि मे सँ एकटा कननमुँह भेल, सुखैल-जरल दूभि खखोरि रहल छल ।

चनैन ओकरहि समक्ष जा कऽ ठाढ़ भेलि ।

ओ ओइ अश्वपाल सँ पुछलकैक— ''तोरा कोन आंती उठलौक जे खपरभुज्जा घास छीलइ छैं । कोन विपत्ति पड़लौ जे आँखि मे नोर भरल छौक ।''

असोथाह कानए लागल अश्वपाल—- ''सभहिक घोड़ा कें सवारी भेटइ छैक आ' ओकर अश्वपाल कें उछाहीक पैसा-कौड़ी । हमर घोड़ा तेहन भयंकर छइ जे अइ धरती पर के जनमल अछि जे ओकर पीठ छूबि लेत । जहिया खुजि जाइ छैक नगर मे दू-चारि टा खून कए दइ छइ । ओ तड़हरा मे बान्हल रहइ छइ । झटहा-फेंकि कऽ ओकरा घास दइ छिअइ आ' करीन में भरि कए पानि । प्राणो बाँचल जाइए सैह एक लाख ।''

चनैन ओकरा पाँच टा स्वर्णमुद्रा देलकैक आ' कहलकैक -''चल देखा दे ओइ घोड़ा कें । राजाक आज्ञा छैक ।''

अश्वपाल, चनैन कें ओहि ठाम लए गेलैक जाहिठाम ओ घोड़ा तड़हरा मे बान्हल छलैक । ओकरा मुँह मे तेहरा-लगाम भरल छलइ । ओ फराके सँ चनैन कें कहलकैक-''वैह छैक अजोध कटरा घोड़ा ।''

चनैन निर्भीक भावें ओहि घोड़ाक लगीच पहुँचि गेलि । अपना आँचर सँ ओकर काँची-पीची पोछि देलकैक । पीठ थप-थपा देलकैक आ' लगाम खोलि कए अगुआर पछुआर खोलि देलकैक । कटरा ओकरा पाछू-पाछू तड़हरा सँ बहरैल ।

चनैन ओकरा नव दुर्बाक घास खुऔलकैक, सरोवर मे जा कऽ यथेच्छ जल पियौलकैक आ' स्नान करौलकैक। बाजार सँ, रेशमी डोरी बला लगाम, रतन-झब्बावला पलान, सोना कें नाना प्रकारक अश्व आभरण कीनि कऽ बड़ प्रेम सँ ओकरा सुसज्जित कए देलकैक। फेर ओकर लगाम पकड़ने राजधानी दिस बिदा भए गेलि।

कटराक नाम सुनिते नगर दलमलित भए उठल। घर सभहिक केबार बन्न भए गेल आ' चारूभर कुहराम मचि गेल। मार्ग निर्जन भए गेलैक। तमाशा देखक लेल लोक राजमार्गक कातक छत सभ पर उमड़ि पड़ल। मोचनिक रानी सभ, झरोखा सभ पर थहाथहि करए लगलीह। ''झन झन-झुन झुन।'' चनैनक आभूषण बाजि रहल छलइ।

''टन टन-टुन टुन।'' कटराक गरदनिक सोनाक घंटी सभ टनटनाइ।

लगाम धेने आगू-आगू गजगामिनी चनैन आ' पाछू-पाछू उच्चैश्रवां सन विशाल घोड़ा कटरा, दुलारू शिशु जकाँ ठुमकी चालि मे चलि अबैत।

''नयन-जुड़ा लीअ।'' ठिठरा नौआ मोचनि कें कहलकैक।

''करेज जुड़ैत तखने चैन भेटत।'' मोचनि व्याकुल भए उठल।

ओम्हर लोरिक प्रस्तुत भेल बैसल छल : पीयर धोती, लाल तौनी, आ' स्वर्णिम पग्गड़ धारण केने। ओकरा देखितहि कटरा पछिला दूनू पैर पर ठाढ़ भए कऽ हिनहिना उठल। फेर आगू बढ़ि कए ओकर समस्त शरीर सूँघए लागल आ' पैर चाटि लेलक। लोरिकक रोम-रोम पुलकित भए उठलइ। ओ उठि कए कटराक गरदनि पांज मे भरि कए ओकरा दुलार करए लागल। लगइ जेना ओइ दूनू कें जन्म-जन्मान्तरक परिचय होइक।

चनैन ओकर लगाम खोलि देलकैक आ' हबर-हबर कए सोनाक दू थार मे सचार लगौलक। एक थार देलकैक कटरा कें आ' दोसर पर भोजन करए बैसल लोरिक। दूनू तृप्तिपूर्वक भोजन केलक।

चनैन फुलेल बहार कए लोरिकक मस्तक आ' कटराक अयाल सुवासित कएलक आ' दूनू पर दूभि-धान छीटि कए ललाट पर दधि-अक्षत अंकित कएलक।

कटरा घोड़ा उत्फुल्ल भए हिनहिनाए लागल आ' चारू नाल बजबए लागल। लोरिक हर्षित होइत अपनहि हाथें कटरा कें सुख-लगाम पहिरौलक,

पानक बीड़ा चभलक आ' हाथ मे खंडा लए कऽ उचकि कए कटराक पीठ पर बैसि गेल।

ओ चनैन दिस मुस्कुरा कऽ तकलक आ' लगाम मे सिनेह-भरल मधुर झिटकी देलक।

लगलइक जेना, कटरा धरती आ' असमानक बीच मे उड़ल जा रहल हो। ओ वायुवेग सँ मोचनिक गढ़क चारूकात एक चक्कर देलक आ' गेरूला आखाड़ा दिस बढ़ि गेल।

मोचनिक छाती पर सांप ससरै लगलइ। ठिठरा ओकरा परितोषलकैक-''सेनापति गजभीमलक आगू मे लोरिक पलघड़ी मे भसकि जाएत।''

लोरिक दू घड़ी मे गेरुला आखाड़ा पर जुमि गेल। आखाड़ा सँ कनियें हँटि कऽ ओ घोड़ा कें चरक लेल छोड़ि देलकैक आ' ओकर लगाम खोलैत कहलकैक—''अइ लगाम आ' पलानक कोनो मानि ने कटरा। हम सदिखन प्रेमक लगाम आ' मैत्रीक पलान व्यवहार करबौक।''

ओ आखाड़ा लग आबि कए एकटा मल्ल कें कहलकैक—''मीत, दू चारि हाथ दाव-पेंच हमरो सिखा दै नऽ। एक हाथ हमरो खेला दै नऽ।''

ओ मल्ल भभा कऽ हँसि देलक—''बड़ मोनगर देखइ छीअ। आबह खेला दीअ एक हाथ। ओकर बदला मे अपन तौनी, पग्गड़ आ' खंडा दए देमए पड़तऽ। हँ मीत, ई गेरुला आखाड़ा छैक सेनापति गजभीमल के, खेलइ मे जों प्राण निकसि जा तऽ स्वर्ग सँ ककरो सरापिहक नहि।''

''स्वीकार अछि।'' लोरिक कहलकैक आ' अपन तौनी, खंडा आ' पग्गड़ आखाड़ाक कोर पर राखि कए जनमक रोगी जकाँ टग्ग हनैत आखाड़ा मे प्रवेश केलक जेना कहियो मल्ल कर्म सँ भेंटे ने भेल होइक।

लोरिक माँ दुर्गा कें प्रणाम केलक। एकटा मल्ल आबि कए ओकरा झिकझोरि देलकैक। लोरिक ओकरा उठा कए बड़ी दूर पर फेकि देलकैक। दोसराक टाँग पकड़ि कए तेना ने घुरमी लगौलक जे ओकर प्राण उपरे रहि गेलैक।

''शत्रु आएल। शत्रु आएल।'' मल्ल सभ एक्के बेर चित्कार केलक।

गजभीमल अपना निवास मे विलास-मग्न छल । ओकरा छोड़ि कऽ सभ एक्के बेर लोरिक कें साओनक घटा जकाँ घेरि लेलकैक ।

लोरिक हुँकार केलक आ' एक मल्ल कें उठा कऽ दोसर पर मारए लागल बहुत मुइल आ' बहुत पड़ा गेल ।

गजभीमल कें सूचना भेटलैक तऽ ओ मत्त गजराज जकाँ चिघाड़ैत आएल । लोरिक एखन तक ताल नञि ठोकने छल । ओकरा देखतहि ओ—

पहिल ताल ठोकलक - 'जय माँ दुर्गे ।'

दोसर ताल ठोकलक - ''जय माय-बाप ।''

तेसर ताल ठोकलक - ''जय सती माजरि''

गजभीमल लोरिक सँ भीड़ गेल । महामल्ल छल ओ । सात दिन सात राति तक दाव-घात चलैत रहलैक । दूनू मे सँ एक्को ने टकसइ वला । अन्तर एतबे जे लोरिक बड़ धैरज वला किन्तु गजभीमल अकुलैल । अन्त मे, गजभीमल काला-जाँघ सुतारि कए लोरिक कें खसा देलकैक आ पुनः ओकर गरदनि कें अपना काँख तर दाबि कए मल्लक मर्यादाक प्रतिकूल अपना मल्ल सभ कें मुगदर लऽ कऽ लोरिकक मूड़ी कें थुरैक आज्ञा देलकैक । मल्ल सभ मुगदर आ गदा लऽ लऽ दौड़ल ।

दूभि चरैत कटराक मोन जेना उचटि गेलइ । ओ आखाड़ा दिस तकलक आ एक्के धाप मे आखाड़ा मे कूदि आएल आ टाप उठा कए गजभीमलक मस्तक पर प्रहार केलक ।

गजभीमल धड़फड़ा कऽ खसल । ओकरा काँख तर सँ मूड़ी छुटिते लोरिक अपना खंडा सँ गजभीमलक मूड़ी चोपि लेलक । फेर तऽ गेरुलाक मल्ल सभहिक मूड़ीक पथार लागि गेल लोरिकक खंडाक धार सँ । दूध सँ पटौल जाए वला आखाड़ा रक्त से डूबि गेल । लोरिक गजभीमलक मुण्ड जुमा कए मोचनि राजाक महल दिस फेक देलकैक आ सिनेह सँ कटराक पीठ पोछए लागल ।

मुण्ड मोचनिक आगू मे खसलैक आ बालू मे ओंधड़ा गेलैक ।

ठिठराक मन-मयूर नाचि उठलैक । ओ राजा कें कहलक - ''इएह, इएह लीअ, सेनापति गजभीमल, लोरिकक मूड़ी छोपि कए उपहार पठौलक अछि ।''

''दौड़, जो । चनैन कें नेने आ ।'' मोचनि नाचि उठल ।

ठिठरा दौड़ल । चनैन सिंगार कए रहलि छलीह । ओ चनैन कें

कहलकन्हि—''कनिये राजाक ठाम चलू तऽ। हुनका आगू मे एकटा नर-मुण्ड खसलन्हि अछि। कने चिन्हबैक ओकरा। लगइ छैक जेना लोरिक के मूड़ी ने होइक।''

भभा कऽ हँसि देलकैक चनैन—''कने सिंगार-पटार कए लइ छी तखन चलब।''

ओ कुसुम रंग चीर पहिरलक। नील कंचुकी धारण केलक। नौ कोणक बिन्दी सटलक आ' मांग मे मोती गुहि कए ठिठराक पाछू-पाछू चललि।

मोचनिक रानी सभ झरोंखा सँ ओकर सौन्दर्य निहारि कए दाँत तर आंगुर काटए लागलि।

मोचनि उताहुल भए रहल छल। चनैन कें अबिते ओ कहलकैक —''कने ई मुड़ी चिन्हियौ तऽ।''

मुण्ड कें देखिते चनैन खलखल हँसए लागलि आ' मुण्ड कें एक लात मारि कए एम्हर सँ ओम्हर कए देलकैक।

''सात घैल पानि ढरबा कऽ मुण्ड अपनहि चीन्हि लीअ हे राजा।'' ओ कहलकैक।

तीन घैल पानि ढारैत ने ढारैत गजभीमलक मुण्ड चिन्हा गेलैक। मोचनिक मुँह सूख-पाक करए लागलैक आ' ठिठरा चित्कार कए उठल।

हँसैत-नितराइत चनैन, गौरवान्वित मुद्रा मे ओहि ठाम सँ चलि पड़लि।

करेज कें दृढ़ कए ठिठरा, राजा मोचनि कें परबोधय लागल आ' कहलकैक-''आब किछु नहि, अपन परम मित्र न्यौरीगढ़क महा-प्रतापी राजा हरबाक नामे लोरिक कें पुनः एकटा एहने पत्र दिऔक। लोरिक जों घुरि कऽ आबए तऽ हमरा नामे कुकुर पोसि लेब।''

चनैन बाटहि छलि की लोरिक कटरा पर उड़ैत जकाँ देखाइ देलकैक। ओ एकटा ताड़क गाछ उखाड़ि कए चनैन पर तेना कऽ फेकलकैक जे ओ गाछ ओकरा पर बरसातक झोंका दैत बड़ी दूर पर जा कऽ खसलैक।

चनैन ओइ झोंका मे पताय लागलि कि लोरिक ओकरा लग मे घोड़ा ठमका कए ओकर डेड़ झीकि कए अपना आगू मे घोड़ा पर बैसा लेलकैक।

''गजभीमलक मुण्ड के लतिया कए आ' राजाक छाती पर जाँत पीसि कए आबि रहल छी।'' चनैन मधु मुस्कानक संग कहलकैक।

''तही हरानीक घाम सुखबक लेल मुँह पर बीअनि डोला देलहुँ ।'' लोरिक हँसल ।

चनैन छिरिआइलि -''धुर जो, जेहने पुरुष तेहने बीअनि । हम तऽ पात जकां उधियै लगलहुँ ।''

लोरिक ओकरा केशक सुवास के स्वास मे भरैत प्रफुल्ल भए उठल आ' नगरक त्रिपेक्षण कए भगवती दुर्गा कें प्रणाम करक हेतु घोड़ा कें आगू बढ़ौलक । कटरा द्रुतगति सँ टाप बजबए लागल ।

* * * * * * * * * * * * *

दूर दूर तक पसरल नरसरि खरहोरि । खढ़ एतेक पैघ-पैघ जे दन्तार हाथी ओहि मे बिला जाइ । बीच दऽ कऽ बहैत ''जमरा'' धार । एक दिस एकटा भरल सरोवर । सरोवर मे मारते कमल फुलैल । तट पर चतरल एकटा बहेड़क गाछ सघन छाहरि पसारने ।

धारक किछेर पर हरिणक झुंड पानि पीबि रहल छलइ । जल रेखाक कात मे अर्ध चन्द्राकार कांपवला दन्तार बराहक झुँड कल्लोल कए रहल छलइ । सरोवर मे ओम्हर राजहंसक दल अलस भाव सँ अलगल कमल पत्रक छाहरि तर विश्राम कए रहल छल ।

लोरिक जखन ओहि ठाम पहुँचल तऽ दूपहरियाक सूर्य प्रखर भए चुकल छलैक । ओ कटरा घोड़ाक लगाम बहेड़क गाछ मे बान्हि देलकैक । सरोवर मे प्रवेश कए हाथ-मुँह धोलक आ' बहेड़-गाछक नीचा मे, छाहरि तर सुस्ताय लागल । जखन कखनहुँ कऽ माछी ओकरा देह पर बैसइ तऽ कटरा अपन नांड़डिक चौर डोला दइ ।

राजाक चरबाहा सभ अइ विपुलाकार व्यक्ति कें देखलकैक, ओकर खंडा आ' घोड़ा कें देखलकैक आ' सभ सन्न भए गेल । एकहि, दूअहिं ओ सभ राजाक दरबार दिस दौड़ल । अइ राजा कें एकटा योद्धा छलइ घुघरा पँवार । अपन जेठ भाई उघरा पँवारक राजपाट समाप्त भए जएबाक उपरान्त ओ अही राजाक आश्रय मे चल आएल छल आ' नौकरी बजबइ छल । चरबाहा सभ पहिने ओकरहि खबरि देलकैक ।

''मत्तोरी के ।'' घुघरा गड़गड़ैल—''चोरउ-चहार लेल रजइ (राजा) कें कहल जेतइ । अइलेल हमहीं छी ।''

ओ गुप्त-शत्रु कें मारैक खरखाही लेबऽ लेल धड़फड़ा कऽ नरसरि पहुँचल ।

भगजोगनी सन धधकैत आँखि, तराशल पाथर सन वक्ष, ताड़क जुऐल गाछ सन-सन जांघ, ओ असिसंचालन मे निष्णात छल ।

लोरिक कें देखितहि ओकर करेज उधकि उठलइ आ' ओ रंग बदलि लेलक । लोरिकक विजय-गाथा चारूभर पसरि देल छलैक आ' घुघरा ओहि सँ परिचित छल ।

ओ आगू बढ़ि कए लोरिकक अभिवादन केलक—"धनि भाग हमर जे आइ तोहर दर्शन भेल वीर ! की नाम तोहर ?"

"हमर नाम अछि लोरिक । राजा मोचनिक हम दूत भेलियैक राजा हरवा कें नाम सँ हुनकर एकटा पत्र अनलियन्हि अछि । ओहि पत्र मे छइ जे पत्र-वाहकक मूड़ी छोपि कऽ पठा दीअ । से मुड़ी छोपबाबक पहिने कने विश्राम करइ छी ।" लोरिक मुस्कानक संग कहलकैक ।

"अहाहा बन्धु, तोंहीं लोरिक छीअ भैया । आरेरेरे, वाह वाह ।" घुघराक आपकता घनहन भए उठलैक । "ऐं सरिपहुँ किने, तों चलैत होएबऽ तऽ धरती डगमग करैत हेतैक । बज्र सँ बनल तोहर वक्षस्थल, पाथरक चट्टान सनक पीठ, आ' नीलाचलक शृङ्ग सन तोहर उन्नत मस्तक । आ' ई तोरे सनक वीरक काज छल जे उघरा पँवार के स्वर्ग पठौलह, गजभीमलक गरदनि कें कड़ड़ी थम्ह जकाँ खच द दू खंड कए देलह । तोहर खंडो केहन अग्निपुँज । कनियें देखक-छूबक भाग जौं होइत तऽ नैन जुरा जाइत ।"

प्रशंसा सँ लोरिक प्रसन्न भए गेल । ओ अपन खंडा घुघराक हाथ मे दैत कहलकैक—"अरे योद्धा, जी भरि देख लैह एहि खंडा कें ।"

घुघरा ओहि खंडा कें उनटा-पनटा कए सभ दृष्टिएँ देखलक, उचकि कए भागि जाइक विचार केलक किन्तु खंडा बेस भरिगर बूझि पड़लैक । जेना-तेना दहिना-बामा घुमा कऽ लोरिकक हाथ मे रखैत कहलकैक—"एह, पहाड़ सन भारी छैक ई खंडा । तोंहीं धन्य छऽ जे रण मे एकरा नचबै छऽ ।

ओ लोरिक कें अभिवादन कए घूरि चलल । कनिये फराक गेल हैत कि ओकरा किछु फूरि गेलैक आ' ओ एकटा झोंझ मे नुका कऽ बैसि गेल ।

आगम बूझि गेल कटरा । ओ जोर-जोर सँ हिनहिनै लागल ।

रौद सँ आएल लोरिक, शीतल छाहरि आ' हरहर बसात पाबि कऽ ओंघाय लागल आ' अपन पग्गड़ माथ तर राखि कऽ किछुए क्षण मे ठड़ड़ पारऽलागल।

पेटक बल ससरैत घुघरा झोंझ सँ बहरैल। माथ पर उड़ैत काग टांय-टांय केलकैक आ' बनविलाड़ ओकर बाट काटि देलकै। किन्तु ओ ससरैत-फसरैत लोरिकक समीप आएल आ' कटराक टाप सँ अपना कें फराक रखैत हाथ नमरा कऽ लोरिकक खंडा झीकि लेलक।

एक मोन भेलइ ओकरा जे सूतल लोरिकक गरदनि पर खंडा प्रहार कए दी, किन्तु ओमहर टाढ़ छलइ क्रोधें फुफकार करैत भयंकर रूप धारण कएने कटरा। जखन लोरिक पर आघात करक घुघरा कें गऽर नहि धेलकैक तऽ ओ खंडा लए कऽ प्राणपन सँ भागि चलल। लोरिक कें जागि जाएक डर ओकर सर्वाङ्ग थर-थर काँपि रहल छलैक।

कटरा जोर सँ हिनहिनैल आ' हिनहिनाइते रहल। जंगल ओकरा आसमर्द सँ काँपि उठल। हारि कऽ कटरा लोरिकक डांड़ पर एक लथार मारलक।

लोरिक एक रत्ती आँखि खोलि कऽ कटरा के आग्नेय नेत्र सँ देखलकैक आ' पुनः सूति रहल।

कटरा पुनः दोसर लथार चलौलक। लोरिक क्रोधान्ध भेल उठि बैसल। किन्तु निन्न सँ ओ तत्ते बेबस भए रहल छल जे एतबहि कहि पौलक -''पशुक कोन विश्वास।''

ओ कटरा सँ हँटि कऽ सूति रहल।

कटरा दुःख सँ कातर भए गेल। लोरिक आब ओकरा पहुँच सँ बाहर छलइ। ओकरा घोर-रव सँ हिनहिनाइक कारण दलक दल पक्षी पाँखि फरफरा गाछ बिरिछ छोड़ि-छोड़ि उड़ि रहल छलैक किन्तु लोरिक नहि जागि पबइ। लोरिकक मस्तक किछु समीप छलइ। कटरा बैस गेल आ' बड़ कठिन सँ घेंट नमरा कऽ जीह बहार कए लोरिकक चौन द्वारा सुवासित केश अपना दांत तर आनि झिट्टी मारलक।

लोरिक जागि कऽ बैस गेल आ' क्रुद्ध स्वर मे बाजल-''हम तोहर कोन बेजाय केलिऔ कटरा जे हमरा एना उछन्नर करइ छैं। रह एकर दंड स्वरूप तोहर एकटा कान काटि ली।''

कटरा हर्षें नाचए लागल।

लोरिक ओकर कान काटक लेल खंडा ताकए तऽ खंडे ने । ओकर मुँह सुखा गेलैक । ओ रहि-रहि कऽ अपन ठोर चाटऽ लागल ।

ओ एमहर ओमहर खंडा कें तकलक । खंडाक कतहु पता नहि । कौआ वा चिल्ह तऽ खंडा झपकि कऽ नहि उड़ि सकइ छल ।

कटरा, अपना लगाम मे अनवरत झिट्टी मारि रहल छल ।

लोरिक ओकरा पीठ पर हाथ राखि कए कहलकैक.......''नूनू, तोहर संकेत नहि बुझलौं रौ नूनू । आब खंडा बिना अपटी खेत मे प्राण गमेबइ ।''

कटरा अपना लगाम मे एकटा जोरगर झिट्टी देलकइ, लोरिक ओकरा खोलि देलकैक । कटरा नाक फड़का कऽ माटि सुँघलक आ' एक द्रुत वेग सँ चलि पड़ल । लोरिक ओकरा पाछू-पाछू दौड़ल ।

घुघरा लेल चलनाइ कठिन भऽ रहल छलैक ओहन भरिगर खंडा लऽ कऽ । सघन खड़होरिक दुआरे ओ नदीक किछेरे-किछेरे चलि रहल छल । ओकर सांस तेज भए रहल छलैक किन्तु मोन प्रसन्नता सँ अषाढ़क मयूर भए रहल छलैक ।

कटरा घोड़ा ओकरा लग जुमि एलइ । लोरिक ललकार देलकैक-''अरे चोरा, तोहर मित्रता खूब रहल ।''

घुघरा, खंडा घुमबैत लोरिक पर आक्रमण कए देलक । लोरिक ओकर आक्रमण तऽ बचा लइ किन्तु आक्रमण नहि कऽ पबैक । किछु क्षण दाव-पेंच चलैत रहल ।

सहसा कटरा दूनू टाप उठा कऽ पाछुए सँ, घुघराक गरदनि अपना दाँत सँ पकड़ि लेलक । घुघराक हाथ सँ खंडा छिटकि कऽ खसि पड़लैक । फेर की छलैक, एक्के पल मे घुघराक कटल मूड़ी सँ रक्तक भुभकार चलए लगलइ ।

लोरिक आ' कटरा जखन बहेड़क गाछ लग घूरि कऽ आएल तऽ सूर्यास्त भए रहल छलइ ।

—o—

तरूआरि आ' तरुणी

*   *   *   *   *   *   *   *

बैसाखक दुपहरियाक सूर्य जकाँ राजा हरबाक प्रचण्ड प्रताप अग्नि-वर्षा कए रहल छलइ । उत्तर पहाड़ सँ दक्षिण गंगा कात तक बाबन कोसक राज मे ओकरा दर्पे खढ़ जड़ैत छलैक । ओकर छोट भाई बरबा जखन रणक्षेत्र मे असि संचालन करैक तऽ प्रलयक दृश्य उपस्थित भए जाइ ।

से अत्याचारी छल ओ जे हथौड़ी नामक स्थान मे एकटा भीषण बनिसार बनबौने छल । ओहि मे ओकरा सँ विजित व्यक्ति बेड़ी-हथकड़ी पहिरने असाध्य यन्त्रणा भोगैथ वा ओकरा मोन होइ तऽ अपना विरोधी कें ओ खौलैत कड़ाह मे रखवा दैक, नहि तऽ शिकारी कुकुर सँ नोंचवा दैक अथवा जीविते माटि मे गड़वा दैक ।

अनाचारियो तेहने छल आ । दुहबी-सुहबी नामक दू टा ब्राह्मण कुमारिक अपहरण कए ओकरा सभ कें अपना विलास-भवन मे राखि नेने छल । ओ प्रतिदिन कतोक रूपसी कें पकड़ि कऽ मँगवा लिऐ आ' अपना विलासक हेतु किछु दिन राखि कए ओकरा सभ कें घुरा दैक । ओकरा केलि-कक्षक चारू भर, कतहु नृत्य-गीत चलैक तऽ कतहु आसव-पान । ओहि पान-भूमि मे कुमारि सुन्दरि सभ, किओ आसव घट, किओ पान-पात्र, किओ पुष्प माला, किओ गुआ-पान तऽ कियो चौर नेने अर्ध-नग्न ठाढ़ि रहैत छलि ।

कोठराम गढ़क राजकुमार कुँवर अंगार ओकर भागिन छलइ । ओ अगिन-वाण फेकि कऽ शत्रु-पक्ष कें भस्म करए मे आ' वरुण-पाश चला कऽ केहनो-केहनो अश्वारोही कें ठाढ़े-ठाढ़ बझा लेबए मे निष्णात छल । हरबा पर जहिया कहियो गड़ पड़इ तऽ वैह उबार करैक । ओकर वाण आ' पाश कहियो विफल नहि जाइक । ओ सुरराज इन्द्रक बड़ भक्त छल । ओकर माय (हरबाक बहिन) रानी बीरम देवी, चौदह मन सरिसोक तेल सँ प्रतिदिन देवराज इन्द्र कें सांझ दैन्ह । ओकर पत्नी संझा, अपना अपरूप सौन्दर्य लेल विख्यात छलि ।

लोक मे कहबी छलइ जे कुँवर के दूइयेटा काज सभ सँ बेसी मोहक लगैत छैक युद्ध भूमि मे उमकनाइ नहि तऽ कुँवरि संझाक आंचर मे ओझरैल रहनाइ ।

राजा हरबाक शयन-कक्ष मे रत्न-झालरिक चनमा टांगल रहैत छलैक । ओ नीलमणि जटित स्फटिक पलंग पर सुतैत छल आ' लगहि मे मारू डंका राखल रहैत छलैक । कोनो आवश्यकता अएला पर ओहि मारू-डंका के बजा दइ आ' पल घड़ी मे गढ़क चारूभर मारू-बाजा गड़गड़ाए लगइ । क्षण घड़ी मे हरबाक चौदह सहस्र प्रलय-वाहिनी सुसज्जित भए कऽ गढ़क मैदान मे ओकरा आज्ञाक प्रतीक्षा करए लगइ । घोड़ा हिनकय लगइ । हाथी चिंघाड़ करए लगइ । अकुना-मकुना छोड़ि कऽ सोलह सौ एकछेहा दन्तार हाथी छलइ ओकरा सेना मे ।

ओकर पटरानी महादेवी ओकर राजधानी न्यौरी-गढ़ सँ किछु हँटि कऽ ''कोरहांस'' गढ़ मे रहइ छलि । ओ बड़ करुणामयी छलि । राजा हरबाक स्वेच्छाचारिता ओकरा नहि नीक लगइ । राजा विद्याप्रेमी सेहो छल आ'' ''हारब'' ग्रन्थक रचना कएने छल किन्तु आब आसवक प्रवाह मे ओकर विद्याप्रेम भसिया गेल छलइ ।

ओकर सेना अजेय बूझल जाइ । ओ अपना रण-वाहिनीक संग जेम्हरहि बढ़ए नगर-ग्राम श्मशान बनैत चलइ ।

से ओइ दुपहरिया राति मे, कोनो अकुढ़ दुःस्वप्न देखि कए राजा हरबा चेहा कऽ उठल । ओ भयभीत दृष्टि सँ चारूकात तकलक । पार्श्वक सेज राभ पर दुहबी-सुहबी अस्त-व्यस्त सूतलि छलि । पुष्पमाला, सुगन्धित पात्र आ' पान-पात्र, निद्राक पहिलुका केलिक अवशेष रूप मे वितरोचार भेल छिरिऐल छलइ । कोम्हरहुँ ओकर दृष्टि नहि गेलइ । जगलो पर ओकरा बूझि पडलइ जेना कियो विशाल-काय योद्धा समक्ष मे एकटा द्युतिमान खंडा घुमा रहल होइक । ओ भ्रम निवारणार्थ कतोक बेर आँखि मीड़लक किन्तु जेम्हरहि ताकए वैह दृश्य ।

अभचंक भए गेलइ ओकरा ।

डम डम डम डम डमाक । डमाक डमाक डम डम डम डम ।

नहि किछु फुरलइ तऽ ओ मारूडंका पर वेग सँ चोट ठोकए लागल ।

जागि गेल दुहबी । उठि गेलि सुहबी । चौंकि उठल पहरू ।

''कड़ ड़ ड़ धम् । कड़ ड़ ड़ धम् ।'' गढ़क चारू बुर्ज पर सँ रणडंक निनाद कएलक ।

''तड़ ड़ ड़ । तू उ उ ।'' तोरण द्वार पर तूर्य-नाद भेल । हरबा कें सांत्वना भेटलइ जे गढ़ सुरक्षित अछि ।

ओकर छोट भाई, सेनापति बरबा सैनिक वेश मे उपस्थित भए कऽ ओकर अभिवादन केलकैक आ' पुछलकैक-''कोम्हर प्रयाण करैक आज्ञा होइत छैक ?''

''नरसरि खड़होरि कें घेरि लीअ । ओहि मे हरिण-सुग्गर एतेक बढ़ि गेलैक अछि जे ओ सभ ओहि मे सँ बहरा कऽ प्रजाक पथार तक खा जाइत छैक । आइ नरसरि मे शिकार हेतइ ।'' राजा कहलकैक ।

बरबा अभिवादन कए चलि पड़ल । हरबा, दुहबी-सुहबी कें आज्ञा देलकैक-''उत्तम रीति सँ सिङार-पटार कए हाथी पर बैस जाउ आ' हमरा संगे रहू । अजुका शिकार दृश्य रोमांचक होएत । हम आइ सपना मे अनहोनी बात सभ देखलहुँ अछि ।''

दूनू सुन्नरि सिङार कएलक । नव-नव वस्त्र, कंचुकी आ' आभरण धारण कएलक । एकटा मोरछल लेलक तऽ दोसर चऽर । एकटा गुआपानक बट्टा लेलक तऽ दोसर आसव घटिका आ' पान-पात्र । हरबा अम्मारी सज्जित एकटा विशाल हाथी पर बैसल । एककात बैसलइ दुहबी तऽ दोसर पांजर लागल बैसलइ सुहबी । मोरछल, पनबट्टा, आसव घट आ' पान-पात्र नेने । अहि मदस्त्रावी गजराजक भीजल गण्ड पर गुञ्जन करए वला मत्तालि-माला, दुहबी-सुहबीक सुरभित मुखमंडल पर मड़ड़ाय लगलइ ।

अपन सेना सँ बेढ़ल हरबा नरसरि-खड़होरि दिस बढ़ल । आगू-आगू, चपल रण-अश्व ''बरछेवा'' पर बैसल, सेनाक मार्ग-प्रदर्शित कए रहल छल सेनापति ''बरबा'' । ई वैह बरछेवा छल जकरा टापक दर्प सँ शत्रु-सेना मे हाहाकार उठए लगइ छल ।

एक पहर मे, नरसरि-खड़होरि सेना द्वारा घेरि लेल गेल ।

प्राची लाल भए रहल छलइ ।

लोरिक जागल, स्नान केलक आ' भगवती दुर्गाक पूजा केलक । खुजल कटरा राति भरि चरिते रहल छल । लोरिक ओकरा पकड़ि कए लगाम लगा

देलकैक, पीठ पोछि देलकैक, पलान कसि देलकैक आ' स्वर्ण आभरण पहिरा देलकैक ।

सहसा रणभेरीक ध्वनि सुनाइ देलकैक । हमाहमीक दमस सँ खड़होरि काँपि उठलइ । चिरइ उड़ल फर्र-फर्र । हरिणक झुण्ड आकुल भेल चक्कर मारए लागल । भयौत बगड़ाक दल सभ नदीक किछेरक शरण लेलक ।

तड़ाक, तड़ तड़ तड़, लोरिक ताल ठोकलक । वृक्ष सभ काँपि गेलइ । बरबाक घोड़ा भड़कि कऽ दू टांग पर ठाढ़ भए गेल । हरबाक हाथी हरकि कए घुमरी कटलक । आ' हाथी घोड़ा सभ बड़ कठिन सँ ठमकौल गेल ।

कनियें आगू बढ़ल बरवा कि आगुए मे घुघराक मुण्ड मुँह बौने औंघड़ैल छलइ । ओकरा लहास (शव) के एक दिस गीदड़ आ' गीध नोंचि कऽ विकृत कए चुकल छलइ ।

बरवा गुम्हड़ल -''कतहुँ शत्रु छैक, शत्रु ।''

''तड़ तड़ तड़ाक ।'' ताल ठोकैक आवाज लगातार गूँजि रहल छलइ ।

''हिन हिन हिन हिनाक ।'' बरछेवा दर्पपूर्ण स्वर मे हिनकल । बरबाक करेज जेना दरकि उठलइ । ओ ओहि हिनहिनाइ सँ सगुन विचार केलक जे कोनो असाधारण शत्रु सँ पल्ला पड़त ।

''हिनाक हिन हिन ।'' कटराक प्रत्युत्तर आएल । बरवा नीक जकाँ गमि गेल जे ताल ठोकि कए समस्त खड़होरि कें कम्पायमान करए बला अज्ञात योद्धाक घोड़ा निश्चित कोनो भीषण रण-अश्व छैक ।

बरवा किछु चुनल वीर सभ कें अग्रिम पंक्ति मे आनि कए आगू बढ़ल ।

ओम्हर लोरिक हाथ मे खंडा नेने कटराक पार्श्व मे ठाढ़ छल । बरवा किछु फराकें सँ ललकारलकैक -''अरे चोर, एल्हिटाम की नुकाएल छैं । अवस्से तों हमर योद्धा घुघराक हत्यारा छें । दम छौ तऽ आगू आ ।''

लोरिक हँसल -''घुघरा हमर खंडा चोरौलक आ' मारल गेल । हम राजा हरवा कें नाम राजा गोर्चानिक पत्र लए कऽ आएल छी ।''

बरवा कें लेसि देलकैक —''मायक दूध पीने छैं तऽ युद्ध कर । बात बना कऽ तों एहिटाम सँ बँचि कए नहि जा सकैत छैं ।''

लोरिक हुँकार केलक —''रे बकरी के बेटा बोत तों बाघिनक पूत कें ललकारि रहल छें ।''

ओ कटरा पर बैसि गेल आ' कटरा लर्पाक कऽ बरछेवा सँ गूँथि गेल। बरबाक पहिल आघात सँ लोरिकक माथक पग्गड़ उड़ि गेलैक। कटरा ओकरा दाँत सँ उठा लेलकइ। दोसर आघात मे ओकर तरुआरि लोरिकक खंडा सँ टकरेलैक आ' दू टूक भए गेलइ। पार्श्वक योद्धा बरबा कें अपन तरुआरि देलकइ।

लोरिक कहलकैक-''तोहर दू चोट हम सहि लेलिऔ योद्धा। ले आब हमर चोट सम्हार!'' ओही क्षण बरबाक मस्तक भू-लुण्ठित भऽ गेलैक आ' बरछेवा -घोड़ा धड़ नेनहि एक दिस वेग सँ भगलइ। बरबाक चूनल वीरक पंक्ति कने पाछू हटलइ कि हाथी पर सँ राजा हरबा ललकारा देलकैक —''पाछू हँटनिहार हमरा हाथे प्राण गमाओत।''

लोरिक कें पग्गड़ पहिरक अवसर भेटि गेलैक।

चुनल वीर सभ, साओनक घटा जकाँ लोरिक कें चारू भर सँ घेरि लेलक। ओकरा सभ कें दूनू दिस मृत्यु छलइ। बड़ जुम्मुस बान्हि कऽ ओ सभ तरुआरि झमकारलक।

कमाल केलक कटरा। ओ कोन क्षण कोम्हर हुलत आ' कोम्हर सँ हँटत से कियो नहि बूझि पबइ। ओ बिजलौका जकाँ छिटकइ। आगू आ' पाछू दूनू दिस ओकर गति छलइ। ओ दाँत आ' टाप दूनू सँ युद्ध कए रहल छल। ओ नाङड़ि सँ शत्रुक आँखि के झिलमिला दइ आ' खूर उठा कऽ अपना आरोही कें नुका दइ। ओ केवल अपना इच्छा सँ संचालित भए रहल छल, लगामक इशारा सँ नहि।

दू पहर बीतैत-बीतैत बरबाक एकहक टा वीर अपन प्राण गमौलक। हरबा अपना हाथी पर सँ सभटा दृश्य देखि रहल छल। ओ अपना सेना कें पाछू हँटैक आज्ञा देलकैक।

घूरि चलल हरबा। घूरि चललैक ओकर बचल सेना। घटिका भरि आसव खाली भए गेल किन्तु हरबाक कण्ठ सूखैले रहल। भरि पनबट्टा पान समाप्त भए गेल किन्तु ओकर ठोर लाल नहि भए सकल। चऽर आ' मोरछल डोलबैत-डोलबैत दुहबी-सुहबीक हाथ दुखाय लागल किन्तु राजाक ललाट परक स्वेदकण नहि सूखैल।

गढ़ मे अबिते हरबा बारू चौकीदार कें बजा कऽ नरसरिक विजेताक समस्या पुछलकैक।

बारू कहलकैक -''ओ उघरा पँवार आ' गजभीमल सेनापतिक मूड़ छोपनिहार अजेय लोरिक छैक ।''

हरबा आज्ञा देलकैक — वाण वेग सँ जो आ' कोठराम गढ़ सँ हमरा भागिन कें बजा ला । प्रहरी सँ कहि दही जे गढ़क एक-एक द्वार बन्न रहए आ' गढ़क चारू भर सतर्कता सँ पहरा पड़ए । कियो अपरिचित व्यक्ति गढ़ मे आबए नहि पाबए । कियो कोरहांस गढ़ जा कऽ पटरानी महादेवी कें बजा अनहुन आ' हुनका कहि दिअहुन्ह जे जीवन के कोन ठेकान युद्ध मे । सभटा बिसरि कए आबि कऽ भेंट कए जाथि ।''

बारू आज्ञापालन करए दौड़ल ।

''सिङार पटार कए लीअ ।'' हरबा दुहबी-सुहबी सँ कहलकैक-''आसव घट नेने आउ । मनभरि सुख भोग कए ली । शत्रु बड़ दुर्दान्त आ' प्रबल अछि । जानि ने जानि की होमए वला अछि ।''

दुहबी आ' सुहबी अपना-अपना कपोल पर, मोतीक लड़ी सिरजैत, सिङार-पटार लेल पेटार खोलए लागलि ।

* * * * * * * *

सोन जूही सन संझा नीन मे, कोंढ़ फाटि कए कानए लागलि । ओकरा पार्श्व मे सूतल ओकर पति तरुण कुँवर अंगार ओकरा प्रेनमय हाथ सँ जगौलक । संझा तत्ते भयाक्रान्त छलि जे अंगार कें भरि पांज कऽ धऽ लेलक ।

''हम बड़ भयंकर दुःस्वप्न देखल अछि ।'' ओ बाजलि आ' असोधाह कानए लागलि ।

''कि देखलियैक ।'' कुँवर हँसल—''आँहाँ कोठराम दुर्गक विलास कक्ष मे, माथ पर मुकुट आ' छत्र धारण केनिहार पतिक अंक मे एना कियै कांपि रहलि छी । जे गांगे क्षत्री सन अजेय योद्धा कें अपना वरुणपाशक एक्के झिट्टी मे बन्दी बना लेलक तकरा जीवनसंगिनी कें फूँसि फट्टक सपना देखि कए डेरेनाइ कोन बात भेलैक ?''

संझा कहए लागलि—''हम देखलियैक जे भगवती-दुर्गा, सुरराज इन्द्रक समक्ष ठाढ़ि हुनका सँ हुनक एकटा सुन्दर आ' तरुण भक्तक बलि मांगि रहल छथिन्ह आ' तकर बदला मे सुरराज भगवतीक कोनो गभरू-जुआन 'सावर' नामक भक्तक बलिदान चाहैत छथिन्ह ।

भभा कऽ हँसि देलक अंगार —"बस एतबहि लेल आँहाँ अपन करेज कें ओहन सुन्नर आँखिक बाटे ढारने जा रहल छी।"

ओ सँझाक अश्रुसिक्त कपोल कें चूमि लेलक।

तखनहि बाहर सँ, रानी वीरम देवीक आवाज एलइ -"बाहर आबह कुँवर, न्यौरी गढ़क विशेष दूत आएल छैक। तोरा राजा-मामा पर कोनो गाढ़ पड़ि गेल छन्हि मने।"

कनिये काल मे अंगार सैनिक वेश मे सुसज्जित भए गेल। अपन दिनमणि मुकुट धारण केलक, तीर-धनुष आ' तरकश सम्हारलक। पीठ पर अपन विख्यात वरुणपाश लटकौलक आ' अपना गतिशील अश्व पर बैसि कऽ न्यौरी जुमि आएल।

ओ राजाक चरण स्पर्श कए पुछलकैक —"चिर अग्निमय नेत्र आइ सजल कियै भए रहल अछि मामा ? बाजू अखनहि अग्निवाण वरषा कए ककरा नगरी कें भस्म कए दी। आज्ञा दीअ ककरा वरुणपाश सँ बन्दी बना कऽ आँहाँक समक्ष ओकरा मस्तक पर लात राखि आँहाँक आशीष प्राप्त करी ?"

आर्त्त-स्वर मे बाजल राजा हरबा —"महायोद्धा घुघरा पँवार मारल गेल।

तोहर अजेय मामा, बरबाक मस्तक भू-लुण्ठित पड़ल छन्हि। जा तों, ओहि लोरिक कें अपना अग्निवाण सँ भस्म कए टऽ अथवा ओकरा वरुण-पाश सँ बन्दी बना लै। अइ काज लेल हमरा किछु अदेय नहिं अछि। अकठ-बकठ लेल कोर्थू, आम खाए लेल रसियारी, मेही चाउर लेल शखरांइ, गुड़ कुसियार लेल राघोपुर, पान लेल पतैली आ घी लेल धिवाही सन सन सोनमा गाम सभ तोरा दए देबऽ।"

कुँवर अंगार, लोरिक तक पहुँचाबए लेल एगो पथ-प्रदर्शक मङलक। ककरो साधन्से नहि भेलैक नरसरि दिस ताकए के। तखन प्रस्तुत भेल बारू।

बारू आगू-आगू चलल आ' पाछू-पाछू घोड़ा पर कुँवर अंगार। जखन ओ सभ नरसरि खड़होरि पहुँचल तऽ खड़होरि पर गिध-कौआक झूँड लपटि रहल छलैक आ गीदड़ सभहिक महामहोत्सव चलि रहल छलइ।

बारू, फराके सँ अंगार के देखौलक—"वैह छियैक बहेड़क गाछ। ओहि तर मे लोरिक आ' ओकर घोड़ाक निवास छैक।"

लोरिक कटरा कें धार मे स्नान करबए चलल छल कि सहसा दिशा सभ धूम सँ भरि गेलैक । पक्षी गण व्याकुल कलरव करए लागल ।

जीन-पलान, आभरण आ' अपन पगड़ी हबर-हबर कए , बालु तर दाबि देलकैक लोरिक आ' कटरा कें नेनाहि डाट दए धार मे खसल ।

ओ कटरा कें कहलकैक—''आइ भीषण युद्ध हैतइ कटरा । अग्निबाण छोड़ल गेलैक । हम अपन आ तोहर मस्तकक रक्षा अही खंडा सँ झाँपि कए करब । सावधान, मूड़ी छोड़ि कए कोनो अंग ने पानि सँ बाहर रहए ।''

ओ कटराक पीठ पकड़ि कए पानि मे दाबि देलकैक । कटरा भयस ट बैसि गेलइ आ' ओकर पार्श्व मे लोरिक सेहो आकंठ पानि मे बैसि कए अपन आ' कटराक मस्तक पर अपन चाकर धार वला खंडा पट्ट गरे राखि लेलक ।

अग्नि वर्षा प्रारम्भ भए गेलइ । खड़होरि धू-धू जरए लगलइक । नदी पर खसैत अँगोर, पानि मे मिझा-मिझा जाइ । साबा पहर तक अगिनवाण झहरैत रहलइ ।

अगिन-वर्षा समाप्त होइतहि लोरिक कटरा के नेने पानि सँ बहरैल । पलान कसलक, लगाम लगौलक आ' फेर अपन पगड़ बान्हि कए कटरा पर बैस गेल लोरिक ।

एतबहि मे, बारू कें आगू केने, धारक काते-काते अबैत देखाइ देलकै 'अँगार' । ओकर दिनमणि किरीट सूर्यक किरण जकाँ चमकइ । लग अबिते अँगार विद्युत् गति सँ लोरिक पर वरुण-पाश फेकलकैक आ' लोरिक कटरा सहित धराशायी भए गेल ।

अपना घोड़ा सँ कूदि कए नीचा आबि गेलइ अँगार आ' पाशक डोरी कें झीकए लगलइ । लोरिक आ' कटरा जतबहि छटपटाइ पाश ततबहि बेसी कसल चल जाइत कोठरता पूर्वक ।

लोरिक आँखिक कोर सँ समक्ष मे ठाढ़ बारू दिस तकलक ।

''विदा मिता ।'' ओ एतबहि कहि पौलक कि पाशक एकटा रसरी ओकरा ठोरक नीचा चलि गेलैक । ओकर बोली बन्न ।

अँगार पाश झीकक संग लोरिक पर दुर्वचनक झड़ी लगा रहल छल-''बड़ बड़ विक्रम सुनने छलहुँ तोहर आ' तोरा फिनहट अखाड़ाक मिता सभहिक ।

बजा ने अपना मिता सभ कें । अहिना दुर्गाति कए एकहक गोटेक मस्तक पर बेराबेरी मल-मूत्र नहि त्याग केलहुँ तऽ हमर नाम अँगार नहि ।''

अपना अखाड़ाक अपमानक नाम सँ बारूक आँखि ओड़हूल फूल बनि गेलइ ।

ओ एकटा खढ़ उठौलक आ' लोरिक कें देखा कऽ ओकरा दाँत तर चिबा गेल । लोरिक संकेत गमि गेल आ' प्राणपण प्रयास कए अपना दांतक आगूक पाशक रसरी चिबा गेल । रसरी दू खंड होइतहि ससरफानी वला पाश छने मे छिन्न-भिन्न भए गेलैक आ' लोरिक बघचित्ता जकाँ तड़पि कए खंडा नेनहि बहरैल । अँगार पाशक डोरी छोड़ि कए अपना घोड़ा दिस सहटल । लोरिक अवसर पबिते खंडा सँ पाश छिन्न कए कटरा कें मुक्त केलक आ' कटरा पर सवार भए गेल ।

कटरा बड़े जोर सँ हिनहिनैल आ' वेग सँ अँगार दिस बढ़ल । सावा पहर धरि लोरिक आ अँगारक असियुद्ध चलैत रहल । कियो टसकइ वला नहि ।

अन्त मे कटरा घोरा, अँगारक अश्व कें से दुलत्ती देलकैक जे ओ भहरा कऽ खसि पड़लैक अँगार के नेनहि ।

लोरिक कटरा पर सँ नीचा कूदि गेल आ' अँगारक छाती पर लात राखि पहिने ओकर दिनमणि मुकुट झीकि लेलक आ' फेर खंडा सँ ओकर मूड़ी काटि देलकैक ।

* * * * * * * * *

ओकरा दूनू हाथ मे हथकड़ी आ' दूनू पएर मे बेड़ा जकड़ल रहैत छलैक । दूनू आँखि पर पट्टी बान्हल रहैत छलैक ; दूनू कान मे बरकल सीसा ढारि कऽ ओकरा बन्न कए देल गेल छलैक । केवल भोजन काल मे ओकरा आँखिक पट्टी आ' एक हाथक बेड़ी खोलल जाइक । बड़े यन्त्रणा मे ओकर कारा-जीवन बीति रहल छलइ ।

ओकर नाम छलइ गांगे-क्षत्री । ओकर एक मात्र बहिन छलइ गांगोरी जे अपना भुवन-मोहिनी सौन्दर्य लेल विख्यात छलि । राजा हरबा, गांगोरीक अपहरण करक लेल गांगे पर आक्रमण कए देलकैक । गांगे से वीर छल जे एकसरे हरबा कें पराजित कए देलक । किन्तु ओ कुँवर अंगार वरुण-पाश सँ नहि बाँचि सकल । बन्दी बना लेल गेल । गांगोरी जखन ई सुनलक तऽ अपन

माय सहित प्रज्वलित अग्नि मे कूदि गेलि आ' भस्म भए गेलि सतीत्वक रक्षाक लेल।

अहिना कतोक राजा-महाराजा आ' वीरपुरुष सभ, हरबाक ओहि भीषण बनिसार (कारागृह) मे असह्य यातना भोगि रहल छल।

''ठन ठन ठनाक।'' गांगेयक बेड़ी काटि देल गेलैक।

''झन झन झनाक।'' ओकर हथकड़ी खोलि देल गेलैक। कुशल चिकित्सक सभ आबि कए ओकर कानक सीसा बहार कए ओहि मे औषधि दए देलकैक।

गांगेय कें बूझए मे आबिए ने रहल छलइ जे ई कोन अनहोनी बात भए रहल छइ। फेर हँटौल गेलैक ओकर आँखि परक पट्टी। ओ देखलक तऽ ओकरा आगू मे एकटा भीमकाय व्यक्ति ठाढ़ भेल मुस्कुरा रहल छलइ। कारागृहक सभटा कर्मचारी आ' प्रहरी भय सँ त्रस्त भेल ओकर इशारा पर नाचि रहल छल।

ओ भीमकाय व्यक्ति गांगेय कें कहलकैक – ''तोहर छाती बज्र केबाड़ सन छऽ आ' पीठ धौलागिरि पहाड़ सन। बहिंगा सन-सन ठाढ़ तोहर मोंछ कें देखि चित्त प्रसन्न भए गेल।''

गांगेय कहलकैक – ''हे उन्नत मस्तकवला वीर, तोहर दर्शन कए नयन सफल भए गेल। जानि ने जानि कियैक तोरा समीप मे पाबि कए हृदय मे हर्षक गंगा हिलोर मारि रहल अछि।''

आगन्तुक उत्तर देलकैक – ''हम छिअहुँ लोरिक। नरसरि खरहोर मे घुघरा, बरबा आ' अंगार कें यमपुर पठौल। अब तोरा संग लए कऽ हरबाक सिर छेद करब तखनहि चैन भेटत''।

गांगेय प्रसन्नता सँ नाचए लागल। लोरिक गांगेय कें गंगा जल सँ स्नान करौलक। अमृतोपम भोजन करौलक आ' पाँचो टूक नव वस्त्र मँगवा कऽ पहिरा देलकैक। गांगेय आ' लोरिकक जोड़ी अपूर्व भए उठलइ।

लोरिक, अग्नि, सूर्य, खंडा आ' गंगाजल कें साक्षी राखि माँ दुर्गाक स्मरण करैत, गांगेय सँ मित्रता केलक।

गांगेय कहलकैक – ''एहि कारागृह मे बहुत वीर बन्दी छैक। सभ कें मुक्त करह।''

सभटा बन्दी गोट-गोट कऽ मुक्त भेलाह । लोरिकक जयजयकार गूँजल ।

हरबा राजाक अत्याचार पीड़ित प्रजा लोरिक, गांगेय आ सभ मुक्त वीर सभहिक सम्मान मे सभ कें वस्त्र, शस्त्र, अस्त्र आ' अश्व देलकन्हि । आगू-आगू लोरिक आ' पाछू-पाछू हुँकार करैत वीरक दल न्यौरीगढ़ दिस बढ़ल ।

राजा हरबा शत्रुक आगमन सुनलक तऽ मदपान केलक आ दुहबी-सुहबीक अन्तिम आलिंगन कए, गढ़क द्वार खोलि कए, अपन सभ सेनाक संग रणभूमि मे उतरि आएल ।

गांगेय शत्रु सेना मे प्रलय मचा देलक । एम्हर लोरिक हरबा सँ भीड़ि गेल । कटरा भिन्ने अपनहि लड़ि रहल छल । बिना आरोही कें ताण्डव मचौने छल ।

लोरिक हरबाक सेना सँ दू दिस सँ घेरा गेल आ हरबा अपन मत्तगज कें लोरिक पर दौड़ौलक । लोरिक पीठ देखबए जानए नहि । ओ हरबाक एहि अमोघ बूझल जाएवाला व्यूह मे बझि गेल ।

गांगेय ओइ व्यूहक भेद करैत आगू लपकि कऽ आएल । ओ हरबाक गजेन्द्रक अगिला दूनू पएर काटि लेलकैक । हाथी बैसि गेलइ कि लोरिक हाथीक मस्तक पर ठाढ भए, अपना खंडा सँ हरबाक ऊपर से आघात केलकैक जे ओकर मूड़ी दूर छिटकि कऽ खसलइ ।

विजेता वीर सभ, लोरिक आ' गांगेयक नेतृत्व मे गढ़ मे प्रवेश कएलक ।

दुहबी आ' सुहबी भूमि पर लोटान दए रहलि छलि । चूड़ी फोड़ने, सिन्दुर पोछने, हरबाक पटरानी महादेवी हाथ जोड़ने लोरिकक समक्ष एलइ ।

लोरिक ओकरा सभ कें अभयदान दैत कहलकैक— "हम स्त्री, शिशु आ' शरणागत पर हाथ नहि उठबैत छी ।"

महादेवी लोरिक आ' गांगेयक आरती केलन्हि आ' कहलथिन्ह— "राजा अनाचारी छलाह । अभिमानी, अत्याचारी आ मदपक अहि। अन्त होइत छैक ।"

हरबा जतेक विजित राजा कें राज छिनने छलैक, लोरिक सभहिक राज गोटा-गोटी कऽ घुरा देलकैक । हरबाक आधा राज ओ "महादेवी" कें देलकैक आ' आधाक दू खंड भेलइ । एक खंड भेटलइ दुहबी-सुहबी के आ' दोसर खंड मिता बारू चौकीदार कें ।

लोरिक बासक हाथ मे अंगारवला मुकुट दऽ कऽ कहलकैक सावर बौआक उन्नत भाल पर बड़ दिव शोभा देतैक। तों अगोरा जा, सभ कें क्षेम कुशल, प्रणाम, आशीष, हमरा दिस सँ यथायोग्य निवेदन कए, सावर कें हमर दुलार सहित ई मुकुट पहिरा कऽ कहिहक जे भैया ई देलथुन्ह अछि।''

बासू तखनहि मुकुट नेने अगोरा दिस हलसल-फुलसल विदा भेल।

* * * * * * * *

मोचनि-जेम्हरहि तकइ ओम्हरहि ओकरा चनैनक बिन्दी चमकैत देखाई दैक। ओ चनैनक निवासक दिशा मे ताकए तऽ सांस तीव्र भए जाइक।

ओ ठिठरा कें कहलकैक -''लोरिक कें हरवाक ओहिठाम चिट्ठी लए कऽ गेना तीन दिन भए गेलइ। ओ अवस्से मारल गेल।'' ''हरवा-बरवा कें पराजित करइवला बेटा अइ मेदनी पर नहि जन्म लेलकैक।'' ठिठरा ठिठिया उठल -''आब ओ शुभक्षण समीप छैक।'' मोचनि बाजल......''तखन आइये किये ने चनैन कें पकड़ि मँगवावी। मानि लै जों लोरिक नहि मारल गेल आ' घूरि आएल तैयो ओ हमरा धरि समाप्त कइये देत। तैं दुइयो क्षण लेल कियैक ने चनैनक सुख भोगि ली। आ' जों ओ नहि घूरल तऽ पौबारह।''

ठिठरा चिन्ता प्रगट केलक -''बात तऽ बहुत ठीक। किन्तु जों घूरि कऽ घर मे नुकैल हो तऽ अन्हेर हैत। भए सकैत अछि जे ओ राजा हरवा कें बिना चिट्ठी देनहि घूरि आएल हो आ' अपना प्रेयसीक कोंचा तर नुकैल हो। ई नीक हैत जे आँहाँ तरुआरि बान्हि कए योद्धाक वेश मे चली आ' जे बचल-खोंचल मल्ल अछि तकरा सुरक्षा हेतु संग लए ली।''

मोचनि अपना मल्ल-सैनिक सँ चनैनक निवासस्थान घेरि लेलक।

बिहुँसैत बहरएलि चनैन। मुक्त केश। भाल पर चमकैत बिन्दी।

''आँहाँ कें करेज सँ सटबए एलहुँ अछि चनैन।'' मोचनि राजा बाजल—''टोलहि कि झोंटहि, अहाँ कें आबहि पड़त। तैं हुलसैत, बिहुँसैत, लचकैत, मचकैत आँहाँ चली नहि तऽ झोंट पकड़ि कए झीकैत, ऐड़ी सँ रौंदइअबैत आ' कुब्बी सँ कुबिअबैत कहुना बलात् लइये जाएब। कहुना आँहाँ सन स्त्री रतन लइये कऽ दम लेब।''

भभा क हँसि पड़लि चनैन—''बड़ अगुतैल रसिया छी आँहाँ राजा। केहन कुपुरुष छी जे बिना हमरा प्रसन्न केने आँहाँ हमरा अंक लगबए चाहैत छी।

कादम्बिनी आसव भरल स्वर्ण घट मँगबाउ। वीर-पुरुष जकाँ आगू मे तरुआरि राखि कए बैसू। हम ढारब आ' अँहाँ पीबू। मत्त गजेन्द्र जकाँ झूमू। तखन जे होइक हेतइ से हेतइ।''

बैसि गेल मोचनि। भरल स्वर्ण-घट आसव आएल। मणि-जटित कटोरा आएल। चनैनक पायल झंकार कए उठल। ओ अपना हाथ सँ आसव ढारि -ढारि मोचनिक कटोरा भरए लागलि। तीन बेर ढारि कए मोचनि कें दैक तऽ एक बेर ठिठरा कें। प्रमत्त भए उठल मोचनि। झूमि उठल ठिठरा।

माथ पर ओइ स्वर्ण-मद-घट कें राखि कए नाचए लागलि चनैन। पायल मे गति एलइ—छुम छननन्।

ओ जेम्हरहि तकइ ओम्हरहि जेना बिजलौका छिटकइ। ओ नृत्यमान गति सँ मोचनिक आगू सँ बाम हाथे ओकर पान-पात्र उठा लेलकैक आ' दहिना हाथे ओकर लहलह करैत करवाल।

ओइ नृत्य कें देखनिहार सभहिक चेतना अन्हराय लगलैक।

''छप्!'' मोचनिक झूमैत मूड़ी कटि कए एक दिस ओंघड़ा गेलइ।

''झन्!'' ठिठराक मस्तक पर चनैनक पायल बाजि उठल। ओ एक दिस चितंगे खसल।

''डाइन छियैक।'' हाहाकार मचल।

चनैन मोचनिक मूड़ी करवालक नोंक पर उठा लेलक आ' नाचए लागलि। मोचनिक सैनिक वज्राहत ठाढ़ रहल।

तड़ड़धम्। तड़ड़धम्।

सहसा धरती कांपि उठल ताल ठोकैक ध्वनि सँ। आबि गेल लोरिक। चनैन कें रणचंडीक वेष मे देखि कऽ ओकर रोम-रोम पुलकित भए उठलैक। ओहो खंडा ऊपर उठाकए चनैनक संग नाचए लागल।

गांगेय सोर पारि कऽ कहलकैक—''सूनि ले भैया लोरिक। एना अन्हेर जुनि कर। पहिने हरदीथान पर जा कऽ माँ दुर्गाक पूजा कए आ'।'

चनैनक संग उमकइ मे लोरिक सभटा सुधि बिसरि रहल छल।

''बूझि ले बौआ, अइ अभिमानक तोरा बड़ पैघ मोल चुकबए परतौक।'' गांगेय चेतौनी देलकैक।

''जय माँ गंगा, जय माता दुर्गा ।'' गांगेय हुँकार केलक आ मोचनिक मल्ल सभ कें गाजर जकाँ दोखड़ए लागल ।

* * * * * * * *

लोरिक एखनहुँ चनैनक संग नाचिये रहल छल ।

मोचनिक श्रीनगर गढ़ लूटि लेल गेल । सभटा धन लोरिक, हथौड़ी-बनिसार सँ मुक्त वीर सभहिक बीच बांटि देलकैक आ' गांगेय कें विपुल सम्मानक संग बिदा केलकैक ।

चनैन सोन्हौली घाटक रम्य-स्थली मे, सतखंडा भवन बनबौलक आ' चन्दन उद्यान लगबौलक । सोना-रूपाक झरोखा सभ तैयार भेलइ । स्फटिक घाट बान्हल गेलइ । घाट पर दीप-थम्ह सभ निरमाओल गेलइ ।

कटरा घोड़ा, दाना-घास खाइत मोटा कऽ धुमना भए गेल ।

लोरिक विलास रत रहए लागल ।

राज-काज रानी चनैन चलबैक । विजेता लोरिक रूपसी चनैनक कोंचा सँ से बन्हैल जे ओकरा संसारक कोनो सुधि-बुधि नहि रहलइ ।

एक दिन ओ स्नान कए बहरैले छल कि एकटा योद्धा कें अपना दिस अबैत देखलकैक । ओ वीर रहि-रहि कए अपन मोंछ टेड़ कए रहल छल ।

''टेढ़ी देखबैऐ ।'' लोरिक ठनकल आ' ओकरा ललकारि देलकैक ।

हाथी परक योद्धा करियन गामक ''करना'' कुम्हार छल । ओ शान्त भाव सँ उत्तर देलकैक -''भैया तोहर बीर-गाथा सुनि कऽ तोरा सँ एक हाथ लड़ैक लालसा सँ तोरा ओहिठाम आएल छी । एक हाथ युद्ध दै । बाजह पहिने मल्ल-युद्ध हो कि असि-युद्ध ?''

''दूत्तोरी के, असि-युद्ध मे तऽ तोहर मुड़ी खंडाक एक्के आघात मे धरती पर गुड़कि जेतह । तखन युद्धक कोन सुआद । पहिने रहए मल्ल-युद्ध ।'' लोरिक अभिमान सँ बाजल ।

हाथी पर सँ करना उतरि कए ठाढ़ भेल । लोरिक ताल ठोकलक । 'करना' केवल मुस्कुराइत रहल ।

दू उद्धत गजराज जकाँ दूनू एक दोसर सँ भीड़ि गेल । पहिले दाव मे 'करना' लोरिक कें पटकि कए छाती पर बैसि गेल ।

ओकर महौथ, हाथी बान्हए वला मोटगर रस्सा अनलकैक। करना लोरिक कें उनटा बान्ह बान्हि देलकैक आ' ओकरा उठा कऽ अपना हाथीक पीठ पर लादि लेलक आ' पुनः हाथीक पीठ पर ओकरा असेद कऽ बान्हि देलकैक।

चनैन अपना झरोखा सँ सभटा देखि रहल छलि। ओ अचेत भए कऽ खसि पड़लि।

आगू-आगू हाथी, पाछू-पाछू पएरे करना, करियन पहुँचि गेल। ओ प्रतिदिन लोरिकक छाती पर पाथर राखि कऽ ओहि पर सावा पहर चाक घुमबय आ' बासन गढ़ए।

एना छौ मास बीति गेल।

चनैनक चारू भर अन्हारे अन्हार छलैक। ओकर अश्रुप्रवाह सूखेबे ने करैक।

ओ चिन्तित भए उठलि — जाहि वीर सँ 'करना'क विरुद्ध सहायता मांगए जेबइ सएह हमरा रूप पर रीझि कऽ हमरा पकड़ि कऽ अपना रनिवास मे ढुका देत।

सहसा ओकरा किछु स्मरण एलैक। आशा सँ ओकर आँखि चमकि उठलइ। ओ अपना आंचर मे दुर्लभ रत्न भरि लेलक आ' पालकी पर बैसि गंगाकात पहुँचि गेल। गंगा स्नान कए गंगाक पूजन केलक आ' गांगेयक आगू मे हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ि भेलि आ' कानए लागलि।

गांगेय स्नान कए, धूप-दीप आगू मे राखि, गंगा माताक ध्यान मे आँखि मुनने निमग्न छल। ओकर आँखि खुजलइ तऽ ओकरा बूझि पड़लइ जे सोझहाँ मे कियो कानि रहल अछि।

''आँहाँ के छी ? कोन गाढ़ पड़ल अछि ?'' गांगेय पुछलकैक—''हम अखंड ब्रह्मचारी छी। नारीक मुँह दिस नहि तकइ छी। अपन परिचय दीअ।''

''हम छी आँहाँक मित्रक........चैनैन।'' चनैनक कानक वेग बढ़ि गेलैक।

उद्विग्न भए उठल गांगेय—''अरे रे, विजयक उपरान्त ओ दुर्गा पूजन नहि केने छल। तैं तऽ ने कोनो विपत्ति एलइ ओकरा पर। बाजू विलासिनी झट दए बाजू।''

''करियनक 'करना' कुम्हार आँहाँक मित्रक छाती पर छौ मास सँ चाक

घुमा रहल अछि । ई दुर्लभ रत्न लीअ आ' हुनकर रक्षा करियौन्ह ।'' चनैन अपना आँचरक रत्न ओकरा आगू मे उझील देलकैक ।

दर्प मे भरि आएल गांगेय —''एकहक टा रत्न उठा कऽ आँहाँ सोन्हौली-घाट घुरि जाउ । कही तऽ एहन रत्न चारि नाह मे भरि कए आँहाँ के पठवा दी । हम चललहुँ 'करियन' । लोरिक हमरा कारामुक्त केने छल । ताहि प्रत्युपकारक एहन स्वर्ण अवसर फेर नहि भेटत हमरा । हम लोरिक कें बंधन मुक्त कइये कऽ अन्न जलक हेतु कौर उठैब ।''

ओ, माँ गंगाक आरती केलक आ' करियन दिस दौड़ल ।

''करियन पहुँचल तऽ ओ देखलक जे ''करना'' कुम्हार मटोमाट भेल बैसल, लोरिकक छाती पर चाक चला रहल अछि ।

गांगेय ओकरा ललकारि देलकैक । 'करना' चाक छोड़ि कए उठल आ' गांगेय सँ भीड़ गेल । पहर भरि युद्धक उपरान्त ''करना'' धराशायी भए गेल । गांगेय ओकरे पाथरक चाक उठा कऽ ओकरहि मस्तक कें चूरचूर कए देलकैक ।

ओ लोरिकक छाती पर सँ पाथर हटा कए ओकरा बन्धन मुक्त कए देलकैक । लोरिक ओकरा छाती सँ लागि कानि उठल -''तों अपन कारामुक्तिक उपकार आइ शतगुण चुकती कए देलह बन्धु ।''

गांगेय लोरिकक पीठ पोछैत कहलकैक-''दौड़ कए हरदीथान जा । माता दुर्गाक पूजा करह । तोरा अपन घमंड्क ई दंड भेटलह आर किछु नहि । ओना तो अजेय छऽ । चललहुँ ।''

लोरिक आ' गांगेय बेर-बेर छाती मे छाती भरि कए अपना -अपना दिशा मे विदा भेल ।

लोरिक हरदीथान आबि कऽ सात दिन सात राति तक भगवतीक पूजा करिते रहि गेल ।

ओम्हर सोन्हौली-घाटक सतखंडा पर चनैन कें नाना प्रकारक सगुन भए रहल छलइ ।

—o—

अश्रुधारा

* * * * * * * * *

ओ दूनू धार मे स्नान कए घूरि रहल छलीह । लगइ जेना धरती पर दू टा चान उतरि आएल हो । बड़की जेना भिनसरवाक चान हो आ छोटकी सँझुका । लगइ जेना दूटा कमल छवि छिरिया रहल हो । बड़की जेना फुलडाली मे राखल उदास सरोरुह आ छोट्की जेना सरोवर मे डोलैत अर्धविकसित सरसिज ।

बड़की दूर क्षितिज दिस इशारा करैत बाजलि-''देखू मैना, वैह अपन एक लाख गाय ओहिठाम चरि रहल अछि । दियोर-कुम्मर कें भूख लागि गेल हेतन्हि । झट दए चलू । हुनका लोकनिक खैक पठा दियैन्ह ।''

छोटकी कननमुँह भए गेलि-''जानि ने जानि जगजीत-दादा कहिया औथिन्ह । हुनका विजय सभहिक समाचार अबैत छइ किन्तु ओ अपने नहि अबैत छथिन्ह । केहन निठुर भए गेल छथिन्ह ओ । कानि-कानि कए बाट हेरैत-हेरैत माय आ बाबू आँखिक ज्योति गमा लेलन्हि । हुनका कि एकोबेर जनम-धाम, माय-बाप आ अपन रोपल चानन-बिरछ मोन नहि पड़इ छन्हि ?''

बड़कीक आँखि डबडबा एलन्हि -'' पुरुष होइत अछि भमरा । जइ फूल पर रमि गेल, रमि गेल ।''

मैनावती चिहुँक उठलि-''ओम्हर देखथुन्ह दीदी । अपन गाय सभ कियै एना एम्हर ओम्हर पड़ा रहल छइ ? रहि-रहि कए बिजुरी जकाँ की छिटकि उठइ छइ ?''

''ई बिजलौकाक छटा, कुम्मरक माथ परक दिनमणि मुकुट सँ बहरा रहल छइ । किन्तु एत्ते वेग सँ ओ एम्हर ओम्हर दौड़ किये रहल छथिन्ह ? मने युद्ध त ने चलि रहल छइ । हा भगवती, कि एखनहुँ धरि हमरा सभहिक परीक्षाक घड़ी समाप्त नहि भेलइए ।''......बड़की चिन्तित होइत बाजलि ।

"झट दऽ चलथु ।"........मैना कहलथिन्ह-"शत्रु एम्हरो ने हुलि आबय । आन्हर-आन्हरि ससुर-सासु अकुला रहल हेथिन्ह ।"

ओ लोकनि झटकि कऽ बदली । बड़की छलीह सती मांजरि आ छोटकी छलीह मैनावती सावरक पत्नी ।

ओ लोकनि भगवतीक गह्वर मे एली आ भूमि पर माथ टेकि कए भगवतीक पूजन-प्रार्थना केलन्हि ।

भगवतीक आगू मे एकटा लपलपाइत खर्ग राखल छलइ ।

माँजरि आँचर पसारि कए कानि उठली-"हे भगवती जों हम सती छी तऽ ई चंडी-खर्ग हमरा आइ दुष्ट-दलन लेल भेटए । ई हमरा आँचर मे आबि जाय ।"

ओ भगवतीक चरण मे टक्क बान्हि देलन्हि ।

किछुए क्षण मे ओ खर्ग सहसा द्युतिमान भए उठलइ आ ससरि कए माजरिक आंचर पर आबि गेलइ ।

"खर्ग कोन कारणे माँगि लेलहुँ दीदी ?"...... मैनावती पुछलथिन्ह ।

"अजुका दिन नीक नहि बूझि पड़ि रहल अछि ।"....... माँजरि उदास भावें बाजलि ।

जखन ओ लोकनि आँगन पहुँचली तऽ हाथी सभ कें हुमड़ैक आ दौड़ैत घोड़ा सभहिक टापक ध्वनि समीपतर भए रहल छलइ ।

"शत्रु आबि गेलैक । शत्रु आबि गेलैक !"....चिकरैत, लुरकी आँगन एलइ आ बज्र समांठ उठा लेलकै ।

माँजरि, मैना कें कहलथिन्ह-"आँहाँ सासु-ससुरक सेवा करू । एकसरे लुरकी सँ युद्ध नहि सम्हरतैक । हमहूँ एक हाथ टेकिअइ । हम चललहुँ ।"

ओ रण-हुँकार केलन्हि आ चंडी-खर्ग नेने वेग सँ बहरेलीह ।

राजा सहदेवक बेटा, चनैनक भाए, राजकुमार महादेव, चमार राजा कोल्हमकड़ाक चुनल योद्धाक गुल्मक संग हथिया घटा जकाँ गरजन-तरजन करैत घेरि आयल । राजकुमार लोरिक आ सावरक प्रति अवाच्य कथा संग अपना सैनिक कें ललकारा दए रहल छल ।

भंडीक टेन कें जेना छेरी महामारी समाप्त कए देइ छैक आ बकरीक झुँड

मे जहिना हुड़ाड़ रमकइ छइ तहिना लुरकी अपन बज्र समांठ नेने युद्ध मे उधियै लागलि । शत्रुक सेना नष्ट होइत पाछू हँटए लागल आ दोलपत्ता दए कऽ लुरकी कें बहुत दूर लए गेल ।

महादेव अपन दुर्धर्ष योद्धा सभहिक एकटा टुकड़ी नेने कातकतौ नुका रहल । लुरकी कें हँटितहि ओ प्रगट भेल आ' कड़कि कए आज्ञा देलकै- ''झोंटा पकड़ि कए लोरिक आ सावरक फुलकुम्मरि के झिकने आऽ । दुनू कें आइ हम सेज पर लए जाएब ।''

भभा कऽ अट्टहास केलन्हि सती माँजरि । हुनका हाथक खर्ग घनलता जकाँ लौकऽ लागल । ओ रणचंडी भेलि जेम्हर जाथि ओम्हर प्रलय घहराय लगैक ।

आबि गेला सावर । दौड़ैत आ हफसैत । ओ माँजरि कें कहलथिन्ह- ''भगवती आब आँहाँ विश्राम करू ।''

ओ घुमला आ एक्के लपकान मे महादेवक हाथीक सूँढ़ काटि लेलन्हि । महादेव हाथी पर सँ नीचा फानल । सावर ओकरा टीक पकड़ि कए नीचा बजारि देलन्हि आ ओकरा छाती पर लात दऽ कऽ ठाढ़ भए गेलाह । ककरो साधन्स नहिं होइ जे राजकुमारक रक्षा लेल आगू आओत ।

आर्त्तनाद कए उठल महादेव ।

''महादेव कें प्राणदान दियौन्ह ।''........ माँजरि सावर कें कहलथिन्ह—''लोक हमरा कहत जे सौतनिया डाहक कारणे, सौतिनक सहोदर भाएक प्राण अपहरण करौलन्हि ।''

सावर महादेव कें छोड़ि देलथिन्ह । ओ प्राण लए कऽ पड़ैल । ओम्हर जखन मैदान खाली भए गेलइ तऽ रक्तस्नाता लुरकी सेहो बिहुँसैत घुरि एलीह ।

पहर भरि नहि बितलइ कि सावरक चरवाह सभ दौड़ल आएल । ओ सभ सूचना देलकन्हि जे—''जैं कि सावर एम्हर एला, लगहि मे कतहु नुकैल चमार राजा कौल्हमकड़ाक सैनिक सभ अधिक संख्या मे प्रगट भेल आ सभटा गाय कें अपहरण कए चलि पड़ल ।''

कौल्हमकड़ा बड़ भारी दुष्ट राजा छल । ओ महाचोर छल । ओ लोक सभहिक गाय चोरा कए अथवा अपहरण कए लए भगैक । तइ गाय सभ कें अपना गढ़ मे बिना घास-पानिक ढाठि दइ । मरि गेला पर गायक खाल झिकवा-झिकवा ओ तकर बेपार करए । ओकरो गढ़ देवहा नदीक काते मे छलइ ।

गरजि उठल सावर —'' हमरा लोकनिक जीवन गोमाताक रक्षा लेल समर्पित अछि । चल रे चरबहबा सभ, कौल्हमकड़ा गढ़ कें लूटि लेब आ गाय सभ कें मुक्त करब आ नहि तऽ रणखेत मे युद्ध करैत गोमाताक उद्धारक प्रयास मे वीरगति कऽ प्राप्त करब ।''

लुरकी हुँकरलि -- ''हमहूँ चलब ।''

सावर हुनका बुझौलन्हि —''आँहाँ घर आंगनक रक्षा लेल अहीठाम रहू । एकटा बीहड़ षड़यन्त्र छैक । हमरा पीठ पाछू हमर शत्रु अइ महासुन्नरि सभ कें लए भागक प्रयास करत ।'' भकरार भए हँसि देलन्हि रणचंडी माँजरि आ घोघ तर सँ खिलखिला उठली मैना । लाजे कठौत भए गेला सावर । ओ बात बदलि कए बजलाह- ''हमरा लोक कहत जे जनी-जाति कें संग लए कऽ युद्ध करै छथि ।''

लुरकी ठमकि गेलि ।

अपना चरवाहा सभहिक संग सावर रणहुँकार करैत वेग सँ प्रस्थान केलन्हि ।

राजा कौल्हमकड़ाक दुर्गक द्वारि पर जमि कए युद्ध भेलइ । अगोराक वीर सभ जखनहि सुनलन्हि जे सावर एकसरे अपना चरवाहा सभहिक संग कौल्हमकड़ा सन दुर्धर्ष योद्धा संग युद्धरत छथि तऽ ओहो सभ राजलक कहला पर राजकुमार महादेवक अवज्ञा कए राजलक नेतृत्व मे युद्ध मे जुमि एला ।

पाँच दिनक भीषण युद्धक उपरान्त कौल्हमकड़ा कोनो गुप्त बाट दए कऽ गढ़ छोड़ि कए अपना रानी ओ बाल बच्चाक संग पड़ा कऽ कतो नुका रहल । गढ़क लौह-कपाट तोड़ि देल गेल । लक्ष-लक्ष गाय ढठिसार सँ मुक्त भेलीह । कुँवर अंगारवला दिनमणि मुकुट धारण केने शौर्य छिटका रहल छलाह । गाय सभ कें देवहा-धार मे हुकरैत-चुकरैत पानि पीबैत देखि हुनक करेज जुड़ा रहल छलन्हि आ ओ आनन्द विभोर भए रहल छलाह ।

सहसा ओ कने अकुला उठला आ राजल कें कहलथिन्ह— ''भैया आँहाँ दौड़ कए गाम पर जाउ । अपमानित राजकुमार महादेव ओहिठाम कोनो अनिष्ट ने कए रहल हो । हम कने गाय सभहिक ठेकान धरा कए अबैत छी ।''

''सहसा तों एना उद्विग्न कियैक भए उठलह सावर ?''..... राजल पुछलकैक । सावर आकाश दिस ताकि इशारा केलन्हि आ बजला-''देखइ

नहि छियैक राजल भैया । बाजिल कौआ देवहा-धारक ऊपर चकभाउर दैत कोना आर्त्तस्वर मे कांए-कांए कए रहल छइ ।''

सावर कें घूरइ मे जे बिलम्ब भेलन्हि तकर समाचार अनबा लेल, माँजरि आ मैनावती बाजिल कें उड़ौने छलीह । बाजिल, धार मे भसिआइत एकटा कारी तौला पर रहि-रहि कए झपट्टा दए रहल छल ।

राजल कहलथिन्ह—''कहुना तऽ कौवे ने । कहू ने एकटा अँइठ-कूँइठ दहाइत भसिआइत हाँडी पर कोना लुबधल अछि ओ ।''

राजल वीर लोकनिक संग वेग सँ अगौरा दिस प्रस्थान केलक । थाकल ठहियैल सावरक मोन देवहाक शीतल जल मे स्नान करक हेतु तलफए लगलइ । ओ अपन कवच उतारलन्हि, वस्त्र हटौलन्हि आ शस्त्र कें एकदिस रखलन्हि। कतबो खोलि अबैथ तऽ माथ परक किरीट झट दए खुजबे ने करन्हि । ओ किरीट पहिरनहि पानि मे पैसि कऽ उमकऽ लगलाह ।

क्रुद्ध भए उठल बाजिल कौवा । आ ओ सावर कें अधिक पानि मे जाए सँ रोकबा लेल हुनका पर अपना पाँखि सँ रहि-रहि कऽ आघात करए लागल ।

''थम्ह रे बाजिल ।''......क्षुब्ध सावर कहलथिन्ह-''तोहर अइ दुष्टताक दंड देने बिना जों रही तऽ ।''

करिया-तौला समीप एलइ आ तकरा तर सँ प्रगट भेलइ राजा कौल्हमकड़ा । निहत्थ सावर जा-जा सम्हरैथ कौल्हमकड़ा हुनका जहरैल भाला सँ वेधि देलकन्हि ।

''आह कापुरुष कौल्हमकड़ा, अपटी खेत मे तों हमर प्राण लेलैं । ओहो हम बाजिलक संकेत नहिं बुझि सकलहुँ । ''......सावर बजलाह आ हुनक प्राण उड़ि गेलन्हि ।

कोल्हमकड़ा, नृत सावरक दिनमणि किरीट खोलक प्रयास केलक । किन्तु एक्के झपट्टा मे बाजिल ओकर आँखि फोड़ि देलक । कनहा कोल्हमकड़ा जी जान लए कऽ भागल । कांय-कांय करैत शोकाकुल बाजिल, गीध-चील सँ सावरक शवक रक्षा करैत रहि-रहि भाउर काटए आ रहि-रहि कऽ एकटा तटवर्ती गाछ पर बैसि जाय ।

देवहा धार मे बाढ़िक पानि बढ़ए लगलइ तखनहि, ओही क्षण, अगौरा मे माँजरि देखलथिन्ह जे, मैनाक सिउँथ रक्तारोहनि भए एलन्हि । माँजरिक हृदय हाहाकार कए उठलन्हि । मैनावतीक कोंड करेज जेना अनेरो फाटए लगलन्हि ।

ओ रहि-रहि कए आकुल व्याकुल भेलि माँजरि सँ पुछथिन्ह—''दीदी एखनधरि बाजिल कियैक ने घुरलइए ।''

* * * * * * * * * *

प्रातःकालक समय ।

सुरुज जेना पुबरिया शोणितक सागर सँ रक्तस्नात भेल ऊपर भेलइ । आन्हर सासु-ससुर कें मैनावती आ माँजरि नहा-सोना कऽ पानि सँ ऊपर केलन्हि आ नुआ-धोती पहिरौलन्हि । ओ दूनू जखन स्नान करक लेल देवहा धार मे प्रवेश कएलन्हि तऽ दूर पर सँ बाजिलक करुण कांय कांय सुनाइ देलकन्हि । मैना कहलथिन्ह-''दीदी, मने बाजिल आबि रहल अछि ।'' माँजरि बाजलि-''संसार मे बहुत कौआ छैक । आउ झट दए नहा ली । भगवतीक पूजा करक अछि ।''

मैना जौं कि पानि मे डूब देलन्हि हुनका पानिक तर मे धह-धह इजोत देखि पड़लन्हि । ओ डरे चिचिया उठलीह आ भरिपांज कए माँजरि कें पकड़ि लेलथिन्ह । ऊपर भए ओ लोकनि देखलथिन्ह जे धारक वेग मे एकटा शव बहैत चल आबि रहल अछि आ ओहि पर सँ आलोक छिटकि रहल छैक । चील आ गीध सँ ओकर रक्षा करैत ओहि पर एकटा कौआ मड़ड़ा रहल अछि ।

ओ कौआ बाजिल छल ।

माँजरि आ मैना कें देखतहि दुःखक अधिक उद्रेकक कारणें ओ ओहि ठाम सँ सहटि गेल । दिनमणि मुकुटक चमकी सँ शव चिन्हवा मे एलो भरि नहिं भेलइ ।

मैना आ माँजरि हाक्रोश कए उठलीह । बूढ़ माय-बापक हृदय विदीर्ण होमए लगलन्हि । मैनावती भरकच्छ बन्हलन्हि आ धार मे बढ़ए लगली । आब ओ हेलि रहलि छलीह । तीव्र धार मे आगू बढ़ि कऽ ओ शव कें करेज सँ लगा लेलन्हि । शवक माथ पर किरीट प्रातः किरण मे आर अधिक द्युतिमान भए रहल छलइ । गोहि पड़ियार कि आन कोनो जलचर छिटकैत ज्योतिक भय सँ ओहि शव दिस ताकियो कए पड़ा जाइक ।

मैना अपना प्रियतमक शव कें ऊपर अनलन्हि । श्रीखण्ड घसि कए चाननक लेप केलन्हि । पीताम्बरी पहिरा कए तेल-फुलेल औंसलथिन्ह । तखन माथपरक किरीट खोलि कऽ ओ माँजरि कें दैत कहलथिन्ह —''जगजीत-दादा

घुरैथ तऽ हुनका समर्पित कए देबन्हि आ कहबन्हि जे गोमाताक रक्षा लेल हुनक भाय अपन बलिदान देलथिन्ह ।''

मैनावती पुनः स्नान केलन्हि । पटोर धारण केलन्हि, केश-विन्यास केलन्हि आ मनोहर आभरण पहिरि सिउँथ मे सिन्दूर लगौलन्हि । भगवती कें प्रणाम कए पतिक मस्तक कोरा मे लए कऽ पूर्वाभिमुख बैसि गेलीह आ आँख मुनितहि ओ ध्यानस्थ भए गेलीह ।

एक क्षण बीतल, दू क्षण बीतल कि तेसर क्षण मे हुनका शरीर सँ अग्नि प्रगट भेल आ सुगन्धित ज्वाला ऊपर अठए लागल प्रज्वलित मैना पतिक शव कें आलिंगन पाश मे बान्हि लेलन्हि । आब शव सेहो प्रज्वलित भए उठल ।

हजार-हजार कंठ सँ सावर आ सतीक जयजयकार गूँजल आ पुष्प वर्षा होमय लागल ।

मैना प्राणेशक धधकैत शव नेने आगूक धारा मे जलझम्प दए देलन्हि । जाहि ठाम ओ जल मे विलीन भेलीह ओहि ठाम धारक तर सँ सात-सात हाथ बामरि ज्वाला, जलक ऊपर धधकैत रहललइ जेना धाराक नीचा मे चिता जरि रहल हो ।

सहस्त्र-सहस्त्र लोक वीर सावर ओ सती मैनावती कें तिलाञ्जलि, पुष्पाञ्जलि आ श्रद्धाञ्जलि अर्पित कए घूरि गेल । सभहिक अन्त मे घुरली माँजरि, सासु-ससुरक संग शोक-सागर मे डुबकी दैत ।

रहि गेल ओहि ठाम एकाकी कौआ बाजिल । समीपक पीपरक ठारि पर बैसल ओ गरदनि करुण स्वर मे कांय-कांय कए रहल छल ।

--o--

सझौती - राजा

* * * * * *

मॉजरि, लोरिकक नाम पत्र लिखलन्हि ।

सिन्दूर सँ सोहाग लिखलन्हि । कनगुरिया आंगुर चीरि कऽ शोणित सँ सावरक वीरगति आ' मैनावतीक ''सत्त' लिखलन्हि तइ संगे कौल्हमकड़ा सँ प्रतिशोध लऽ गायक उद्धार करक लिखलन्हि । सभहिक पाछू अश्रुसिक्त काजर सँ अपन वियोग लिखलन्हि आ' ओइ पत्र कें मोड़ि कऽ , रेशमी डोर सँ ओकरा बाजिल कौआक पएर मे बन्हलन्हि ।

ओ बाजिलक पएर सँ स्वर्ण-जिजीर खोलि देलथिन्ह आ' ओकरा कहलथिन्ह -''तोहर बड़ असरा अछि बाजिल । हमर सौतिन बड़ छलनामयी छथि । हुनका सँ बचि कऽ तों प्राणेशक अपनहि हाथ मे पत्र दिअहुन्ह ।''

बाजिल उड़त आ' छनघड़ी मे आसमान मे विलीन भए गेल । ओ पूब दिशा मे बढ़ल । किछुए काल मे ओकरा राजा कौल्हमकड़ाक गढ देखाई देलकैक । गढ़ मे एकटा काठक बड़का अटारी बनल छलैक ताहा पर कौल्हमकड़ाक रानी सभ नहानहा अपन केश सुखा रहलि छलि । बाजिल एम्हर-ओम्हर दृष्टि खिड़ौलक तऽ बाध मे चरवाहा सभ बनगोइठा पजारि कऽ बूट ओराहि रहल छल । बाजिल नीचा आएल आ' चांगुर मे एकटा अधजरुआ गोइठा लऽ कऽ उड़ि गेल आ' ओइ गोइठा के कौल्हमकड़ाक अटारीक एकटा काठक दोगठि मे राखि देलकैक । हू-हू कऽ बहैत पछवा मे ओ गोइठा लगले धधकि गेलइ आ' ओकर ज्वाला दावाग्नि जकाँ पसरए लगलइ । लगले सौंसे गढ़ मे आगि पसरि गेलइ । गाय सभ खोलि देल गेलैक आ' ओ सभ जहाँ-तहाँ

भगलइ। अगौराक गाय अगौराक बाट धेलक। एक्के पहर मे समस्त गढ़ स्वाहा भए गेलइ। बाजिल प्रसन्न होइत आगू बढ़ल आ' सूर्यास्त होइत-होइत सोन्हौली घाटक चानन-उद्यान मे उतरि गेल। थकनी सँ मारचूर भेल ओ एकटा चाननक वृक्ष पर विश्राम करए लागल। ततेक ठेहियैल छल ओ जे दोसर दिन भोर भेलो पर ओंघाइते रहल।

चनैन ओइ भोर मे उद्यान भ्रमण कऽ रहलि छलि। मालिन सभ ओकरा जा' कऽ सूचना देलकइ-''जकर लोल आ' चांगुर सोना सँ मढ़ौल छइ तेहन एकटा दिव्य आ' विशाल कौआ सभ सँ बड़का चानन वृक्षक उँचका ठारि पर बैसल ओंघा रहल अछि।''

चनैनक करेज चनकि उठलइ। एकटा एहने कौआ तऽ माँजांग्यो पोसने छथि। कतहुँ वैह ने हुनके कोनो समाद लऽ कऽ पहुँचल हो!

ओ सोनाक बाटी मे, विष मिझरौल खीर मँगवा कऽओहि बिरिछ तऽर राखि देलथिन्ह। बाजिलक भक् छुटलइ तऽ ओकरा जोरगर भूख बूझि पड़लइ। नीचा मे सोनाक कटोरा मे ओ खीर देखलकैक तऽ उतरि कऽ धरती पर आबि गेल।

''सभ खीर होइ छइ इजोरिया सन उज्जर किन्तु ई छल ओड़हूल सन लाल। जाहि ठाम धरि बाटी मे खीर छइ तइठाम तक बाटी करिछौंह भए एलइए। बाटी सँ अतर-फुलेलक सुगन्धि आबि रहल छइ। अबस्से चनैन अपने हाथे एहि बाटी के छूने हैत। ओ स्वयं विषयौवना अछि तैं अइ खीर मे विष मिझरौने हो तऽ कोन आश्चर्य।'' ......बाजिल विचारलक आ' चांगुर सँ ओहि बाटी के उनटा कऽ उड़ि गेल। ओ गाछे-गाछ घूमि कऽ अमृतोपम फल सभ चोभि कऽ अपन भूख शान्त केलक।

ओम्हर नदीक घाट पर चनैन स्नान कए रहलि छलीह। हुनक सात-सात हाथक लट हिलकोर पर नागिन जकाँ नितरा रहल छलन्हि। हुनक मुँह लगन्हि जेना धारा मे स्वर्ण कमल फूलैल हो। हुनक उरोज जखन पानिक ऊपर रहन्हि तऽ लगइ जेना दूटा उनटल कनक-कटोरा पानि मे उबडुब कए रहल छइ। बाजिल एकटा सूखैल ठँहुरी लऽ चनैनक मुँह पर खसा देलकइ आ' चांगुर मे थाल-कादो भरि-भरि ओकर पटोर आ' अंगिया के भ्रष्ट कए देलकइ।

क्रुद्ध नागिन जकाँ फुफकार छोड़ैत ओ भिजले वस्त्र पहिरने घूरि गेली आ' छाती पीटि-पीटि कऽ घौना पसारए लगलीह।

हुनक नान्हिये टा बेटा इन्द्रजीत दौड़ल एलैक आ' कानि उठलैक- 'माय-माय।' चनैन ओकरा दिस तकबो ने केलक आ' असोधाह कनैत रहलि।

लोरिक आबि कऽ पुछलकन्हि -''झट दए बाजू जे के आँहाँक अपमान केलक अछि। जँ ओ कोनो राजा होएत तऽ ओकर नगरी नष्ट कए तकरा श्मशान बना देबैक। जँ कियो प्रजा होएत तऽ ओकरा कूल-खूट सहित भकसी झोका देबैक, नहि जँ कियो चोर होएत तऽ ओकर बुट्टी-बुट्टी काटि कऽ चील कौवा के खुआ देबैक।''

चनैन कुहरली -''आब तऽ अइ घाट पर हमरा नहेनाइयो दुर्लभ अछि। कतहुँ सँ आएल एकटा कौआ हमरा दुर्गञ्जन कए कऽ छोड़ि देलक अछि।''

लोरिक व्याधा सभ कें बजबौलन्हि आ' आज्ञा देलन्हि जे ओहि दुरान्त कौआ कें तुरन्त तीर सँ समाप्त कए देल जाय।

एक आएल, दू आएल, तीन आएल, पांच आएल आ' एक्कैस व्याधा आएल। व्याधा सभ ठनकल, कमान सभ झनकल आ'' तीर सभ उड़ल। किन्तु बाजिल बहुत ऊपर आकाश मे चकभाउर दीतहि रहल।

व्याधा सभ निराश भऽ कऽ बाजल -''ई कोनो असाधारण कौआ छैक। एकर लोल आ' चांगुर अंगोर जकाँ दमकइ छैक।

लोरिक ओहि अद्भुत कौआ के देखक लेल घाट पर एलाह। हुनका देखितहि बाजिल, गिरह मारैत, पेचक प्रर्दशन करैत झपट्टा दऽ कऽ हुनका विशाल बाँहि पर उतरि गेल।

''आहाहा, ई त बाजिल छियैक।''-लोरिक बजलाह आ' हुनका आँखि सँ साओन-भादो बरिसय लगलन्हि। बाजिल पत्र वला पएर आगू बढ़ा देलकन्हि। लोरिक पत्र लऽ लेलन्हि आ' पढ़ुआ कें बजा कऽ पत्र पढ़बए लगलाह। ओ एक-एक शब्द पर हुचुकि हुचकि कऽ कनैत रहलाह। चनैन एकटा धधकैत खोरनाठ आनि कऽ बाजिलक पांखि झरकाबए चाहलन्हि किन्तु लोरिक हुनका हाथ सँ जारनि छीनि कऽ धार मे फेकि देलन्हि।

लोरिक कहलथिन्ह -''बाजिल, हम चललहुँ जन्मभूमि कऽ।''

चनैन, लोरिकक पएर पर लोटान देमए लागलि -''हे प्राणनाथ, हम कोन मुँह लऽ कऽ अगौरा गाम जाएब आ' आँहाँ बिना अइ सोन्हौली मे हम कोना जीब ?''

''आँहाँ चलू हमरा संग । करुणामयी माँजरि अबस्से हमरा आ' आँहाँ कें क्षमा कए देतीह । आँहाँ हुनका संग दूध मिश्री जकाँ रहब ।''.......लोरिक चनैन कें बुझौलथिन्ह ।

''हमरा ओहन सौतिन संग नहि बनतैक ।'' चनैन झमकि उठलीह आ' ओहिठाम सँ चलि पड़लीह ।

लोरिक अपना सेना-नायक कें बजा कऽ आज्ञा देलन्हि -''हम अगौरा जाएब । अविलम्ब प्रस्तुत भए कऽ प्रयाणक बाजा बजाउ ।''

* * * * * * * * * *

तीसी फूल सन वर्ण । तिल फूल सन नाक । भौरा रंगक केश । मदालस आँखि आ' उन्मत्त जुआनी । ओ रूपसी बनिजारिन अपन एक लाख बड़द पर बेपार करैत छलि । जखन ओ अपना शिविर मे बैसि कऽ संगीत अलापए लागए तऽ पशुओ-पक्षी तक विमुग्ध भए जाइक । जखन ओ वीणाक झंकार करए लागए तऽ ओकर लाखो टा छिरियैल बड़द ओकरा चारू भर गोठिया जाइक ।

कतेको राजकुमार, योद्धा आ' नरपुँगव अइ रूपसी बनिजारिनक रूपशिखा पर फतिंगा जकाँ झरकि चुकल छलाह । एकरा समक्ष आबि कए केहनो-केहनोक करेज दरकए लगइ छलन्हि आ' ओ ओकरा नयनवाण सँ विद्ध भए लोटन परबा बनि जाइत छलाह ।

इजोरियाक मुस्कान सँ मधुऐल सांझ !

अपना छविमय शिविरक आगू मे चानन चौकी पर बैसलि ओ बनिजारिन एकटा कोनो रागिणी अलापि रहलि छलि कि तखनहि चनैन ओकरा सम्मुख अपन पुत्र सहित पालकी सँ उतरलीह आ' आँजुर भरि-भरि अलभ्य रत्न सभ हुनका सम्मुख राखि देलथिन्ह ।

बनिजारिनिक आलाप थम्हि गेलैक आ' ओ तानपूरा एक दिस राखि कए बाजलि -''अइ रतन सभहिक मोल मे तऽ हम अपनहि बिका जाएब हे रानी । आज्ञा दिऔ जे आँहाँ कें कोन-कोन सौदा चाही ।''

''हम याचना करए आएल छी ।'' -कनैत चनैन कहलथिन्ह —''हमर पुरुष हमरा सँ रुष्ट भए हमरा सौतिनक ओहिठाम जा रहल छथि । ई रतन सभ लीअ आ' हुनका अपना रूपपाश मे बान्हि कए एत्तहि अँटका लीअ । हम पुनः

पाँच लाख स्वर्ण-मुद्रा दए कऽ आँहाँ सँ हुनका कीनि लेब । तखन ओ हमर किनुआ पति भए जेताह आ' हुनका पर हमर एकाधिकार भए जायत ।''

रूपगर्विता बनिजारिन प्रसन्न होइत बाजलि -''ओ के थिकाह ? कने हुनकर समख्या कहू ।''

''ओ नियम-निष्ठा सँ भगवतीक सांझ दैत छथि आ'' सझौती राजाक नाम सँ विख्यात छथि । ओ अपना सेनाक संग अनुमानतः सावा पहर मे एहिठाम जुमि एताह । सुपास देखि रात्रि-विश्राम एहिठाम करताह । सेना लेल भोजन-छाजनक सामग्री अहीं सँ किनताह । तही क्षण मे आँहाँ जेना-तेना हुनका सम्मोहित कए लेब ।'' -चनैन कहलथिन्ह ।

''हा हा हा हा ।'' -हँसि देलकन्हि ओ बनिजारिन -''आँहाँ देखब जे हम ओहि पुरुष कें कोना पाँखि काटल बाज जकाँ स्थिर कए दैत छियन्हि । ओ एहिठाम सँ बचि कए नहि जा सकैत छथि । मात्र आँखि लड़इ भरिक विलम्ब अछि ।''

ओ चनैन कें सम्मानक संग अपना शिविर मे लऽ गेलीह आ हुनक भोजन ओ विश्रामक व्यवस्था केलन्हि ।

ओम्हर लोरिक चनैन कें, भवन अटारी मे तकलन्हि, चानन-उद्यान मे तकलन्हि आ नदीक तट पर तकलन्हि । चनैनक कोनो सन्धान नहि भेटल ।

''मान करैत रहू मानिनी । हम नहि थम्हब आब ।'' -ओ गुम्हड़ला आ' कटग घोड़ा पर बैसि कऽ अपना सेनाक आगू-आगू चलि पड़लाह । डेढ़ पहर राति बीतैत-बीतैत बाटक कात बनिजारिनक शिविर देखि सुपास पाबि, अपना सेना कें ओहिठाम रात्रि-विश्राम करक आज्ञा देलथिन्ह आ' स्वयं सेना लेल भोजन-छाजनक सामग्री कीनय चलला ।

बनिजारिन अपना शिविरक सुसज्जित कक्ष मे, एकटा रत्न जटित आसन पर हुनका बैसौलक आ' हुनक अति पौरुषेय रूप देखि मुग्ध भए उठलि ।

लोरिक बजलाह—''हमरा अपना सेना लेल वस्तु-जात चाही बनिजारिन ।''

बनिजारिन अपना परिचारक-प्रधान कें आज्ञा देलक —''सझौती राजा कें जइ-जइ वस्तुक आवश्यकता होन्हि से हिनका सैनिक के तौला दहुन । सझौती राजा हमरा जे मूल्य देताह से हमरा सहर्ष स्वीकार हएत ।''

परिचारक प्रधान आज्ञा पालन करए चल गेल । बनिजारिन अपना कुशल परिचारिका सभ कें बजा कऽ कहलकैक —"हमरा सझौती-राजाक आतिथ्य योग्य सिङार कए दए ।" परिचारिका सभ पटोर, कंचुकी, तेल-फुलेल, ककबा, पुष्पमाला, आसव पान-पात्र आ' गुआ-पान ओहिठाम राखि कऽ चल गेलि । रहि गेली बनिजारिन आ' सझौती-राजा ।

"हे राजा अतिथि, कत्तेक मादक छइ ई शीतल रात्रि । अहीं आइ हमरा केशपाश मे पुष्पाभरण सज्जित करू । आँहाँ अपनहि हाथें हमर ई अंगिया बहार कए नवीन चोली धारण कराउ । जानि ने जानि आँहाँ कें देखि कऽ , हमर शरीर कियैक शिथिल भेल जा रहल अछि । ई पटोर हँटा कऽ आँहाँ ई नव पटोर पहिरा दीअ हमरा । हम आँहाँ कें आसव-पान करा कऽ गुआ-पान खुऐब आ' लाल पलंग पर बैसा कऽ किन्नरि दुर्लभ गीत सुनैब ओ नृत्य देखैब ।" बनिजारिन नयनवाण फेकैत रभसि-रभसि कऽ बाजलि ।

अडिग रहला लोरिक ।

ओ अपन दृष्टि नीचहि केने रहला आ' बजलाह -"जकरा संग सात भामरि देलिअइ, मड़वा चढ़ि कए सूर्य-चन्द्र आ' अगिन के साक्षी राखि कए जकरा सिउँथ मे सिन्दूर भरलियैक तइ तिरिया सँ बिछुड़ना आइ बारह बरिस भए गेल । तकरे सूरति आइ हमरा हिया के सालने जा रहल अछि । ओहि कमलमुखीक मुँह देखने बिना हमरा पलोभरि लेल चैन कहाँ हे सुन्दरी, जे हमरा वियोग मे झूर-झमान भए रहल छइ । हम कोनो चरित्रभ्रष्ट व्यक्ति नहि छी । एकटा वीर पुरुष, शापित भेला पर नपुँसक भए गेलाह । तनिके द्वारा सहर्षत्यक्ता तरुणी कें हम दोसर पत्नी बनौल । हमर प्रथम पत्नी श्रद्धारूपिणी सती माँजरि हमरा हृदय मे बसइ छथि आ' दोसर पत्नी बुद्धिरूपिणी राजकुमारी चनैन हमरा मोनक उमंग मे । अइ दूनू कें छोड़ि आइ धरि हम केहनो सुन्दरी—राजा हरबाक महासुन्नरि राजमहिषी दुहबियो-सुहबी दिस दृक्पात नहिं कैल ।"

बनिजारिन लजा गेलि । ओकर गर्व खंड-पखंड भए गेलैक । ओ नीति-कुशला विनय केलक -"जों हम सती माँजरि लेल एकटा दासी दी, आ' हँसैत, बजैत आ' कनैत एकटा खेलौना दी तऽ की ओ तकरा स्वीकार करती ?"

"ओ करुणाक देवी छथि ।" लोरिक कहलथिन्ह ।

बनिजारिन, लाजे घार झुकौने चनैन आ' सलोना नेना इन्द्रजीत कें आनिं कए उपस्थित केलन्हि ।

''हे मानिन, आब मान छोड़ू । नहाउ-खाउ आ' अपना लावण्यमय सखी बनिजारिनक मूल्य चुकती करू ।'' —लोरिक बजलाह आ' ओहिठाम सँ उठि कऽ अपना शिविर दिस चलि पड़लाह ।

अनुभवी बनिजारिन चनैन कें कहलथिन्ह -''आँहाँक पुरुष महायोद्धा छथि । छल-कपट नहि बूझइ छथि । हम जे सिखबइ छी से जौं आँहाँ कए सकी तऽ हिनकर मोन माँजरि सँ सहटि कऽ अहीं पर केन्द्रित रहतन्हि ।''

''से कोना ?'' चनैन व्याकुलता सँ प्रश्न केलक ।

बिहुँसि उठलि बनिजारिन -''अपना पति सँ बिछुड़ना, बारह बरिस बीति रहल छन्हि माँजरि कें। आँहाँ अपना पुरुष कें प्रमाणित कए दियौन्ह जे अइ दीर्घ अवधि मे, महारूपसी माँजरि किन्नहुँ अपना यौवनक चांचल्य कें नहि सम्हारि सकलि हेतीह । ओ किन्नहुँ सती नहि रहि गेलि हेतीह ।''

हर्षोत्फुल्ल भए उठली चनैन । ओ बनिजारिन कें भरि पांज कऽ पकड़ि कए कहलथिन्ह -''आउ हे, आँहाँक लट-लट के मोती सँ गूहि दी ।''

* * * * * * * * * *

कनहा कौल्हमकड़ा एक्को क्षण लेल लोरिक सँ रण नहि टेकि सकल । पलघड़ी मे ओकर मस्तक छिटकि कऽ खसि पड़लैक । ओकर सेना छिरिया कऽ पड़ा गेलइ । ओकर गढ़ लूटि लेल गेलइ आ' ओकर सात लाख गाय चारू भरक लोक सभ मे बांटि देल गेलइ । लोरिक अपना सेनाक संग अगौरा गामक समीप आबि गेल आ' देवहाक कात कपड़-घर सभहिक नगरी जकाँ बनि गेलइ ।

फराके सँ राजा सहदेवक सतखंडा भवन देखाइ दए रहल छलइ । चनैन कहलकैक लोरिक सँ- ''बाजिल कें एखन नहि जाय दियौक । संगहि राखू । आँहाँ शिविर मे सँ जूनि बहराउ । हमहूं शिविरे मे रहि सभटा प्रबन्ध करब । हम सभ अहिना दू-चारि दिन छद्मवेष मे रही । जकरा लेल आँहाँ आकुल-व्याकुल भेल दौड़ल एलहुँ अछि तकर परीक्षा तऽ भए जाए जे ओ सरिपहुँ आँहाँ भरोसे सती छथि वा नहिं ।''

लोरिक क्रुद्ध भए उठल —''हम कोन मुँहे हुनक परीक्षा लेबन्हि ।''

चनैन हुनका मुँह दूसि लेलथिन्ह —"तऽ हमहीं परीक्षा लए कऽ सद्यः प्रमाणित कए दइ छी जे ओ आँहाँक प्रतीक्षा मे सती बनलि नहि वैसलि छथि ।"

लोरिकक कोंढ-करेंज खँघरए लगलन्हि- "हा भगवती, बगुली कोना हंसिनीक परीक्षा लेतैक ।"

ओ चनैन कें ललकारि लेलन्हि-"ईहो कऽ कऽ देखि ले गे ईर्षाक सर्पिणी ।"

चनैन धैर्यक संग बाजलि-"आँहाँ केवल अज्ञात सझौती-राजा बनल रहू आ हम बनलि रहब सझौती-रानी । दूइये दिन मे जखन माँजरि अइ अपरिचित सझौती राजाक अंकशायिनी बनि जेती तऽ आँहाँ के हुनक सत्त बुझा जाएत । घर-घर दूध बेचि कऽ जीवनयापन करए वाली महा-सुन्नरि माँजरिक सत्त धएले-जोगौल नहि हेतन्हि से जानि लीअ ।"

"सिंहनी कें जानि-समानि कऽ मुँह दुसबइ हे खिखिरनी ।"....लोरिक हुमड़ल-"कतहु आँहाँ ओहि सत्त के ज्वाला मे जरि कए भस्म ने भए जाइ ।"

"जे होइक हेतइ से हेतइ"-चनैन वाजलि—"आँहाँ पहिने आँखि पसारि कऽ हुनक सतपनक लीला तऽ देखि लीअ ।"

चनैन सौंसे अगोरा गाम मे ढोलहो दिया देलकैक जे, गामभरिक जत्ते दूध हो से सभटा सझौतीराजाक शिविर मे बेचल जाय नहि तऽ सौंसे गाम लूटि लेल जतेन्ह ।

गाम भरिक लोक दूध लऽ कऽ शिविर दिस चलल । माँजरिक ससुर आन्हर आ घर मे आन कियो पुरुष-पात्र नहिं । ओ लुरकी कें संग कए चरवाहा सभहिक माथ पर दूध रखवा कए शिविर पर एलीह ।

चनैन आन सभहिक पात्र मे दूधक मूल्य अन्न आ पैसा रखवा देलथिन्ह किन्तु माँजरिक दूधक डाबा सभ मे हीरा-रतन रखवा कए ऊपर सँ अन्न सँ झाँपि-झांपि देलथिन्ह ।

माँजरि अपना आंगन एली तऽ दूधक डाबा सभ कें झारलन्हि । ई की ? ओइ सभ मे सँ हीरा-मोती झरझरा-झरझरा खसए लागल । ओ कानि उठलीह— "अबस्से हमरा पर कुदृष्टिक कारण सझौती राजा हमरा डाबा सभ मे मणि-माणिक्य भरबा कऽ हमर अपमान केलक अछि । खुलैन जखन ई सुनलन्हि तऽ आर भोकरए लगलीह—"अबस्से ई सझौती-राजाक संग अपन

सत्त गमा आयलि अछि नहि तऽ दूधक दाम मे के ककरा अनमोल रतन दइ छैक ।''

बूढ़ कुब्बे भूमि पर लोटए लागल-''सभ किछु गमा कए केवल सतीक सत्तक सहारा छल । सेहो आइ लुटि गेल ।''

कुब्बेक चित्कार सँ राजल दौड़ल आएल आ सौंसे गाम उमरि पड़ल ।

कनैत माँजरि सभ कें शान्त रहए कहलथिन्ह । आ भगवती गह्वर चलए कहलथिन्ह ।

गह्वर मे लोरिकक रोपल एकटा बड़ पैघ चाननक वृक्ष छलइ । लोरिक ओकरा गंगाजल सँ पटबैत छलाह । सावरक मृत्युक उपरान्त ओ वृक्ष एके दिन मे सुखा गेलइ । माँजरि भगवती कें प्रणाम कए ओहि वृक्षक खोढ़रि मे बैसि गेली आ लुरकी ओइ मे आगि लगा देलकैक । चानन वृक्ष प्रज्वलित भए उठलइ आ धू-धू जरए लगलइ । माँजरि ओहि जवाला मे प्रस्फुटित स्वर्ण-कमल जकाँ सुशोभित भए उठलीह । हुनकर रोइयों ने भगन भेलन्हि । साड़ीक एक्कोटा सूत ने झरकलइ । वृक्ष जखन भस्म भए गेलैक तऽ सती ओहिठाम सँ उठि कए भगवतीक चरण मे मस्तक टेकि देलन्हि ।

'जय मिथिलाक बेटी भगवती मैथिली सती माँजरि'—जयजयकार सँ आकाश कम्पायमान भए उठल । माँजरि पर पुष्प वर्षा भेल । हुनक आरती उतारल गेल ।

दिनुका तेसर पहर बीति रहल छलइ । बूढ़ कुब्बे हुँकार केलन्हि—''बेटी चलू हम सभ ओइ सझौती-राजा कें युद्ध लेल ललकारी । अाँहाँ पर कुदृष्टि राखए वला दुष्ट राजाक प्राण लए लेब नहि तऽ हमही सभ रणभूमि मे प्राण दऽ कऽ वीर गति प्राप्त करब ।''

राजल प्रस्तुत भए गेलाह । आगू-आगू राजल बूढ़ कुब्बेक हाथ पकड़ने चलला । तकर पाछू लूरकी एक हाथ मे बज्र समांठ नेने माए खुलैन कें सहारा देने चलली आ सभक्हिक पाछू, भगवतीक खर्ग नेने चलली सती माँजरि ।

ओ सभ सझौती-राजाक शिविर लग आबि कए रण-नाद केलन्हि । लोरिक नौलक्खा वस्त्राभूषण सं सुसज्जित, माथ मे द्युतिमान मुकुट धारण केने बाहर एलाह । राजल ओइ मुकुटक झलमली दिस तकिते रहि गेलाह । लुरकीक आँखि राजाक चकमक करैत कंठाभरण पर अँटकि गेलन्हि आ सती माँजरि

धरती दिश दृष्टि गड़ौने छलीह। ओइ छवि छटा मे लोरिक कें कियो नहि चीन्हि सकलन्हि।

कुब्बे दहाड़ि उठला-''हमरा पुतहु पर कुदृष्टि राखएवला सझौती-राजाक हाथ तऽ कियो कने पकड़ा दे।''

राजल लपकि कए सझौती-राजाक हाथ धऽ कऽ कुब्बे कें पकड़ा देलकन्हि। कुब्बे हुनका झीकि कए अपन बज्र बाहु-पाश मे कसि लेलन्हि आ' कसिते गेलाह।

लोरिक निश्चल रहला।

कुब्बे हँपसए लगलाह आ बजलाह -''बेटा राजल, ई सझौती-राजा आन कियो नहि, अपने बौआ लोरिक छैक। अइ मेदनी पर आन कियो एहन नहि जनमल अछि जे हमर वज्र आलिंगन सहि सकए। आन कियो भरकुस्सा भए जाइत। एकरा शरीर सँ लोरिकक शरीर सन सुगन्धि आबि रहल छैक।''

ओ लोरिकक पीठ हँसोंथय लगलाह-''लोरिक छियै। वैह छै।''

वात्सल्यक उद्रेक सँ हुनक आँखिक मणि घुरि एलन्हि। ओ मगन भए उठलाह आ' लोरिकक ललाट चूमि लेलन्हि— ''जय भगवती, आँहाँ बेटो घुरा देलहुँ, आँखियो घुरा देलहुँ।''- ओ पुलकित होइत बजलाह-''लोरिकक माय, वैह देखिऔ ने लोरिक माथ परक राजमुकुट केहन शोभायमान भए रहल छैक।'' लोरिकक मायक आँखिक ज्योति सेहो दमकि उठलन्हि।

लोरिक अपना माय-बापक पएर पर खसि पड़लाह। खुलैन हुनका उठा कऽ करेज सँ लगा लेलन्हि।

लुरकी शिविर मे पैसि गेलीह। बाजिल स्वर्ण जिंजीर सँ बान्हल छल ओ हर्षे कांय-कांय कए उठल। लुरकी ओकरा खोलि देलन्हि आ ओ लुरकीक कनहा पर बैसि गेल। आगू मे भेटलइ चनैन। लुरकी चनैनक झोंटा पकड़ि हुनका घिसिअबैत बाहर आनि, हुनका छाती पर एकटा लात राखि कए ठाढ़ि भए गेलीह आ बाघिन जकाँ गुम्हड़ैत बजलो-''गे हमरा बहिनक सोहाग छीनए वाली, आइ तोहर छाती अइ समांठ सँ कूटब आ' तइ रक्त सँ अक्षत भिजा कऽ भगवतीक पूजा करब।

आर्त्तनाद कए उठल इन्द्रजीत। ओकरा माँजरिक आँखि मे करुणा देखि पड़लैक आ ओ माँजरि कें भरिपांज कऽ पकड़ि कऽ कुहरि उठल-''हम आब कोन दूध पीबइ गे माय''

माँजरिक आँखि सँ गंगा-जमुना बहए लगलन्हि। ओ इन्द्रजीत कें उठा कए छाती सँ सटा लेलन्हि आ' लुरकी के कहलथिन्ह—''विधाता सभ नारी कें दूध आ फूल दए कऽ सिरजन केलथिन्ह अछि। अइ नेनाक दूध नहि छिनही बहिन।''

लुरकी चनैन कें प्राणदान देलन्हि।

लोरिक, लुरकीक प्रति कल जोरि कऽ कहलथिन्ह-''हमर अपराध क्षमा करबइ देवि।''

ओ माँजरिक चरण मे माथा टेकि कऽ बजलाह-''अइ पापी कें शरण दिऔक करुणामयी।''

लुरकी इन्द्रजीत कें माँजरिक कोरा सँ अपना कोरा कऽ लेलन्हि। माँजरि लोरिक कें उठबैत हुचुकि-हुचुकि कऽ कनैत कहलथिन्ह-''एना कियैक हमरा पर पाप चढ़बैत छी प्राणेश।''

ओ लोरिकक चरण पर मस्तक राखि, हुनक चरण-रज अपना मस्तक आ आँखि मे लगबैत उठि कए कलजोरि ठाढ़ि भए गेलीह।

लोरिक आगू बढ़ि कऽ राजल सँ लपटि गेलाह।

माँजरिक चरण कें अपना नोर सँ पखारैत चनैन हुचकय लगलीह-''अइ चरण कें छोड़ि कए आब हमर कोन आसरा छैक भगवती।''

हुनका भग्पांज कए उठा लेलथिन्ह माँजरि आ करुणासिक्त स्वर मे कहलथिन्ह—''दूटा नदी अथवा नारी जाहिठाम एकाकार होइ छैक ओहिठाम पवित्र प्रयाग बनि जाइ छैक, राजकुमारी।''

—o—

छिकार

* * * * * * * * * *

कुब्बे आ' खुलैन कें गंगा लाभ भेलन्हि। माय-बापक सुख-श्राद्ध कए, आ सावर ओ मैनावती कें पिण्ड दए, लोरिक जखन सदल-बल गया-गंगा सँ घुरला तऽ अपना गामक लगीच आबि कऽ, नगर विश्राम करक लेल देबहाक कात मे एकठाम सुरम्य स्थान देखि, डेरा देलन्हि। देखिते-देखिते ओहिठाम कपड़घर सभ ठाढ़ भए गेल। ओकरा एक दिस बड़ी दूर तक पसरल बेल-बोनी छल जकर भूमि भरि ठेहुन नवदुर्बा सँ आच्छादित छलइ। लोरिक विचारलन्हि जे कियैक ने एहिठाम संग-समाज सहित पाँच दिन विश्राम करी।

प्रातःकालक समय। लोरिक, चनैनक पुत्र इन्द्रजीत आ माँजरिक पुत्र भवाजीत कें संग केने बाहर आएल छलाहे कि एकटा सुदर्शन नट तड़ाक-तड़ाक ताल ठोकैत हुनका आगू एलन्हि। हुनका पाछू-पाछू आएल तेहने विशाल एकटा श्वेत वृषभ।

"युद्ध दे। युद्ध दे।" ......नट ललकारा देलक।

लोरिकक मल्ल प्रवृत्ति जागि उठलन्हि। ओ अपन वस्त्र उतारि कऽ ताल ठोकए लगलाह।

गठल शरीर। भकुऐल आँखि। हाथ मे एकटा सिंगा। ओ नट बड़ बलशाली प्रतीत भए रहल छल। ओ क्षणे ताल ठोकए कि दोसरे क्षण नाचऽ लागए।

एहन मोहक मल्ल लारिक कहियो ने देखने छलाह। "युद्ध दे। युद्ध दे।" बेर-बेर अबैत ललकारक ध्वनि। बीच-बीच मे ओ नट तेना कए सिंगा तड़-तड़ा दैक जे चिड़इ-चुनमुनी सभ भयार्त्त स्वर करैत उड़ए लगइ।

लोरिक कें ओकर अक्खड़पनी असह्य भए उठलन्हि। ओ कच्छा चढ़ौलन्हि आ ओइ नट सँ भीड़ि गेलाह। किन्तु किछुए क्षण मे ओ अपस्यांत होमए लगलाह। घामे थाल-थाल भए गेलाह। स्वास उखड़ए लगलन्हि।

"विश्राम कए लीअ।" ओ रभसल- "मोन हुए तऽ फेर भीड़ब।"

ओ लोरिक कें छोड़ि कए अपना वृषभ कें थप-थपाबए लागल। वृषभ सेहो अपन मुड़ी हिला-हिला अपना पालक पर दुलार छिरिआबए लागल।

अपना संग समाजक आगू अइ पराजय सँ लोरिक कें बड़ अपगरानि भेलन्हि। ओ पुनः ताल ठोकि कए गरजए लगलाह।

फेर भिड़न्त प्रारम्भ भए गेल।

सिलहट आखाड़ा पर अभ्यास कएल एकोटा विश्वविजयी दाव सभ लोरिक कें काज नहि देलकन्हि। अइ बेर ओ से भऽ कए पछारल गेला जे हुनकर प्राण अवग्रह मे पड़ि गेलन्हि।

संग-समाज हाहाकार कए उठल। चित्कार करैत एली चनैन। किन्तु जखन माँजरि एली तऽ ओ भभा कऽ हँसि देलन्हि।

दर्शक मे ठाढ़ छल एकटा तरुण-संन्यासी। भस्म लेपने। माथ पर जटा। गरा मे रुद्राक्ष आ हाथ मे एकटा डमरू।

"हे भृंगी, आँहाँ ता अहीठाम रहब। हम लगले आबि रहल छी।" —माँजरि ओइ संन्यासी कें कहलथिन्ह आ ओ हलसलि-फुलसलि ओहिठाम सँ चलि पड़ली।

संन्यासी मुस्कराइत रहल।

जत्ते लोक ओइ ठाम छल मे माँजरिक अइ बेबहार सँ क्षुब्ध भए उठल।

माँजरि हबर-हबर कऽ स्नान केलन्हि आ पार्थिव महादेवक पूजन केलन्हि। ओ भांग पीसि कऽ गोला बनौलन्हि आ ओ गोला नेने मल्ल-युद्ध स्थल मे एलीह। लोरिकक स्थिति अधलाहे भेल जा रहल छलन्हि।

ओ अपना हाथक भांगक गोला ओइ नट कें देखबैत कहलथिन्ह-"हे महानट, थाकि गेल हैब अम्बिकाक अइ सेवक सँ युद्ध करैत-करैत। कने ई भांग ग्रहण करू।"

नट बक्क दऽ लोरिक कें छाड़ि देलकन्हि आ' स्नेहपूर्ण हाथे हुनक पीठ थपथपा देलकन्हि। लोरिक कें बूझि पड़लन्हि जेना हुनक बल-स्फूर्त्ति घूरि आएल होन्हि।

ओ नट हाथ बढ़ा दऽ माँजरि सँ भांगक गोला मांगि कऽ एक्के बेर मे गीड़ि

गेल । माँजरि ओइ भृंगी संन्यासी सँ ओकर डमरु माँगि कऽ डिमडिमबए लगलीह ।

नट झूमि उठल आ' नाचए लागल । ओ वृषभ सेहो नाङरि उठा कए नाचए लागल । से वातावरण बनि गेलइ जे लोरिक नाचए लगलाह । ओ भृंगी संन्यासी थपरी बजा कऽ ताल दैत रहल ।

थोड़ेकाल में डमरूक डिमिक-डिमिक थम्हलइ तऽ नाचो थम्हि गेलइ । माँजरि आनन्दें विभोर भए रहल छलीह । नटक भय-भैरवक रूप आनन्द-भैरव मे बदलि गेल ।

''आइ हमर आतिथ्य स्वीकार करियौ नट-श्रेष्ठ ।'' लोरिक नट कें विनय पूर्वक कहलथिन्ह ।

नट विहुँसल-''हे मनियार, हम प्रसन्न छी । आइ हम कतहुँ जाइ छी हमर ई वृषभ अहींक आतिथ्य मे रहत । एकर सभ प्रकारें रक्षा करबैक । हम काल्हि भेटब ! श्रद्धामयी माँजरि काल्हि हमरा अइ नदी तट परक बेल-बोन मे ताकि लेती ।

मगन भेल नट उत्तर दिशा मे विदा भए गेल ।

माँजरि ओकरा प्रति करबद्ध भेलि ठाढ़ि रहली । ओ भृंगी संन्यासी सेहो कोम्हरहु चलि गेल । रहि गेल ओ श्वेत वृषभ ।

माँजरि ओइ वृषभक माथ थपथपौलन्हि । सभ ओहिठाम सँ घूरल तऽ ओ वृषभ माँजरिक पाछू-पाछू आवासक द्वारि पर आबि कए ठमकि गेल ।

माँजरि एकटा छिट्टा-खुरपी मँगवा कए ओइ वृषभ लेल घास छीलए चलि पड़ली ।

सभ माँजरिक प्रशंसा केलक किन्तु लोरिकक जी जेना जरि गेलन्हि । तहि आगि मे घी दैत रहलथिन्ह चनैन ।

''मने ओइ नट सँ माँजरि कें कोनो पूर्वपरिचय छन्हि । कोना प्रसन्न दृष्टियें ओ हुनका दिस ताकन्हि । कोना बिहुँसि कऽ हुनका हाथ सँ भाँग माँगि लेलकन्हि । ओकर बड़द कोना हिनका चिन्हइ छन्हि जे हिनका पाछू-पाछू एलन्हि । सभ तऽ सभ, ओइ अकादारुण बेल-बोन मे कोना ओ ओइ महा-सुन्नर नट कें ताकि लेथिन्ह काल्हिखन । कोनो ठमैल स्थल पहिनहि सँ बूझल हेतन्हि ।

आइ राति हुनका पर दृष्टि राखू जे बेल-बोन दिस कतहुँ कोनो अभिसार मे तने जाइ छथि ।'' चनैन लोरिकक कान लग फुसफुसेली ।

आन अवसर रहितइ तऽ लोरिकक चनैनक ई फुसफुसी फूँकि देने रहितन्हि किन्तु तखन ई वचन हुनका नीक लगलन्हि ।

चनैन पुनः महुएल वाण छोड़लन्हि -''आँहाँ जे हमरा संग पड़ेलहुँ तकरे मने प्रतिशोध लेबक लेल तऽने आइ एत्ते दिन पर माँजरि ई खेल-बेल रचौलन्हि अछि ।''

हुनका होन्हि जे सौतिन दिस सँ पतिक मुँह फेरैक एहन स्वर्ण अवसर फेर आबए वा नहि आबए ।

लोरिक चिन्तित स्वर मे कहलथिन्ह—''अहूँ एकटा खुरपी लऽ कऽ जाउ ने अतिथि बड़द लेल घास छीलए आ देखिऔन ज़े माँजरि कोम्हर गेलीह ।''

''भने कहलहुँ ।''......ईर्षा सँ भरलि चनैन बजलीह आ छिट्टा-खुरपी लए विदा भेलीह ।

माँजरि सँ पहिने घास नेने एली चनैन । जुऐल कड़ैत जकाँ ऐंठत-जुठैत आ गर्वे फटैत यद्यपि ओ माँजरिक संगे घास गढ़ैत रहली, हुनका भेटलन्हि लट्टा, रट्टा आ तिरफट्टा घास । ओ घासक ढाकी वृषभक आगू मे उनटा देलथिन्ह आ कहलथिन्ह—''ले रे बड़दा ।''

ओ बड़द घास कें सूँघि कए छोड़ि देलक । माँजरि ताक-ताक गढ़लन्हि-दूभि, ऐआंग आ झीरो । ओ तकरा डेङौलन्हि आ झारलन्हि । तखन ओकरा एकटा दोसर निखनात पथिया मे राखि कऽ अतिथि वृषभ कें आगूमे दैत बजलीह.....''लीअ हे बसहा, जे जुड़ल से यैह अछि ।''

वृषभ प्रेम पूर्वक घास खाय लागल । ओकरा मुँह परक माछी उड़बक लेल आमक पल्लव डोलबए लगलीह । जखन घास सठि गेलइ तऽ रूपाक कठौत मे, सोनाक झारी सँ पानि आनि-आनि ओकरा पियौलथिन्ह ।

साँझ भेलइ, राति भेलइ आ सभ अपना-अपना सेज पर निभेर भेल । अपना बेटा भवाजीत कें करेज सँ जगा कए माँजरि सुखनीन मे सूति रहली । किन्तु लोरिक आ चनैनक आँखि मे शंकाक साँप लोटाइत छलन्हि तैं निन्न कतए पाबी । होन्हि जे ने जानि, माँजरि कखन उठि कऽ बेलबोनी दिस अभिसार लेल चलि पड़ती ।

दुपहरिया राति सहसा जेना भयावह भए उठल ।

"बां बां बां ।" ओ वृषभ आर्त्त स्वर मे डकरलइ ।

"गों ओं ओं !" जेना कोनो बाघ गुम्हड़लइ ।

लोरिक फानि कऽ उठला आ एक दिस राखल अपन खंडा लेमए गेलाह । ई की भेलइ ?

हुनका सँ खंडा खढ़ो भरि टस्स-मस्स नहिं भए सकलइ । ओ हपसए लगलाह । किन्तु खंडा उठौनाइ कें कहए ओ डोलबो ने केलन्हि ।

लोरिक कें एक क्षण लेल ठकमुड़िया लागि गेलन्हि । यैह खंडा छल जकरा ओ जीवन भरि फुलहत्था जकाँ नचबैत रहलाह ।

"बां बां बां ।"...... वृषभक आर्त्तनाद जोरगर भए एलइ । लोरिक खंडा छोड़ि कए बाहर एला तऽ देखइ छथि जे एकटा भयानक बाघ, ओइ अतिथि-वृषभ पर आक्रमणक तैयारी कए रहल अछि ।

ओ बाघ कें ललकारलन्हि । बाघ छूटल । लोरिक बाघ कें अल्लग-बल्लग उठा कए फेक देलन्हि । बाघ सम्हरि-सम्हरि पुनः-पुनः आक्रमण करैत रहल । लोरिक बड़ साहसक संग बेर-बेर ओकरा बिना कोनो अवसर देने फेकैत रहलाह । किन्तु ओ आब दुर्बल पड़ल जा रहल छलाह ।

चनैन निभेर सूतलि माँजरि कें उठौलन्हि - "उठौथु बहिनदाई, एकटा भीषण बाघ ओइ वृषभ पर आक्रमण केलकइ तइ पर हुनका ओइ बाघ सँ युद्ध चलि रहल छन्हि । बाघ पर विजय पावक कोनो आशा नहि । तेहन कराल रूप छइ ओकर ।"

आँखि मिड़ैत माँजरि खंडा दिश इशारा केलथिन्ह -'आहिरे बा, खंडा तऽ अहीठाम छइ, तखन नह-दाँत वला पशु सँ कोना जितता ओ ।"

हुचुकि-हुचुकि कए कानि उठली चनैन—"खंडा के उठौनाइ के कहए, आइ ई हुनकर हथलाल खंडा हुनका बलें एक्को सूत ने टसकि सकलन्हि ।

माँजरि उठि कए, खंडा दिश करबद्ध भए गेलीह आ भगवती कें गोहरौलन्हि— "हे जगन्माता. सुरुज, अगिन आ चानक, सम्मिलित रूप ई खंडा अहींक थिक, वासनाक साकार रूप ई कराल बाघ अहींक वाहन आ अहींक देल अहंकार व्यामोह सँ पीड़ित हमर स्वामी से हो अहींक सेवक । तखन हमरा सोहागक रक्षा अहीं जानी हे माता ।"

बाहर सँ लोरिकक अत्यन्त कातर स्वर सुनाइ देलक—''हा भगवती !''

माँजरि हुँकार केलन्हि आ लीला-कमल जकाँ ओ खंडा उठौने बाहर एलीह । ओइ दपदप इजोरिया मे ओइ खंडा सँ जेना बिजुरी छिटकए लगलैक ।

लोरिक ओइ बाघ के झिटकि तऽ देने छलाह किन्तु अइबेर ओ अपनहुँ धराशायी भए गेल छलाह। ओ निश्चेष्ट जकाँ साँस लैत कहि रहल छलथिन्ह—

''आबह हे बाघ, पहिने हमरा खा लै तखन अइ वृषभ के खइहऽ ।''

माँजरि वेग सँ ओइ बाघ आ अपना स्वामीक बीच मे आबि गेलीह । बाघ जेना स्तम्भित भए कए ठाढ़ भए गेल आ पछिला पैर सँ खुरछाही कटैत धूरा उड़बए लागल ।

विहुँसि उठली माँजरि ।

किछु क्षण एना बीतल । चनैन लोरिक कें जल आनि कऽ पिऔलन्हि । हुनकर जी ठहार भेलन्हि ।

ओम्हर बाघ वेग सँ उछलल आ' यैह ले वैह ले ओइठाम सँ पार ।

* * * * * * * * * *

भोर भेलइ ।

माँजरि स्नान केलन्हि आ नव वस्त्र ओ दिव्य आभरण धारण केलन्हि । कानि-कानि कए भगवतीक पूजा केलन्हि । तखन ओइ वृषभ कें स्नान कराय ओकरा अक्षत आ नवदुर्बा खुऔलन्हि आ एकटा पैघ चँगेड़ा मे, धूप-दीप अक्षत-पुष्प आ बेलपात सुसज्जित केलन्हि ।

''आब कथीक पूजा करथिन्ह ।'' चनैन पुछलथिन्ह ।

''आइ शम्भु-पूजनक बड़ लालसा भए रहल अछि । लग मे कतहु महादेवक थान हेतइ ताहिठाम जाएब ।'' प्रसन्न चित्तें माँजरि बजलीह ।

''हमरा नइ बूझल अछि जे अइ सभ मे कतहु महादेव थान छइ वा नहि ।'' चनैन कुटिल हँसी हँसलीह- 'ओना ई बोनहु मे जकरा तकथिन्ह से भेटि जेतन्हि ।''

लोरिकक संगे दुधार गाएक एकटा हेंज चलन्हि । ओइ मे सँ एकटा कारी

भौर गाय आबि कए माँजरि लग ठाढ़ भए गेलन्हि । माँजरि कें की फुरलन्हि, ओ अपना प्रसन्नताक अतिरेक मे दूभिधान लए ओइ श्यामा-गौ क चुमौन केलन्हि ।

चनैन लोरिक लग आबि कऽ हुनक कान भरलथिन्ह—''भरि राति नँइ जा सकली तऽ आब सोलहो-सिंगार कए महादेव दर्शनक बहाने कतहु जा रहल छथि।''

लोरिकक रतुका पराजयक ग्लानि तामस बनि कए हुनकर ठोर फड़काबए लगलन्हि जे कोना, माँजरिक सोझाँ मे हुनका हीन बनि जाय पड़इ छन्हि । ओ आबि कए देखलन्हि तऽ एक हाथ मे पूजाक चँगेरा आ कांखतर गंगाजलक स्वर्ण-कलशी नेने दीप्तिमान भेलि ओ कतहु जाए लेल प्रस्तुत छलीह । हुनका एक दिस धौलागिरि जकाँ शृंग उठौने ओ श्वेत-वृषभ छल आ दोसर दिस दूध भरल थन नेने ओ कृष्ण गाय सुशोभित भए रहल छल ।

लोरिक कनिये खिसियैल स्वर मे कहलथिन्ह ''अहाँ जा रहलि छी महादेवक पूजा करक लेल । किन्तु कल्हुका सुदर्शन नट कें एखन धरि नहि देखि रहल छियन्हि । हुनका वचनक अनुसार अहीं कें हुनका बेलबोन सँ ताकि कऽ ऊपर करक अछि ।''

माँजरि हँसि उठली -''चलू ने पहिने हुनकहि ताकी । संग समाज कें बजा लीअ ।''

संग-समाज जुटि आएल । आगू-आगू माँजरि । हुनका एक दिस ओ महा वृषभ तऽ दोसर दिस ओ श्याम-सुरभि चलए लागल । तइ पाछू लोरिक आ तकरा पाछू संग-समाज विदा भेल । चनैन अपना सेज पर सँ कुन्हरली —''के जैत छिछिआइ लेल ओइ बेल-बोनही मे ।''

नदी तट पर, बेलबोन मे कतबो दृष्टि खिड़ौला पर ककरो कोनो सन्धान नहिं भेटलन्हि । एतवहि मे ओ श्यामा-गौ हुकरैत एकटा टील्हा पर चढ़ि गेलइ आ ओकरा मथनी पर ठाढ़ि भए गेलइ ।

हे लीअ ।

ओकरा चारू थन सँ दूधक धार गरगर बहए लगलइ । माँजरि ओइठाम एलीह । माटि टारलन्हि तऽ भेटलन्हि एकटा अंकुरित शिवलिंग । कलशीक गंगाजल सँ हुनक अभिशेष कए पूजन केलन्हि भक्ति गद्-गद् नोरक अर्घ दए-दए ।

जै जै कार गुँजित भेल ।

लोरिक शिव पूजन कए माँजरि सँ कहलथिन्ह-''अन्ततः ओ नट नहिए भेटलाह ।''

माँजरि उल्लसित होइत उत्तर देलथिन्ह -''आ ई महानट के छथि जनिक पूजन कैल अछि ।''

लोरिक विस्फारित नयने माँजरि दिश तकलन्हि -''हे देवी, हम मात्र जन्म सँ योद्धा छी । हमरा किछु बुझवा जोकर नहि भए रहल अछि ।''

लोक सभ ओइ वृषभ के तकलक तऽ ओ कतहु ने भेटलइ ।

*   *   *   *   *   *   *   *   *

''रक्त दे ! रक्त दे ।'' -लोरिकक कान मे स्वर गुँजलन्हि । किन्तु आब कियो कतहु एहन नहि रहि गेल छल जे हुनका सँ युद्ध लए सकितै । लोरिक विजयक अहंकार मे आबहु डुबले रहथि । किन्तु हुनका ई की भए गेल छलन्हि जे सभटा दृश्यमान वस्तु खंडेक आकारक देखाइ दन्हि आ हुनका कान मे सतत जेना खंडाक कड़कड़ाति एक्के स्वर झंकृत होति रहन्हि—''रक्त दे । रक्त दे ।''

ओ अत्यन्त खिन्न भए उठलाह । कतोक जोतखी, गुनी आ साधु बजौल गेल एकर निराकरण करल लेल किन्तु कियो एकर निदान नहि कए सकल ।

ओइ दिन महाष्टमो छलैक । लोरिक सपरिवार व्रत केने छलाह । माँजरि खंडा के गंगाजल सँ धो आ धूप, दीप ओ फूल सँ ओकर पूजा कए, बहरैले छलीह कि वैह तेजस्वी तरुण भृङ्गी संन्यासी कोम्हरहुँ सँ जुमि आएल ।

लोरिक हुनक चरण-रज लेलन्हि आ हुनका सँ ओइ नट, वृषभ, व्याघ्र आ' खंडाक समख्या पुछलथिन्ह ।

हँसि देलक ओ लाल वस्त्रधारी साधक । ''आँहाँ अपना दूनू पत्नी कें चिन्हलहुँ ?'' —ओ लोरिक सँ पुछलथिन्ह ।

लोरिक कहलथिन्ह —''पत्नी, पत्नी भेलीह । हुनका चिन्हक प्रश्ने की उठैत अछि । एकटा छथि भक्ति, करुणा आ' श्रद्धाक साकार रूप माँजरि आ' दोसर भेली बुद्धि, वासना आ' मादकताक मूर्तिमान रूप चनैन । हम एतबहि जनइ छी । तखन आँहाँ आब जे कही ।''

''बुद्धि के संग कए आँहाँ लोक-शत्रु सभ पर विजय पौल आ नाना प्रकारक भोगक उपयोग कएल आब श्रद्धाक प्रेरणा सँ शान्ति लाभ करू । अइ सभहिक समख्या सती माँजरि कें छोड़ि आन कियो नहिं कहि सकइ छथि ।''—ओ साधक बाजल ।

लोरिक अकुला कऽ माँजरिक करुणा छल-छल मुँह दिस तकैत बजलाह -''साधक की कहै छथि ।

''जे आज्ञा हे स्वामी ।'' माँजरि हुनका प्रति कऽल जोरि लेलन्हि -''अजुका निशापूजा मे भगवतीक श्रीचरण मे सभकिछु निवेदन करब । हुनका आज्ञा संकेत्त पाबि, काल्हि नवमी के देवहाक पुनीत तट पर हम आँहाँ कें सभटा समख्या कहब । एकटा दिव्य चंडी मंडप बनए आ' ओहि मे धूप, दीप पुष्पमाला, अर्घ आ चानन सँ पूजित आँहाँक विश्वविख्यात खंडा राखल रहए । संग-समाज सेहो उपस्थित रहथि ।''

लोरिक प्रसन्न भए उठलाह ।

नवमीक पुण्य दिवस । देवहाक कात मे, एकरंगा लाल वस्त्रक एकटा दिव्य मंडप निरमाओल गेल । तकरा बीच मे रक्त चाननक चौकी पर राखल गेल लोरिकक सुपूजित खंडा । नीचा मे ओकरा एक दिश बैसला ओ भृङ्गी संन्यासी आ दोसर दिस लोरिक । अधिक संख्या मे संग-समाज सेहो जुमि आएल छल । आ सभ मूर्त्तिवत् बैसल छल ।

भगवतीक पूजा कए, दाड़िम कुसुम रंगक साड़ी पहिरने आ' भरि आँजुर जबा-फूल नेने एली माँजरि । ओ ओइ खंडा कें पुष्पाञ्जलि अर्पित कए एक दिस बैसि गेलीह ।

लोरिक पुछलथिन्ह -''हे माँजरि, आँहाँक 'सत्त' विख्यात अछि । किन्तु ई कहू जे हमरा पराजित करएवाला ओ नट के छलाह जे आँहाँक हाथक भाँग लऽ कए खाऽ लेलन्हि । आँहाँ कें ओइ नट सँ केहन परिचय छल जे आँहाँक द्वारा डमरूक नाद होइते ओ नाचए लगलाह ।''

माँजरि स्मित हासक संग कहलथिन्ह -''ई कथा हम ओइ दिन अंकुरित महादेवक पूजाक क्षण मे इशारा सँ आँहाँ कें बुझा देल । क़िन्तु आँहाँ बेर-बेर सम्मोहित भए जाइ छी, हे हमर प्राणनाथ । ओइ दिनुका ओ नट, नट नहिं छलाह, स्वयं महानट महेश्वर छलाह जे आँहाँक अहंकार के पोछि कए ''वीर'' बनबए आएल छलाह । ओ महावृषभ हुनके बसहा छल ।''

लोरिकक स्वर कांपि उठल -''हे देवी, तखन एतेक युद्ध जितलहुँ पर एखन धरि ''वीर'' नहिं छलहुँ ?''

माँजरि बाजलि -''नरहत्या कए युद्ध जीतनिहार किन्हु ''वीर'' नहि भए सकैत अछि जा धरि ओ अपना अन्तर पर विजय नहि प्राप्त करए, अपना अन्तरक पशुक बलि नहि दिअए आ' अपना पाश के विछिन्न नहि करए ।''

सती माँजरिक जयजयकार भेल ।

लोरिक पुनः प्रश्न केलन्हि -''जों ओ वृषभ नटरूप महेश्वरक बसहा छल तऽ ओइ राति ओ विकराल बाघ कोना कए ओकरा पर आक्रमण करक दुस्साहस केलक ।''

''बसहा भेल ज्ञान आ बाघ भेल वासना । वासना जखन प्रबल भए उठइ छइ तऽ ज्ञान पर आक्रमण करबे करइ छइ । आँहाँ अपना वासना के जतेक प्रबल बनौने जाएब आँहाँक ज्ञान ओतेक क्षुब्ध आ आतंकित भेल जाएत ।''.....माँजरि कहलथिन्ह.........आ ओ वासना आँहाँ के ओहिना तेग सँ पटका दैत विकल करैत रहत ।''

तरुण साधकक मुखमंडल दीप्तिमान होइत गेलन्हि ।

हे महिमामयी, हमर चित्त आँहाँक अमृतवाणी सँ निर्मल भेल जा रहल अछि । किन्तु ई कहू जे जइ खंडा के, हम जीवन भरि फुलहत्था जकां घुमबैत रहलहुँ, से ओहि दिन ओहन क्षण मे, सूइयोक अग्रभाग एतेक अपना स्थान सँ हमरा बुते कियैत ने टसकि सकल । ई ग्लानि हृदय सँ नहि जाइए हे देवि ।'' —लोरिक बजलाह ।

माँजरि गम्भीर भए गेलीह-''आँहाँक अपन वैयक्तिक अहं आँहाँ के दुर्बल बनबैत गेल आ' खंडा के भारी । ई जतेक लीला आँहाँ देखल से आँहाँक अपनहि अन्तरक वाह्य रूप छल । सूर्य, चन्द्र आ' अग्निरूपी खंडा, कामकलाक एकटा सरूप छैक जे अग्नि प्रधान भेला पर संहार करइ छइ । ओइ दिन आँहाँ खंडा के भगवतीक उपादान नइ बूझि, फुलहत्था बुझलिअइ तैं ओ टस सँ मस नँइ भेल ।''

व्याकुल भए गेला लोरिक.......'हे प्राणसंगिनी, खंडाक अइ रक्त दे, रक्त देक चित्कार सँ हमरा कोना मुक्ति भेटत ।

''भेटत ।'' ......माँजरि प्रसन्ना पूर्वक कहलथिन्ह —''विधिवत् पूजाक उपरान्त अइ खंडा के वाह्य रूपे विसर्जिन कए तखन हिनका अपना अन्तर मे

प्रतिष्ठित करू। अन्तरक पशु के, पशुभाव के अइ सँ बलि दिऔक आ अही सँ अपन पाश सभ के धैर्यक संग कटैत चलू। एहन स्थिति मे अन्तर मे प्रतिष्ठित ई सोम-प्रधान भए कए आँहाँ कें शक्ति, सिनेह आ' आलोक दैत रहत।''

क्षण घड़ी मे लोरिक आ' ओइ भृंगी-संन्यासीक आँखि मुना गेलन्हि आ समाधि लागि गेलन्हि।

''हे जगन्माता, आँहाँक ई खंडा देह ब्रह्माण्ड आ महाब्रह्माण्डक कुञ्जिका अछि। हे अभयवरदायिनी, ई खंडा हमरा विश्व-विजयी बनौलक। हे माता, अइ खंडा सँ हम अपना अन्तरक पशु कें बलि दए सकी आ अपन पाश काटि सकी से शक्ति दीअ हे जननी।''

''हे भगवती, हम अपन जय-पराजय, हास-रूदन आ विनय-अहंकार सभटा अहीं के अर्पित करइ छी। रण मे, वन मे, सुख मे ओ दुख मे अइ खंडाक भरोसे हम महायोद्धा बनल रहलहुँ। किन्तु सभटा श्रेय अहींक छल हे जगदम्बा। आब हमरा मे जे क्षुद्र अहं कैंर मइल बइस गेल अछि तकरा स्वच्छ कए दीअ। हम अबोध शिशु छी। हमरा कोरा मे लए कऽ नहा-सोना दीअ हे अम्बा।''

विदा हे खंडा, मिता बंठा, सोनिका, मनिका, उघरा पँवार, गजभीमल, छुवरा पँवार, बरबा, हरबा, मोचनि आ कौल्हमकड़ा सनक दुर्धर्ष योद्धा सभहिक मूड़ी आँहाँक एकहक्के आघात मे बेल जकाँ ओंघड़ा गेलइ। से हे ज्योति-स्वरूप हम आँहाँ कें विसर्जित करैत प्रार्थना करैत छी जे आब आँहाँ हमरा अन्तर मे निवास करी।''

प्रार्थना कए लोरिक ओइ खंडा कें अपना ललाट सँ स्पर्श करौलन्हि। खंडा द्युतिमान भए उठलइ आ' लगलइ जेना ओ ज्योति लोरिक मे समा गेलैक। लोरिक ओइ खंडा कें भगवतीक निर्माल्य बूझि देवहाक तरंगित धारा मे विसर्जित कए देलन्हि।

ओ घूरि एला तऽ माँजरि सँ कहलथिन्ह —''हे देवि हमर चित्त निर्मल भए गेल। रक्त दे, रक्त देक स्वर नहि सुनइ छीयैक आ' ने आँखिक सोझां मे ओ खंडे नचैत अछि।''

माँजरि बाजलि -''जय भगवती।''

* * * * * * * * * * * * * * *

ओइ दिन अकाश निर्मल छलइ आ' दिशा निर्वात छलइ । लोरिकें माँजरिक प्रशान्त मुखमंडल दिस ताकि कए कहलथिन्ह —''हे देवि आँहाँक मुँह दिन-दिन सुशान्त भेल जाइत अछि । कतहुँ कोनो उद्धिग्नता नहि । लगइए आँहाँ जेना कोनो महासुख मे डूबल रहैत होइ ।''

''हमर सभटा सुख अहीं छी स्वामी ।''.......माँजरि उत्तर देलथिन्ह ।

''किन्तु हमरा सुखी होमए मे विलम्ब अछि ।''.........लोरिक खिन्न भए उठलाह—''नरहत्या आ रक्तपातक ग्लानि करेज पर सँ नहि जाइए ।''

''ओ बिना शिव आराधनाक नहि टरत । हम सभ काशी विश्वनाथक शरण मे रहि हुनक आराधना करी आ जगन्माताक सेवा मे जनम सुफल करी ।'' माँजरि सकरुण भए एलीह ।

लोरिक काशी-यात्रा लेल सभ किछु तूल करए लगलाह । अपना राज के दू भाग भे बटलन्हि । इन्द्राजीतक राजभार लेलथिन्ह हुनक माय चनैन, आ' भवाजीतक राजभार लेलथिन्ह हुनक धर्म मौसी लुरकी ।

''हमर मोन जे बाजिल-कौआ आ' कटरा घोड़ा के आब स्वच्छन्द छोड़ि दियैक ।'' माँजरि इच्छा प्रगट केलन्हि ।

'बाजिल'क सोनाक सिक्कड़ि काटि देल गेलइ, आ' अगुआ पछुआ रेशमी डोरी काटि देल गेलइ कटरा के ।

लोरिक हाथी अथवा घोड़ा पर यात्रा करए सँ अस्वीकार कए देलन्हि ।

निश्चित दिन आबि गेल । लोरिक आ' माँजरि इन्द्राजीत आ' भवाजीत कें बजा हुनका लोकनिक माथ पर सिन्दूर मंडित बेलपात राखि-राखि दुलार कएलन्हि आ' परिजन आ' आगन्तुक जन-जन सँ विदा लेलन्हि । हुनका लोकनि कें बिदा देबक लेल गाम-गाम सँ लोक उमड़ि पड़ल ।

लोरिक आ' माँजरि अन्न, वस्त्र ओ गायक दान केलन्हि आ तुलादान कए चलि पड़लीह । नोर भीजल समदाउनिक स्वर उठए लागल ।

सहसा वैह श्वेत वृषभ कोम्हरहुँ सँ आएल आ' हिनका दूनूक बाट छेकि लेलक । ओकरा पीठ पर दिव्य आसन कसल छलइ । मुँह पर मोती गांथल मुखाड़ी शोभा दए रहल छलइ ।

ककरो कोनो अर्थे ने लगइ एना बाट छेकल जाइक । ता कि एक हाथ मे सिगा आ दोसर मे डमरू नेने विहुँसैत आबि गेला ओ तेजस्वी भृंगी-संन्यासी ।

हुनका इशारा सँ बसहा बैलि गेल । ओ लोरिक आ माँजरि कें ओहि पर बैसक अनुरोध केलथिन्ह—"हे भैरव आ भैरवी, अहीं दूनू कें लेबाक हेतु ई बसहा आयल अछि ।"

लोरिक ओइ बसहा पर बैसि गेलाह आ माँजरि ओकर मुखाड़ी रास धएलन्हि । आगू चलला ओ तरुण भृंगी, डमरू डिम डिमबैत, रहि-रहि कऽ शृँगी नाद करैत आ नचैत । हर-हर बम-बम के महोच्चार सँ दिग्-दिगन्त कम्पायमान होमए लागल ।

बसहाक रास धेने चलैत माँजरिक आभूषण रुनझुन बाजन्हि ।

'झम्मर-झम्मर चलइ धनी उगला सुरुज मलान ।'

—o—